E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -11 अंक -162 | प्रयागराज, शनिवार 13 सितम्बर, 2025 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

नेपाल में सुशीला कार्की का पीएम बनना लगभग तय,दावा- राष्ट्रपति संसद भंग करने को तैयार नहीं

काठमांडू। नेपाल में केपी शर्मा ओली के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफे को 48 घंटे हो गए हैं, लेकिन अभी

तक अंतरिम प्रधानमंत्री तय नहीं हो सका है। इसपर बातचीत आज सुबह 9 बजे फिर से शुरू हो गई है। कल दिनभर चली चर्चा किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सुशीला कार्की को अंतरिम पीएम बनाने पर लगभग सहमति बन गई है, लेकिन मौजूदा संसद को भंग करने या न करने पर चर्चा रुकी हुई है। बातचीत में भाग लेने वाले एक अधिकारी के मुताबिक, राष्ट्रपति पौडेल संसद भंग करने को तैयार नहीं। हालांकि, कार्की ने तर्क दिया है कि पहले संसद को भंग किया जाना चाहिए। क्योंकि संविधान के अनुसार संसद कायम रहते हुए किसी गैर-सांसद (जो संसद का सदस्य न हो) को प्रधानमंत्री नहीं बनाया जा सकता। सुशीला कार्की के नाम पर आंदोलनकारी जेन-ज़ी युवा कल आपस में ही भिड़ गए और मारपीट करने लगे। एक गुट का आरोप है कि सुशीला कार्की भारत समर्थक हैं और उन्हें यह स्वीकार नहीं हैं। दूसरी तरफ, आर्मी ने एहतियातन राजधानी और उससे सटे इलाकों में चौथे दिन भी कर्फ्यू जारी रखा है। नेपाल हिंसा में अब तक 34 मौतें हुई है, जबकि 1500 से ज्यादा लोग घायल हैं। अंतरिम पीएम के लिए सुशीला कार्की, बालेन शाह, कुलमान घीसिंग और हरका सम्पांग के नाम आगे हैं। सेना ने कहा है कि इस राजनीतिक संकट का समाधान और कानून-व्यवस्था बनाए रखना उनकी प्राथमिकता है। नई कार्यकारी सरकार के पास तय समय में चुनाव कराने की जिम्मेदारी होगी।

'राहुल गांधी को अपनी मां की इज्जत का ख्याल नहीं',दूसरे की मां को कहां से सम्मान देंगे, केस दर्ज होना चाहिए-,गिरिराज सिंह

बेगूसराय। बेगूसराय में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने राहुल गांधी

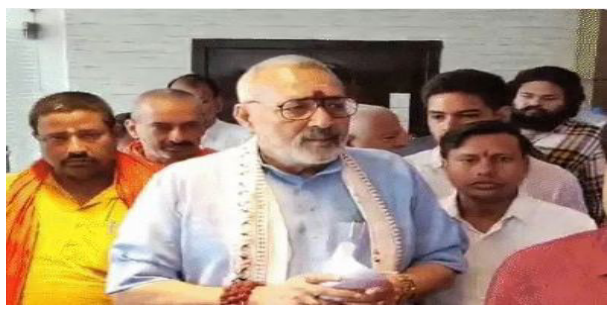

पर निशाना साधा है। कांग्रेस के एआई वीडियो पोस्ट पर उन्होंने कहा कि इसके लिए सामाजिक और कानूनी रूप से सजा मिलनी चाहिए। राहुल गांधी अब इतना नीचे गिर गए हैं, जैसे उनकी नकली मां है। अपनी मां की इज्जत का ख्याल नहीं है। वह दूसरे की मां को कहां से सम्मान देंगे। मोदी जी के मां का एआई वीडियो बनाना बहुत गलत है। इन पर फ्रॉडिज्म का केस होना चाहिए, जांच होनी चाहिए। ऐसे लोगों को सामाजिक रूप से ही नहीं, कानूनी रूप से सजा मिलना चाहिए। उन्हें डूब कर मर जाना चाहिए। मोदी जी को मां-बहन लगाकर गाली दिया। अब मां का एआई वीडियो बनाकर क्या साबित करना चाहते हैं। राहुल गांधी अब यह साबित करना चाहते हैं कि हम फ्रॉड हैं, हम दुराचारी हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण रवैया है। आने वाले दिनों में इसका परिणाम भुगतना होगा। एआई वीडियो बनाकर बहुत गलत किया गया है। दरअसल, बिहार कांग्रेस ने अपने एक्स हैंडल पर एक एआई जनरेटेड वीडियो पोस्ट किया है। 36 सेकेंड के एआई जेनरेटेड वीडियो में पीएम मोदी से मिलते शख्स और उनकी दिवंगत मां हीराबेन से मिलती जुलती महिला को दिखाया गया है। वीडियो के कैप्शन में लिखा है- साहब के सपनों में आईं मां। देखिए रोचक संवाद। गुरुवार रात शेयर हुए इस वीडियो में दिखाया गया है, प्रधानमंत्री के सपने में उनकी मां आकर कह रही है कि राजनीति के लिए कितना गिरोगे? आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव का बयान पीएम मोदी जुमले की बारिश करने कब बिहार आ रहे हैं। इस पर गिरिराज सिंह ने कहा कि मन की मुराद पूरा नहीं होने वाला है। जैसे धृतराष्ट्र के मन का मुराद कुरुक्षेत्र के मैदान में पूरा नहीं हुआ था। इस धर्म क्षेत्र की लड़ाई में दिल के अरमां आंसुओं में बह जाएंगे। 'अगर पीएम नरेंद्र मोदी नहीं होते तो आपके बेटे और राहुल गांधी मोटरसाइकिल पर यहां नहीं उड़ते। आपने तो बिहार को गड्ढा में डाल दिया था, आप क्या बोलेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार को सजाया है।'

सीपी राधाकृष्णन ने 15वें उपराष्ट्रपति पद की शपथ ली,राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शपथ दिलाई,दिखे जगदीप धनखड़

नयी दिल्ली। नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति चंद्रपुरम पोन्नुसामी राधाकृष्णन ने 15वें उपराष्ट्रपति पद

की शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राधाकृष्णन को शपथ दिलाई। इस दौरान पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह समेत कई राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल हुए। पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी और वेंकैया नायडू भी समारोह में पहुंचे। इस्तीफा देने के 53 दिन बाद पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ भी किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में नजर आए। धनखड़ ने 21 जुलाई को हेल्थ इश्यू के कारण इस्तीफा दिया था। सूत्रों के अनुसार, शपथ ग्रहण के तुरंत बाद उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन राज्यसभा के सभी नेताओं के साथ दोपहर 12:30 बजे बैठक करेंगे। इसकी घोषणा गुरुवार देर शाम की गई थी। एनडीए उम्मीदवार राधाकृष्णन को 9 सितंबर को भारत का 15वां उपराष्ट्रपति चुना गया। उन्हें विपक्षी उम्मीदवार बी सुदर्शन रेड्डी के मुकाबले 452 वोट मिले। राधाकृष्णन ने रेड्डी को 152 वोटों के अंतर से हराया है। अपनी नई जिम्मेदारी की तैयारी में राधाकृष्णन ने गुरुवार को महाराष्ट्र के राज्यपाल पद से औपचारिक रूप से इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी आधिकारिक बयान में इसकी पुष्टि की गई है। उनके इस्तीफे के बाद राष्ट्रपति मुर्मू ने गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत को महाराष्ट्र के राज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। राज्यसभा के महासचिव और निर्वाचन अधिकारी पीसी मोदी के मुताबिक 781 में से 767 सांसदों ने वोट डाले, वोटिंग 98.2फीसदी हुई। इनमें से 752 मत वैलिड और 15 इनवैलिड थे। एनडीए को 427 सांसदों का समर्थन प्राप्त था, लेकिन वाईएसआरसीपी के 11 सांसदों ने भी राधाकृष्णन का समर्थन किया। 13 सांसदों ने चुनाव में मतदान से परहेज किया। इनमें बीजू जनता दल (बीजेडी) के सात सांसद, भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के चार, शिरोमणि अकाली दल का एक सांसद और एक निर्दलीय सांसद शामिल हैं। दिलचस्प बात यह है कि एनडीए उम्मीदवार को उम्मीद से 14 वोट ज्यादा मिले, जिससे विपक्षी खेमे में क्रॉस-वोटिंग की अटकलें हैं।

केंद्र सरकार कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए बड़ी खुशखबरी, डीए-डीआर 3फीसदी बढ़ोतरी

नयी दिल्ली। त्योहारी सीजन

से पहले केंद्र सरकार ने केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को बड़ी राहत देने का फैसला किया है। सूत्रों के मुताबिक, महंगाई भत्ता (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) में 3फीसदी की बढ़ोतरी होने जा रही है।इससे देशभर में 1.2 करोड़ से अधिक कर्मचारी और पेंशनभोगी लाभान्वित होंगे। औपचारिक घोषणा अक्टूबर के पहले हफ्ते में की जा सकती है।

'पीएम के सपने में आईं मां,बोलीं-राजनीति के लिए कितना गिरोगे',बिहार कांग्रेस का एआई वीडियो पोस्ट

पटना। बिहार में वोट अधिकार यात्रा के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी को मां की गाली देने पर मचे बवाल के बाद बिहार कांग्रेस ने अपने एक्स हैंडल पर

एक एआई जनरेटेड वीडियो पोस्ट किया है। इस वीडियो के बाद बिहार में सियासी पारा चढ़ गया है। 36 सेकेंड के एआई जेनेरेटेड वीडियो में पीएम मोदी से मिलते शख्स और उनकी दिवंगत मां हीराबेन से मिलती जुलती महिला को दिखाया गया है। वीडियो के कैप्शन में लिखा है- साहब के सपनों में आईं मां। देखिए रोचक संवाद। गुरुवार रात शेयर हुए इस वीडियो में दिखाया गया है, प्रधानमंत्री के सपने में उनकी मां आकर कह रही है कि राजनीति के लिए कितना गिरोगे? भाजपा ने इस वीडियो को प्रधानमंत्री और उनकी मां के खिलाफ आपत्तिजनक बताते हुए कांग्रेस पर हमला किया है। बीजेपी का आरोप है कि कांग्रेस ने राजनीतिक बहस का स्तर गिरा कर सारी हदें पार कर दी हैं। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा, 'राहुल गांधी अब इतना नीचे गिर गए हैं। जैसे उनकी नकली मां है, अपनी मां की इज्जत का ख्याल नहीं है। वह दूसरे की मां को कहां से सम्मान देंगे।' पहले बीजेपी ने राहुल-तेजस्वी का वीडियो जारी किया-इससे 12 घंटे पहले बिहार बीजेपी के एक्स हैंडल से एक एआई जनरेटेड वीडियो शेयर किया गया था। जिसमें राहुल गांधी और तेजस्वी यादव को मीडिया से बात करते हुए दिखाया गया। वीडियो में सीएम फेस को लेकर सवाल हो रहा है। जिसके बाद राहुल के पीएम बनने और तेजस्वी के सीएम बनने पर दोनों बहस करते दिखाई दे रहे हैं।अब जानिए कांग्रेस की ओर से जारी एआई वीडियो में है क्या- बिहार कांग्रेस के एक्स हैंडल पर जो एएआई जनरेटेड वीडियो जारी किया गया है। उसके कैप्शन में लिखा है, साहब के सपनों में आईं मां। इसके बाद दो किरदार दिखाए गए हैं। जिसमें एक बुजुर्ग महिला (पीएम की मां से मिलती-जुलती) एक शख्स (पीएम से मिलते-जुलते) के सपनों में आती हैं। कहती हैं 'अरे बेटा पहले तो तुमने मुझे नोटबंदी की लाइनों में खड़ा किया। मेरे पैर धोने की रील्स बनवाई और अब बिहार में मेरे नाम पर राजनीति कर रहे हो।' 'तुम मेरे अपमान के बैनर-पोस्टर छपवा रहे हो। तुम फिर बिहार में नौटंकी कर रहे हो। राजनीति के नाम पर कितना गिरोगे। 'बेगूसराय में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कांग्रेस के एआई वीडियो पोस्ट पर कहा, 'इसके लिए सामाजिक और कानूनी रूप से सजा मिलनी चाहिए। मोदी जी के मां का एआई वीडियो बनाना बहुत गलत है। इन पर फ्रॉड का केस होना चाहिए, जांच होनी चाहिए।' 'राहुल गांधी अब यह साबित करना चाहते हैं कि हम फ्रॉड हैं, हम दुराचारी हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण रवैया है, और आने वाले दिनों में खुद इसका परिणाम भुगतना होगा। एआई वीडियो बनाकर बहुत गलत किया गया है।' आरजेडी बोली- इमोशनल कार्ड खेल रही बीजेपी- राजद प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा, 'बिहार में जिस तरह से अत्याचार की घटना हो रही हैं, हत्याओं का दौर जारी है, माताओं की आंखों में आंसू है। उन आंसुओं को भी भारतीय जनता पार्टी के नेता महसूस करें। उन माताओं के प्रति भी भारतीय जनता पार्टी के नेता विचार व्यक्त करें, जिनके बच्चे बेरोजगारी के कारण दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनको लोकतंत्र में लाठी तंत्र के सहारे कहीं ना कहीं हांकने का प्रयास किया जा रहा है।' 'बिहार में ऐसा लगता है कि सरकार नाम की चीज ही नहीं है। सरकार और सरकार की स्थिति दयनीय हो गई है। उससे ध्यान भटकाने के लिए भारतीय जनता पार्टी इमोशनल कार्ड खेलना चाहती है।'

कोई अधिकारी तो कोई करोड़पति-फिर भी बन गए राशन कार्ड,25000 पर गिरेगी गाज

बागपत। शासन स्तर से यूपी के बागपत जिले के 25 हजार राशन कार्ड निरस्त करने की सूची भेजी गई है। इसमें ऐसे लोग शामिल हैं जो राशनकार्ड की गाइडलाइन पूरा नही करते और गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रहे है। अपात्र कार्ड धारकों में कोई इंजीनियर है तो कोई करोड़पति है तो कोई पांच हेक्टेयर जमीन का मालिक है। ई केवाईसी के बाद इसे लोगों का पता चला है जिनके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है।आधार कार्ड से लिंक होने के बाद लोगों की जमीन, बैंक खाते, व्यापार, वाहन पेन नम्बर शासन के पास पहुंच गया है।

ईकेवाईसी के बाद शासन स्तर पर जब इस डेटा का राशनकार्ड से मिलान किया गया तो सूची में बागपत के करीब 25 हजार राशन कार्ड ऐसे मिले है जो अपात्र हैं। ये वे लोग हैं जो रसूखदार हैं और गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रहे हैं। दो लाख राशन कार्डों की अब जिला स्तर पर पहचान कराई जा रही है। शासन से भेजी गई कई पन्नो की लिस्ट से भी मिलान किया जा रहा है। एआरओ जोगेंद्र सिंह का कहना है कि जल्द ही सभी अपात्र कार्ड धारकों के कार्ड निरस्त किये जायेंगे। बागपत जिले में अपात्र लोगों के राशन कार्ड बनाने का खेल राशन डीलर और विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत से खेला गया था। पहले ऐसे लोगों को चिन्हित किया गया जो राशन लेने नही जाते। फिर किसी बहाने से उनके राशन कार्ड बनाये गए और उनके नाम पर राशन की लूट मचाई गयी। डीलरों से लेकर विभागीय अधिकारियों को हर महीने लाखों का फायदा इन अपात्र राशन कार्ड से होता रहा। लेकिन अब शासन स्तर पर यह चोरी पकड़ी गई है। बागपत जिले में राशन हड़पने का खेल अमीरों के नाम पर चल रहा था। 15 हजार राशन कार्ड ऐसे मिले हैं, जिनकी आय ग्रामीण क्षेत्र में दो लाख और शहरी क्षेत्र में तीन लाख से ऊपर है। 70 ऐसे कारोबारी हैं जो 25 लाख से अधिक की सालाना जीएसटी भरते हैं। 1250 ऐसे किसान हैं जिनके पास पांच हेक्टेयर से ज्यादा जमीन है। इसके अलावा और भी हजारों अपात्र लोग मिले हैं जो राशनकार्ड के लिए अपात्र हैं। बागपत में डुप्लीकेट आधार कार्ड का इस्तेमाल कर दूसरे राज्यों में राशन लेने वाले 800 लोगों के कार्ड जून 2025 में भी रद्द किये गए थे। ई-केवाईसी से इस घोटाले का पता चला था जिसमे जिला पूर्ति विभाग ने कार्रवाई करते हुए इन कार्डों को निरस्त किया था। पहले भी मृतकों और आयकरदाताओं के नाम पर राशन लेने वालों के खिलाफ कार्रवाई हुई थी। बागपत जिले में राशन कार्ड धारकों की संख्या दो लाख चार हजार से अधिक है। जिनसे हर माह राशन पाने वाले कार्ड धारकों की संख्या 9 लाख 17 हजार 362 है। कार्ड धारकों की शिकायत रहती है कि राहत डीलर उनको पूरा राशन नही देते एक यूनिट काट ली जाती है। बागपत जिले के राशन कार्ड धारकों की सेंकडो शिकायते विभाग में धूल फांक रही हैं। शिकायत है कि डीलर 15 दिन पहले अंगूठे लगवा लेता है और फिर अपनी मर्जी से केवल दो दिन राशन बंटता है। ऐसी शिकायते खेकड़ा, पिलाना, बड़ौत छपरौली सहित जनपद के सभी ब्लॉक से मिली है। लेकिन कोई कार्रवाई नही होती है। करोड़ो का कलेक्शन-राशन की दुकान छोड़ चुके शर्मा जी की मानें तो जिले में सभी राशन डीलरों से विभागीय अधिकारियों को हर माह 5 हजार रुपये इसलिये जाते हैं कि राशन डीलर की जांच न हो। जिले में राशन डीलरों की संख्या 376 है। ऐसे में सालाना देखे तो महीने के 18 लाख और सालाना दो करोड़ 25 लाख रुपये विभागीय अधिकारी गरीबों के लिए मिलने वाले राशन से कमा रहे हैं।बागपत एआरओ पूर्ति विभाग जोगेंद्र सिंह का कहना है जो अपात्र लोगो की लिस्ट शासन से भेजी गई है उस पर काम जारी है ऐसे सभी अपात्र लोगों के राशन कार्ड निरस्त किए जायेंगे। जो भी शिकायतें है उनको गंभीरता के साथ लिया जाता है। अगर कोई राशन डीलर राशन की चोरी करता है तो उसके खिलाफ कड़ी कारवाई होगी। दुकान भी निरस्त कर दी जाएगी।

लखनऊ में दिनदहाड़े दो बच्चों का अपहरण,फिरौती मांगी 10 लाख,अखिलेश यादव ने सरकार को घेरा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बेहद खौफनाक घटना को अंजाम दिया गया है। यहां के आलमबाग क्षेत्र में दो बच्चों का दिनदहाड़े अपहरण कर लिया गया है। अपहरणकर्ता ने पीड़ित परिजन से 10 लाख रुपये की फिरौती मांगी है। गुरुवार दोपहर की इस घटना से इलाके में हड़कंप मच गया है। परिजनों का बुरा हाल है। पुलिस सीसीटीवी और अन्य माध्यमों के जरिए जांच में जुटी हुई है। बच्चों की सकुशल बरामदगी के लिए पुलिस की कुल 5 टीमें लगी हुई हैं। वहीं, इस घटना पर सपा मुखिया अखिलेश यादव ने हमला बोल दिया है। अखिलेश यादव ने कहा कि अपहरण के साथ ही डिजिटल अरेस्ट के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। जानकारी के

मुताबिक, आलमबाग क्षेत्र के बीजी कालोनी निवासी संजय सिंह का 12 वर्षीय बेटा गुरुवार को करीब ढाई बजे बाहर साइकिल चलाने के लिए पड़ोसी के लड़के के साथ खेलने गया था, लेकिन जब काफी देर तक दोनों बच्चे घर वापस नहीं लौटे तो परिजनों ने ढूंढ़ना शुरू किया। आसपास में पूछताछ करने के बाद भी बच्चों की कोई जानकारी नहीं मिली। आलमबाग एसएचओ ने बताया कि बच्चे साइकिल चला रहे थे, तभी एक आदमी आया और उन्हें बहला-फुसलाकर अपने साथ लेकर चला गया। पुलिस के मुताबिक, आरोपी बच्चों को उन्हीं की साइकिल से लेकर गया है। रात करीब 10 बजे परिजनों ने थाने पर शिकायत की थी। जिस पर मुकदमा दर्ज कर तुरंत जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस ने जगह-जगह पर लगे सीसीटीवी की मदद ली है। फुटेज में देखा गया है कि आरोपी बच्चों को साइकिल से ही आलमबाग से सीधे चारबाग लेकर गया है। पुलिस को चारबाग से बच्चों की साइकिल बरामद हो गई है। उधर, सुबह के समय पीड़ित परिजन के मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात नंबर से कॉल आया था। कॉलर ने 10 लाख रुपये की फिरौती मांगी है। फिरौती मांगने वाले ने एक परिजन के पास फोन करके कहा कि 10 लाख रुपये दीजिए। दोनों बच्चे हमारे कब्जे में हैं।उधर, बच्चों की सकुशल बरामदगी के लिए पुलिस की 5 टीमें लगी हुई हैं। पुलिस का कहना है कि आरोपी की पहचान नहीं हो पाई है, लेकिन सीसीटीवी की मदद से हुलिया क्लियर हो रहा है। आलमबाग एसएचओ ने कहा कि हमारी टीम लगी हुई है। जल्द ही बच्चों को बरामद किया जाएगा।

दोस्त के अफेयर में साथ देने पर हत्या,12वीं के स्टूडेंट की बॉडी पर 7 घाव मिले, पुलिस कस्टडी में खोला राज

प्रयागराज। कॉलेज कैंपस में 12वीं के स्टूडेंट अवनीश पांडेय के मर्डर के पीछे उसके दोस्त का लव अफेयर सामने आया है। 10 सितंबर को अवनीश का दोस्त ऋषभ अपने क्लासमेट अभिषेक सोनी और अभय पाठक से कॉलेज की छत पर झगड़ा कर रहा था। उनकी आवाज सुनकर अवनीश, ऋषभ को सपोर्ट करने कॉलेज की छत पर गया और बीच-बचाव करने लगा। गुस्से में अभिषेक और अभय ने उसे मार डाला।पोस्टमॉर्टम करने वाले डॉक्टर के मुताबिक, अवनीश की बॉडी पर 7 घाव मिले हैं। परिवार ने गुरुवार को अवनीश का अंतिम संस्कार कर दिया। प्रयागराज पुलिस ने अभय और अभिषेक को अरेस्ट कर लिया है। आरोपियों ने कहा- हम उसको मारना नहीं चाहते थे, वो हमारी लड़ाई में आ गया, क्या करते। पुलिस के मुताबिक, 12वीं के स्टूडेंट अवनीश मर्डर केस में करछना के माही इलाके का रहने वाला अभय पाठक

मुख्य आरोपी है। उसकी बड़ी बहन पूजा (बदला हुआ नाम) भी इसी कॉलेज से पढ़ी हुई है। एक साल पहले उसने 12वीं करने के बाद कॉलेज छोड़ दिया।4 महीने पहले ही परिवार ने पूजा की शादी प्रयागराज के कोरांव इलाके में कर दी। कॉलेज में 11वीं क्लास में पढ़ने के दौरान पूजा के पीछे ऋषभ शर्मा बैठता था। दोनों की दोस्ती हो गई। फिर मोबाइल पर चैट करने लगे। पूजा जब शादी के बाद ससुराल पहुंची, तब भी उसकी ऋषभ से बातचीत होती थी। एक दिन यह बात पूजा के पति को पता चल गई। उसने पूजा के भाई अभय को फोन करके कहा कि तुम्हारा क्लासमेट मेरी वाइफ को मैसेज करता है। ये आगे से नहीं होना चाहिए। तुम्हारे कॉलेज का मामला है, तुम ही समझ लो। इसके बाद अभय और ऋषभ के बीच लड़ाई शुरू हुई। इस मामले में पुलिस ने 3 अरेस्टिंग की हैं- 1. अभय पाठक निवासी माही कौंधियारा,2. आशुतोष सोनी निवासी माही कौंधियारा, 3. विजय कुमार पांडेय निवासी गढ़वा कला कौंधियारा।

इस बार 10 दिनों की होगी नवरात्रि,हाथी पर मां दुर्गा का आगमन सुख-समृद्धि

प्रयागराज। इस बार शारदीय नवरात्रि की शुरुआत 22 सितंबर की रात 1.23 बजे पर हो रही है। इसलिए 22 सितंबर से शारदीय नवरात्र शुरू की शुरूआत होगी। इसी दिन कलश स्थापना की जाएगी। वेदाचार्य ब्रजमोहन पांडेय ने कहा कि इस बार नवरात्र तिथि में चतुर्थी तिथि बढ़ रही है। इस साल श्राद्ध पक्ष में एक तिथि का क्षय और नवरात्र में एक तिथि में वृद्धि हो रही है, इसलिए इस साल 9 दिन नहीं 10 दिन के नवरात्र होंगे।नवरात्रि का आरंभ कलश स्थापना के साथ होता है, जिसे बेहद शुभ माना जाता है। आचार्य ब्रजमोहन पांडेय ने बताया कि कलश स्थापना 22 सितंबर दिन सोमवार को सुबह 06:09 बजे से 08:06 बजे तक की जा सकती है। इसके अलावा अगर दोपहर में घटस्थापना कर रहे हैं, तो अभिजित मुहूर्त 11:49 बजे से 12:38 बजे तक रहेगा। यह समय उपयुक्त माना गया है और इस समय कलश स्थापन किया जा सकता है।मां दुर्गा का आगमन और प्रस्थान किस वाहन के साथ करेंगी, इसका निर्धारण सप्ताह के दिन के हिसाब से होता है। इस बार नवरात्रि का आरंभ 22 सितंबर सोमवार से हो रहा है। अतः यदि नवरात्रि की प्रतिपदा सोमवार या रविवार को हो तो मां दुर्गा गज (हाथी) पर आरूढ़ होती हैं। अगर नवरात्रि शनिवार या मंगलवार को पड़े, तो माता घोड़े पर सवार मानी जाती हैं। यदि प्रतिपदा गुरुवार या शुक्रवार को हो, तो माता डोली (पालकी) पर आती हैं और यदि यह दिन बुधवार को हो, तो माता दुर्गा नौका (कश्ती) पर आरूढ़ होती हैं। हाथी की सवारी को अत्यंत शुभ और मंगलकारी मानी जाती है। इसे समृद्धि, उन्नति और शांति का प्रतीक माना गया है।

60 साल की अटूट दोस्ती साथ जिए और साथ ही... रिश्ते ने आखिरी सफर में भी नहीं छोड़ा साथ

प्रयागराज। 'उमाकांत और अमर सिंह दो जिस्म मे एक जान थे। उनकी दोस्ती 6 साल की उम्र से शुरू हुई जिसे मौत भी जुदा नहीं कर सकी। घर से निकलने के बाद वो हमेशा साथ रहते। घूमना फिरना हो या फिर काम साथ मे ही करते थे। गांव के लोग उनकी मिसाल दिया करते' यह कहना है उमा कान्त के भतीजे अंकित का। वह अपने चाचा उमाकांत और उनके दोस्त अमर सिंह की मौत के बाद पोस्ट-मार्टम हाउस आया था। उसके साथ परिवार के अन्य लोग भी थे। जिनकी जुबान पर सिर्फ उमाकांत और अमर सिंह की एक साथ जेवण जीने और मरने की चर्चा ही जुबान पर थी।दोनों के शव का ब्रहस्पतिवार अंतिम संस्कार एक साथ दो अलग अलग चिताओ पर परिवार वालो ने हिन्दू रीति रिवाज से किया। उमाकांत अपने पीछे पत्नी मनीता देवी व 3 बच्चो को छोड़ गए, जबकि अमर सिंह की मौत के बाद उसकी पत्नी कुमकुम देवी व 4 बच्चो के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। दोनों मृतक युवक खेती किसानी कर अपना और अपने परिवार की आर्थिक जरूरत को पूरा किया करते थे। थाना पुलिस ने टूरिस्ट बस को कब्जे मे लेकर लापरवाह ड्राइवर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्यवाही शुरू की है। टूरिस्ट बस के सवार 47 यात्रियो को दूसरी बस से रीवा के लिए रवाना किया जा चुका है। पुलिस कर्मी आरोपी ड्राइवर की तलाश मे छापेमारी कर रहे है।समय करीब 8 बजे स्थान प्रयागराज-मिर्जापुर हाइवे पर ऊंचडीह बस स्टैंड के करीब प्रयागराज यमुना नगर मांडा थाना क्षेत्र के बरहाकला गाव के 33 वर्षीय उमाकांत व उसका दोस्त अमर सिंह बाइक से ऊंचडीह बस स्टैंड के करीब पहुचे। इसी बीच अमर सिंह के मोबाइल पर किसी ने फोन किया और वह बाइक सड़क किनारे खड़ी कर बात करने लगा। उमाकांत उसी के साथ खड़े थे। अचानक बिहार गया से टूरिस्ट यात्रियो को लेकर चल रही बस मिर्ज़ापुर की तरफ से तेज रफ्तार से आई, बस ने सड़क किनारे खड़े अमर सिंह, उमाकांत व उनकी बाइक को अपनी चपेट में ले लिया।

सही काउंसलिंग तक नहीं पहुंच पाने के चलते लड़की बनने के लिए यूपीएससी स्टूडेंट ने काट डाला अपना प्राइवेट पार्ट,मां बोलीं- सोचा था आईएएस बनेगा, जिंदगी बर्बाद कर ली

प्रयागराज। सही काउंसलिंग तक नहीं पहुंच पाने के चलते यूपीएससी स्टूडेंट ने गलत तरीका अपना लिया वो बतातें हैं की 'होश संभालने के बाद से ही मुझे एहसास होने लगा कि मैं लड़का नहीं हूं। मेरा मन एक लड़की का है। सिर्फ शरीर एक लड़के का, इसलिए मैंने अपना प्राइवेट पार्ट काट दिया।' ये जज्बात प्रयागराज में रहने वाले यूपीएससी स्टूडेंट के हैं। वह पहले एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती हुआ, लेकिन वहां से उसे स्वरूप रानी नेहरू हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया। परिवार में पिता किसान और मां हाउस वाइफ हैं। स्टूडेंट परिवार का इकलौता बेटा है।मां कहती हैं- मेरे बेटे को किसी ने बरगला दिया। सीबीएसई बोर्ड से उसे पढ़ाया था। अब वह सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहा था। हमें लगा था कि वो आईएएस बनेगा। वह बहुत होशियार है। लेकिन, किसी डॉक्टर के चक्कर में आकर उसने जिंदगी तबाह कर ली। छात्र ने प्राइवेट पार्ट काटने का फैसला क्यों किया? क्या अब दोबारा वो अपनी पुरानी स्थिति में आ सकेगा? उसका इलाज करने वाले डॉक्टर क्या कहते हैं? स्टूडेंट ने कहा- मैं अमेठी का रहने वाला हूं। मेरे पापा किसान हैं, हमारी अच्छी खेतीबाड़ी है। मेरी मां हाउस वाइफ हैं। मेरा कोई भाई-बहन नहीं है।मेरी पढ़ाई सीबीएसई बोर्ड से हुई है। जब मैं 14 साल का था, तब मैं एक फंक्शन में गया था। वहां लड़कियों के साथ डांस करते हुए मुझे पहली बार एहसास हुआ कि मैं लड़कों की तरह नहीं हूं। सिर्फ लड़कों की तरह दिखता हूं। वहां से लौटने के बाद मैंने इस बारे में सोचना शुरू किया। चूंकि मां-बाप का इकलौता बेटा हूं, इसलिए परिवार में कुछ भी कहते नहीं बना। फिर ग्रेजुएशन करने के दौरान में अपनी मौसी के घर पर रहने चला गया। फिर मैं यूपीएससी की तैयारी के लिए प्रयागराज आ गया। सिविल लाइन एरिया में एक कमरा किराये पर लिया। आया तो मैं तैयारी करने था, मगर पढ़ाई में मन ही नहीं लग रहा था। फिर मैंने गूगल और यूट्यूब पर सर्च करना शुरू किया कि एक लड़का कैसे शारीरिक रूप से लड़की बन सकता है। कुछ सर्जरी के इनपुट मिले। उन्हें पढ़ता रहा, फिर मुझे कटरा (प्रयागराज) में एक डॉक्टर के बारे में पता चला। मैंने पहले फोन किया, फिर मिलने भी गया। डॉक्टर का नाम डॉ. जेनिथ था। मैंने अपनी समस्या बताई कि मैं लड़की तरह फील करता हूं, मगर शरीर से लड़का हूं। तो मैं शरीर से भी कैसे लड़की जैसा हो सकता है? डॉक्टर ने कहा- तुम्हें इसके लिए सबसे पहले अपना प्राइवेट पार्ट काटना होगा। उन्होंने पूरा प्रोसेस भी समझाया कि घर पर ही ये सब कैसे कर सकते हैं। उनके कहने पर मैं एनेस्थिसिया का इंजेक्शन, सर्जिकल ब्लेड, रुई और बाकी सामान खरीदकर लाया। फिर कमरे में अकेले ही खुद को एनेस्थिसिया का इंजेक्शन लगाया। मेरी कमर के नीचे का हिस्सा सुन्न हो गया। इसके बाद मैंने अपने ही हाथों से प्राइवेट पार्ट का काट दिया। इसके बाद खुद की मरहम पट्?टी कर ली। करीब 6 घंटे बाद मेरे शरीर में एनेस्थिसिया का असर कम होने लगा। इसके बाद इतना तेज दर्द महसूस हुआ कि लगा जान निकल जाएगी। करीब 1 घंटे तक दर्द से मैं वही कमरे में तड़पता रहा। सोचा कि कुछ देर में दर्द कम हो जाएगा, मगर ऐसा नहीं हुआ। तब मैंने पेन किलर मेडिसिन भी खाई, मगर कुछ आराम नहीं मिला। अपनी पट्टी हटाकर देखा तो खून ही खून हो गया। फर्श पर खून फैल गया। जब लगा कि अब जान नहीं बचेगी, तो अपने मकान मालिक को आवाज लगाई। मैं चिल्ला रहा था- मेरे लिए एम्बुलेंस मंगवा दीजिए। आप लोग ऊपर कमरे में मत आइएगा, सिर्फ मुझे हॉस्पिटल पहुंचाने में मदद करिए। तबीयत खराब हो रही है। मेरे मकान मालिक ने एम्बुलेंस बुलाई। देर रात मुझे तेज बहादुर सप्रू हॉस्पिटल में ले जाया गया। चूंकि हालत गंभीर थी, इसलिए मुझे स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। अब यहीं पर मेरा इलाज चल रहा है। छात्र ने कहा- मुझे लड़कियों में कोई इंट्रेस्ट ही नहीं है। मुझे लगता है कि मेरी आवाज भी लड़कियों जैसे ही है। चलने की भी स्टाइल भी उनके जैसा है। हमने पूछा- क्या ये नहीं लगा कि खुद से सर्जरी कर लोगे तो जान का खतरा हो सकता है। उसने बताया- मुझे पता नहीं था कि इसमें मेरी जान जा सकती थी, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैं जेंडर ही चेंज करना चाहता था, बस इसीलिए यह सब किया।स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल के सर्जन डॉ. संतोष सिंह बताते हैं- इस छात्र की उम्र करीब 17 साल है। उसने अपने हाथ से ही अपना प्राइवेट पार्ट काट लिया था। उसे लगता था कि वह लड़की है, इसलिए उसने अपनी जान जोखिम में डाल दी। अगर समय रहते वह अस्पताल नहीं पहुंचता तो स्थिति और बिगड़ जाती। मनोचिकित्सक के जरिए भी उसकी काउंसिलिंग कराई जाएगी। उनकी राय भी ली जाएगी। इस तरह का केस पहली बार आया है। सेक्स रि-असाइनमेंट सर्जरी के बारे में भी उनके परिवार को बता दिया गया है। दरअसल, उस बच्चे का पेशाब का रास्ता बनाना होगा। मनोचिकित्सक- अगर किसी यूथ को ऐसा फील हो तो वो क्या करें? मोतीलाल नेहरू मंडलीय चिकित्सालय के सीनियर मनोचिकित्सक डॉ. राकेश पासवान बतातें हैं की - ये जेंडर आईडेंटिटी डिसऑर्डर का मामला है। इसमें किसी लड़के को लगने लगता है कि वह लड़की है। ऐसा ही लड़कियों के केस में भी होता है, उन्हें लगता है कि वो एक लड़का है, सिर्फ बॉडी लड़कियों की है। ऐसे केस में कई बार लड़के या लड़की को अपने ही शरीर से नफरत हो जाती है। वह जेंडर चेंज करना चाहता है। इस छात्र के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा। मेरा सुझाव है कि ऐसी स्थिति में संबंधित व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए था और उसे अपने मां-बाप को यह बात बतानी चाहिए थी।

थाना सिविल लाइन्स पुलिस 01 अभियुक्त गिरफ्तार,कब्जे से अवैध देशी तमंचा, कारतूस बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। थाना सिविल लाइन्स पुलिस द्वारा थाना स्थानीय के ग्राउण्ड मजार से करीब 100 मीटर पहले थाना क्षेत्र सिविल लाइन्स से गिरफ्तार किया गया तथा कब्जे से 01 अवैध देशी तमंचा .315 बोर व 01 अवैध जिन्दा कारतूस .315 बोर बरामद किया गया । गिरफ्तारी/बरामदगी के आधार पर उक्त अभियोग में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट की बढ़ोत्तरी की गयी । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-मो0 इसराइल उर्फ इजराइल उर्फ मो0 साहिबा पुत्र मो0 इसरार निवासी मलावा खुर्द थाना झूँसी जनपद प्रयागराज उम्र करीब 24 वर्ष। बरामदगी का विवरण- 01 अवैध देशी तमंचा .315 बोर व 01 अवैध जिन्दा कारतूस .315 बोर। संबंधित अभियोग का विवरण- मु0अ0सं0-203/2025 धारा 127(2),352,109(1) बी0एन0एस0 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट थाना सिविल लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज। आपराधिक इतिहास का विवरण- 1. मु0अ0सं0 98/2018 धारा 394/411 भा0द0वि0 थाना कैण्ट कमिश्नरेट प्रयागराज। 2. मु0अ0सं0 247/2018 धारा 379/411/419/420 भा0दवि थाना कर्नलगंज कमिश्नरेट प्रयागराज। 3. मु0अ0सं0 203/2025 धारा 127(2),352,109(1) बीएनएस व 3/25 आर्म्स एक्ट थाना सिविल लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज। 4. मु0अ0सं0 371/2018 धारा 286/307/323/506 भा0द0वि0 थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज। 5. मु0अ0सं0 398/2018 धारा 307/452/504/506 भा0द0वि0 थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज। 6. मु0अ0सं0 780/2018 धारा 25 आर्म्स एक्ट भा0द0वि0 थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज। 7. मु0अ0सं0 781/20218 धारा 411 भा0द0वि0 थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम का विवरण-1. उ0नि0 दीपक कुमार, थाना सिविल लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज। 2. उ0नि0 सचिन तंवर, थाना सिविल लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज। 3. उ0नि0 विनय पाल, थाना सिविल लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज। 4. हे0का0 मो0 समीर, थाना सिविल लाइन्स कमिश्नरेट प्रयागराज।

पंजीकृत मु0अ0सं0-203/2025 धारा 127(2),352,109(1) बी0एन0एस0 से सम्बन्धित अभियुक्त मो0 इसराइल उर्फ इजराइल उर्फ मो0 साहिबा पुत्र मो0 इसरार निवासी मलावा खुर्द थाना झूँसी जनपद प्रयागराज को मुखबिर की सूचना पर पोलो

राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन आज 13 सितंबर को

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज के तत्वाधान में दिनांक 13.09.2025 को प्रात 10:00 बजे से जनपद न्यायालय, प्रयागराज व समस्त तहसील में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा त जनपद न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का उद्घाटन माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज श्री संजीव कुमार द्वारा किया जाएगा।

कांग्रेस नेताओं को प्रयागराज में हाउस अरेस्ट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वाराणसी दौरे से पहले, प्रयागराज में भी कांग्रेस नेताओं को हाउस अरेस्ट कर लिया गया है। पुलिस ने यह कार्रवाई कांग्रेस कार्यकर्ताओं को वाराणसी जाकर विरोध प्रदर्शन करने से रोकने के लिए की है। हाउस अरेस्ट किए गए नेता इरशाद उल्ला ने इसे लोकतंत्र का हनन बताते हुए सरकार पर विरोध की आवाज दबाने का आरोप लगाया है।

CHANGE OF NAME

I. SUSHMA SINGH W/o NILESH PRATAP SINGH R/o Vill-RAJAPUR, POST- BHARATGANJ, MANDA KHAS, DISTT-PRAYAGRAJ U.P.-212104, do hereby affirm and state on oath as under:

1. That the deponent is the father and natural guardian of ATHARV PRATAP SINGH who was born on date 01.08.2010, in words FIRST AUGUST TWO THAOUSAND TEN at PRAYAGRAJ which is true and correct and the same be recorded in your institutions record.

2. That the Father's name of ATHARV PRATAP SINGH is Mr. NILESH PRATAP SINGH who is the husband of the deponent.

3. I agree that once the above information is recorded in the institutions record there would be no subsequent change in it.

I, the above named deponent do hereby verify that the contents of paras 1 to 3 of this affidavit are true and correct and nothing material has been concealed in it.

DEPONENT
SUSHMA SINGH

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

अग्नि सुरक्षा और औद्योगिक सुरक्षा कौशल का महत्व

डायट प्रयागराज में नवाचार एवं नॉलेज शेयरिंग प्रोग्राम का हुआ सफल समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागराज में 10 और 11 सितंबर को आयोजित नवाचार एवं नॉलेज शेयरिंग प्रोग्राम का समापन गरिमामयी वातावरण में हुआ। कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में डॉ हरिष सिंह एवं डॉ रुचि दुबे शामिल रहे, जबकि मार्गदर्शन रूप में डायट प्राचार्य श्री राजेन्द्र प्रताप की सम्मानजनक उपस्थिति रही। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने अपने-अपने नवाचारों को निर्णायक मंडल के समक्ष पीपीटी एवं हार्ड कॉपी के रूप में प्रस्तुत किया। निर्णायकों ने सभी 22 ब्लॉकों से आए प्रतिनिधियों के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें सांत्वना पुरस्कार एवं सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किया। साथ ही, डीएलएड प्रशिक्षण 2023-2024 बैच के प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण की कड़ी में सर्वप्रथम प्राथमिक स्तर पर तृतीय पुरस्कार रिता शर्मा (सोराव ब्लॉक), द्वितीय पुरस्कार अर्चना त्रिपाठी (उरुवा) एवं पूनम चौधरी (श्रृंगवेरपुर धाम ब्लॉक) को दिया गया। उच्च प्राथमिक स्तर पर तृतीय पुरस्कार सीमा मिश्रा (सैदाबाद), द्वितीय पुरस्कार सुषमा यादव (कौड़िहार - 1 ब्लॉक) तथा प्रथम पुरस्कार नीलकमल सहाय (कोरियार -2 ब्लॉक) को प्राप्त हुआ। डायट प्रतिभागियों में तृतीय स्थान वीरभद्र प्रताप, द्वितीय स्थान डा. अंबालिका मिश्रा और प्रथम स्थान डा. प्रसून सिंह को प्रदान किया गया।कार्यक्रम के अंतिम चरण में शील्ड एवं प्रमाणपत्र वितरण किया गया। अपने समापन संबोधन में प्राचार्य श्री राजेन्द्र प्रताप ने सभी प्रवक्ताओं एवं प्रतिभागियों की सराहना करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम केवल डायट तक सीमित न रहकर राज्य स्तर तक अपनी पहचान बनाएगा। उन्होंने कार्यक्रम की संयोजक ऋचा राय एवं निधि मिश्रा की समन्वय क्षमता की प्रशंसा की और कहा कि यह आयोजन टीम भावना एवं सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। विजित प्रतिभागियों के नवाचार एवं बेस्ट प्रैक्टिसेज राज्य स्तर पर प्रेषित किए जाएंगे। इस अवसर पर डायट के सभी प्रवक्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ राजेश पाण्डेय द्वारा कि गया। 'यह नवाचार एवं नॉलेज शेयरिंग केवल डायट परिसर तक सीमित न रहे, बल्कि पूरे ज़िले तक पहुँचे और प्रतिभागी जिला स्तर पर भी अपना झंडा गाड़ते हुए राज्य स्तर तक पहुंचे'- डायट प्राचार्य, 'राजेन्द्र प्रताप'।

राहुल गांधी की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति (दिशा) की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं रायबरेली के सांसद राहुल गांधी की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं अंशुमन समिति की बैठक आयोजित हुई बैठक में से अध्यक्ष के रूप में अमेठी के सांसद किशोरी लाल शर्मा एवं प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार दिनेश प्रसाद सिंह उपस्थित थे। राहुल गांधी ने जिलाधिकारी को सड़कों की मरम्मत व निर्माण कार्य से संबंधित जन प्रतिनिधियों द्वारा बताई गई समस्याओं के प्राथमिकता पर निस्तारण कराने के निर्देश दिए। पशुपालन विभाग से वेटरनरी डॉक्टरों की उपलब्धता और कृत्रिम गर्भाधान सुविधाओं की जानकारी ली। एनएचआई द्वारा कराये जा रहे गंगा एक्सप्रेसवे निर्माण कार्य की प्रगति भी जानी। उन्होंने जनपद में बन रहे बाईपास सड़कों पर भी चर्चा हुई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में स्वास्थ्य कर्मियों की उपलब्धता की भी जानकारी ली। श्री गांधी ने कहा कि कौशल विकास मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके अभ्यर्थियों का फालोअप कर रोजगार दिलाए। पूर्व में आयोजित दिशा बैठक के अनुपालन आख्या की भी उन्होंने समीक्षा की तथा संतोष व्यक्त किया। बैठक में जनप्रतिनिधियों द्वारा जन सुविधाओं से जुड़े अनेक सुझाव और समस्याओं को भी रखा गया, जिनके समाधान के निर्देश सम्बान्धित अधिकारियों को दिये गये। श्री गांधी ने कहा कि जन समस्याओं को गम्भीरता से लेते हुए अधिकारी प्राथमिकता से उनका समयबद्ध समाधान करायें। विकास योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु एक ठोस कार्य योजना बनाकर कार्य करें। इस बैठक में अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी, एमएलसी अमेठी गोविन्द नारायण शुक्ला, विधायक ऊँचाहार मनोज कुमार पाण्डेय, विधायक सदर अदिति सिंह, विधायक सलोन अशोक कुमार, विधायक बछरावां श्याम सुन्दर भारती, विधायक हरचन्दपुर राहुल राजपूत, जिलाधिकारी हर्षिता माथुर, पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह, मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय, अपर जिलाधिकारी (प्र)सिद्धार्थ, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) विशाल यादव, परियोजना निदेशक सतीश मिश्रा सहित सम्बन्धित जनप्रतिनिधिगण व अधिकारीगण उपस्थित रहें।

जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति (दिशा) का विधायकों ने किया बहिष्कार।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली, बैठक में उस समय सनसनी फैल गई जब ऊंचाहार क्षेत्र से विधायक एवं प्रदेश सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री मनोज कुमार पांडे ने जिला विकास समन्वय एवं अनुसरण समिति (दिशा) की बैठक का बहिष्कार किया और वह अचानक बैठक छोड़कर सभा कक्ष से बाहर आ गए। बाहर आकर श्री पांडे ने पत्रकारों से बात करते हुए बताया कि उन्होंने बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां को बिहार में कांग्रेस के मंच से गाली दिए जाने के मामले में प्रस्ताव रखा कि इस बैठक में इस कृत्य की निंदा का प्रस्ताव पास किया जाए। बैठक की अध्यक्षता कर रहे राहुल गांधी ने प्रस्ताव पेश करने की अनुमति नहीं दी। इसलिए इसका विरोध करते हुए उन्होंने बैठक का बहिष्कार कर दिया। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि राहुल गांधी को अपने मंच से किए गए इस निंदनीय कृत्य के लिए न कोई खेद है ना कोई अफसोस है।श्री पांडे ने कहा कि मां सबके लिए मा ही होती है चाहे वह गरीब की हो या देश के प्रधानमंत्री की। यदि किसी मां का अपमान किया गया है तो उस कृत में सम्मिलित किसी भी व्यक्ति को माफी मांग कर प्रकरण को समाप्त करना चाहिए, परंतु श्री राहुल गांधी के अंदर ऐसी नैतिकता नहीं है। उन्होंने राहुल गांधी से प्रश्न पूछते हुए कहा कि श्री गांधी ने अभी तक रायबरेली की आम जनता से जुड़ा हुआ एक भी प्रश्न संसद में नहीं पूछा है। उन्होंने महादेवपुरा की जिस सीट पर वोट चोरी का प्रमाण देने की बात कही थी।

आर्य कन्या पीजी कॉलेज 2025 में अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है,आज से एक हफ़्ते के भव्य समारोह की हुई तैयारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। आर्य कन्या पीजी कॉलेज शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी स्वर्णिम यात्रा के 50 साल पूरे कर चुका है। अब यह स्वर्ण जयंती समारोह कॉलेज के इतिहास में एक और सुनहरा अध्याय जोड़ने जा रहा है। 1975 में स्थापित आर्य कन्या पीजी कॉलेज ने पचास साल पूरे कर लिए हैं। इसी उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन एक सप्ताह तक चलेगा और इसमें देश की जानी-मानी हस्तियाँ शिरकत करेंगी। राजनीतिक और शैक्षणिक जगत से कई बड़े नाम इस समारोह में मौजूद रहेंगे। असम के राज्यपाल लक्ष्मण आचार्य, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री जयंत चौधरी, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री अनुप्रिया पटेल, उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लक्ष्मीबाई बाजपेयी, परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, और कई अन्य प्रमुख नेता इस आयोजन का हिस्सा बनेंगे। इसी के साथ साहित्य और कला जगत की हस्तियाँ भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराएँगी। राष्ट्रीय कवि दिनेश बाबरा,प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर, लोकप्रिय टीवी और फिल्म कलाकार भी समारोह को खास बनाएंगे। कार्यक्रम के दौरान कथक, भरतनाट्यम, लोकनृत्य, शास्त्रीय संगीत और लोकगीत जैसी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी होंगी। इस विशेष अवसर पर भारत सरकार की ओर से स्वर्ण जयंती डाक टिकट भी जारी किया जाएगा।

यमुनानगर क्षेत्र नैनी महेवा के कृष्णा हॉस्पिटल के डाक्टरों ने ईलाज के दौरान महिला की लिया जान

प्रयागराज। महिला घनादेवी उम्र 60 वर्ष पति का नाम सुखराम निवासी पिपराव पानासा तहसील करछना की रहने वाली थी महिला हस्टपुस्ट थी केवल एक दिन पहले बुखार आया था 9 सितम्बर को कृष्णा हॉस्पिटल महेवा टी सी आई माडोका रोड प्रयागराज में एडमिड किया गया था उसी दौरान 8000 रूपये जमा करवा लिया गया। तब ट्रीटमेंट चालू किया गया दवा और इंजेक्शन जैसे दिया थोड़ी देर बाद महिला के हालात और गंभीर हो गये मुँह से फेचकुर फेंकने लगी तभी मरीज के पुत्र प्रकाश को सूचना दिया गया की आप जल्दी से 15000 रूपये और जमा करवाओ लड़का प्रकाश पैसे की वेवस्था गाँव गया करने को ज़ेवर बेच कर पैसा जैसे जमा किया वैसे ही हालात गंभीर अवस्था में बढ़ते गये महिला सीरियस हो गयी तब डाक्टरों और नर्सो ने कहा भैया आपकी माँ की तबियत ज्यादा ख़राब हो रही हैं बड़े डाक्टरों को बुलाकर ईलाज करना होगा आप जल्द से जल्द 20000 हजार रूपये की तैयारियां करवा दीजिए हम ईलाज करवा रहें। पुत्र प्रकाश बेचारा दवा और ईलाज के लिये दौड़ता रहा वहीं

गाँव और रिश्तेदारों से कर्ज लेकर पैसे की जैसे वेवस्था करके लाया हॉस्पिटल में तो उसकी माँ घना देवी को डाक्टरों द्वारा मृत्यु घोषित कर दिया गया जिस समय से लड़के और बेटियों और मामा ने सुना तो दुखो का पहाड़ टूट पड़ा रों रों कर पीड़ित परिवार का बुरा हाल हैं. डॉक्टर विनोद जायसवाल के पास ग्रामीणों का कहना हैं की इस डॉक्टर के पास कोई डिग्री नहीं हैं और जितने डाक्टरों का कृष्णा हॉस्पिटल में नाम दिया हैं वो डॉक्टर केवल इस हॉस्पिटल की कई बार शिकायत सुनकर ईलाज करने कोई भी डॉक्टर नहीं आते हैं जो की केवल यहाँ हड्डियों का टूटा फूटा ईलाज होता हैं। ग्रामीणों का और क्षेत्रवासियो का कहना हैं की भैया इस हॉस्पिटल में आय दिन घटना होती रहती हैं और पप्रयागराज के अधिकारीयों के सज्ञान में हैं लेकिन कोई अभी तक ऐक्सन नहीं लिया गया हैं बड़े बड़े मामलो को दौलत की तराजू में तोलकर खरीद लेता हैं इसी कारण पीड़ितों को न्याय नहीं मिल पाता हैं आखिर कब तक खुलेआम भ्रष्टाचार चलता रहेगा गरीबों की मताये और बहनों भाइयों का शोषण होता रहेगा और पीड़ितों को न्याय नहीं मिलेगा गरीब पिसता रहेगा ऑल अधिकारियों और पुलिस प्रशासन एवं मा. मुख्यमंत्री महोदय और जिलाचिकत्सा अधिकारी से निवेदन हैं की मामले की उचित जाँच करवाते हुये हॉस्पिटल को सीज करते हुये पीड़ित परिवार को न्याय दिलाये वर्ना हाइबे को जाम कर आंदोलन करेंगे।

श्री श्री श्री 108 रामरतन जी महाराज (फलाहारी बाबा) ने करि समीक्षा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। श्री श्री श्री 108 रामरतन जी महाराज (फलाहारी बाबा) ने नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर के स्किल डेवलपमेंट कार्यक्रमों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने सेंटर में चल रहे विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों का जायजा लिया और उनके प्रभाव का मूल्यांकन किया। समीक्षा के उद्देश्य- कार्यक्रमों की गुणवत्ताः समीक्षा का उद्देश्य कार्यक्रमों की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करना था। - युवाओं का विकासः समीक्षा का उद्देश्य युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद करना था। समीक्षा के परिणाम- कार्यक्रमों की प्रभावशीलताः समीक्षा से पता चला कि कार्यक्रम युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने में प्रभावी थे। - सुधार के क्षेत्रः समीक्षा से यह भी पता चला कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है और कैसे कार्यक्रमों को और भी प्रभावी बनाया जा सकता है। निष्कर्षः- श्री श्री श्री 108 रामरतन जी महाराज (फलाहारी बाबा) की समीक्षा से नयिनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर के स्किल डेवलपमेंट कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिलेगी और युवाओं को और भी बेहतर कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकेगा।

पाकेट 12 सेक्टर 82 में 3 अक्टूबर से भव्य श्रीराम कथा,3 अक्टूबर को सुबह 8 बजे से भव्य कलशयात्रा निकाली जाएगी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

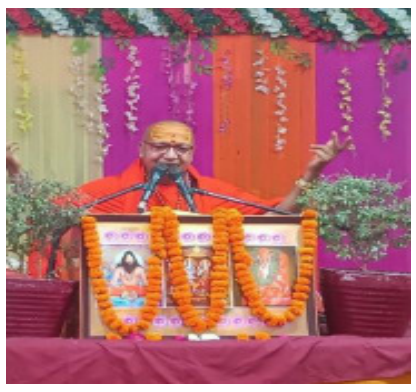

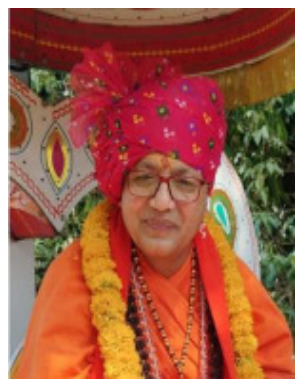

नोएडा। सेक्टर 82 पाकेट 12 सेंट्रल पार्क में 3 अक्टूबर से भव्य श्रीराम कथा होगी। 3 अक्टूबर को सुबह 8 बजे बैंड बाजा के साथ भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी। इस कलशयात्रा में ऊंट घोड़े, ढोल नगाड़े भी शामिल रहेंगे। यह कलशयात्रा पूरे सेक्टर 82 में घूमेगी। कथा व्यास अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज (श्री पंचायती निर्वाणी अखाड़ा) के मुखारविंद संगीत मयी श्री राम कथा कही जाएगी। श्री राम कथा को लेकर आयोजकों में काफी उत्साह है। यह कथा पूरी सोसायटी के सहयोग से हो रही है। 12 अक्टूबर को श्री राम कथा का विराम होगा और 13 अक्टूबर को सुबह हवन आरती एवं विशाल भंडारे का आयोजन होगा। आप सभी कथा प्रेमी परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के जनजागरण यात्रा निकाली गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जिला प्रशासन गौतमबुद्धनगर एवम भारत सरकार टकसाल नोएडा एमआइएनटी के द्वारा महिलाओ मे सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम को लेकर 9 से 15 वर्ष की उम्र तक की लड़कियों को निशुल्क एचपीवी वैक्सीन लगायी जानी है इसके प्रचार- प्रसार हेतु महिला उन्नति संस्था द्वारा जारी जागरूकता अभियान के दूसरे चरण के अन्तर्गत आज नोएडा के सदरपुर गांव एम-45 मे माडर्न पब्लिक स्कूल और जूनियर हाई स्कूल हरौला के बच्चों के साथ मिलकर हरौला गांव एम-5 मे सर्वाइकल कैंसर जागरूकता रैली निकाली। रैली मे छात्राओं ने बैनर-पोस्टर और तख्ती के साथ नारे लगाकर लोगों को सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूक किया। रेनूबाला शर्मा ने लोगों को बताया कि सर्वाइकल कैंसर के मामले देश मे लगातार बढ रहे है जो एक बेहद चिंता का विषय है इसलिए जनपद गौतमबुद्धनगर मे महिलाओ मे सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम को लेकर जिला प्रशासन गौतमबुद्धनगर एवम भारत सरकार टकसाल नोएडा द्वारा सरकारी स्कूल मे पढ रही 9 से 15 साल की बच्चियों को निशुल्क एचपीवी टीकाकरण कराये जाने की जीवन रक्षक पहल की गयी है जिसका सभी को लाभ उठाना चाहिए और बच्चियों को वैक्सीन लगवानी चाहिए साथ ही सभी महिलाओ को समय समय पर जांच कराना आवश्यक है इसके लक्षण दिखाई देने पर सरकारी जिला अस्पताल मे जाकर निशुल्क जांच करायें और इसका समुचित इलाज करायें जागरूकता रैली मे संस्थापक डा.राहुल वर्मा, सहसचिव विजय तंवर, प्रधानाचार्य हरविंद्र सिंह, रंजु मिश्रा और महासचिव अनिल भाटी आदि ने हिस्सा लिया।

महिला सुरक्षा को लेकर एनसीएफ प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस कमिश्नर से की मुलाक़ात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सिटीजन फोरम के एक प्रतिनिधिमंडल ने कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती इंद्राणी मुखर्जी के नेतृत्व में नौएडा की पुलिस कमिश्नर श्रीमती लक्ष्मी सिंह से सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर महिला सुरक्षा को लेकर विस्तृत चर्चा की गई तथा इस दिशा में कार्ययोजना प्रस्तुत की गई।प्रतिनिधिमंडल द्वारा नौएडा क्षेत्र में महिलाओं की सुरक्षा एवं सहायता हेतु पुलिस विभाग के सहयोग से जागरूकता शिविर आयोजित करने का प्रस्ताव रखा गया, जिसे पुलिस कमिश्नर ने सकारात्मक रूप से स्वीकार किया। इन शिविरों का उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों, उपलब्ध सुरक्षा संसाधनों व आपातकालीन सहायता उपायों की जानकारी देना है। इस मुलाक़ात में प्रमुख रूप से एनसीएफ की संरक्षक श्रीमती शालिनी सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती मधु मेहरा एवं चक्रधर मिश्रा, सचिव श्रीमती गरिमा त्रिपाठी व रणजीत सिंह, श्रीमती निशा चौहान तथा श्रीमती राजश्री गुप्ता आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे। नौएडा सिटीजन फोरम का संकल्प है कि व्यापक जनहित के विषयों के साथ ही हमारे प्रगतिशील समाज में महिला सुरक्षा को लेकर निरंतर कार्य करते रहेंगे और प्रशासन के साथ मिलकर जागरूकता को जन आंदोलन का रूप देंगे।

पॉकेट 7 में दो माह से आधी स्ट्रीट एवं पार्क की लाइट खराब

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। ईडब्ल्यूएस पॉकेट 7 में लगभग दो माह से लगभग आधे भाग में पार्क एवं स्ट्रीट लाइट खराब पड़ी हैं। आरडब्ल्यूए अध्यक्ष राघवेंद्र दुबे ने बताया कि बृहस्पतिवार को विद्युत यांत्रिकी के जीएम आर पी सिंह को इस समस्या से अवगत कराया उन्होंने इस समस्या के तुरंत समाधान के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। मौके पर जेई रमेश पंवार ने समस्या को देखा और कर्मचारियों को लाइट ठीक करने के लिए लगाया। राघवेंद्र दुबे ने बताया कि अधिकारियों से बार बार शिकायत के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हुआ जिससे आधा पॉकेट अंधेरे में डूबा रहता है। जिम पार्क की हाई मास्ट लाइट खराब हो गई थी जिसमें जो लाइट पिछले आठ महीने पहले रिपेयर के लिए गई थी वह आज तक नहीं आई उसमें सिर्फ दो लाइट ही जल रही है। प्राधिकरण के कई विभाग आला अधिकारियों की उदासीनता के कारण लगभग निष्क्रिय अवस्था में हैं। कई कई बार शिकायत के बाद भी कार्रवाई में लापरवाही बरती जा रही है। अधिकारियों द्वारा आश्वासन दिया गया कि दो तीन दिन में समस्या का समाधान हो जाएगा। इस अवसर पर उपाध्यक्ष रवि राघव, गोरे लाल, कोषाध्यक्ष सुशील पाल, सुभाष शर्मा, विकास कुमार , रमेश शर्मा सहित कई लोग मौजूद रहे।

राष्ट्रीय प्रवक्ता ने बाढ़ प्रभावित लोगों को वितरित की राहत सामग्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने गौतम बुद्धनगर में ग्राम झड्डा में बाढ़ प्रभावित लोगों के शिविर में जाकर राहत सामग्री का वितरण किया। जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ पुश्ता के किनारे बाढ़ प्रभावित जो भी आश्रय स्थल बनाए गए थे वहां पर लोगों को स्लीपर्स, बच्चों को लेखन सामग्री और मौसमी फलों वितरण किया गया। गोपाल जी ने अपने मार्गदर्शन में चल रहे 'गोपाल नमो सेवा केंद्र' के बारे में भी लोगों को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कोई भी पात्र व्यक्ति जो भी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेने से वंचित हैं वो सभी लोग हमारे नोएडा सेक्टर 65 स्थित गोपाल नमो सेवा केंद्र पर अपनी समस्या का समाधान करवाकर निर्बाध रूप से पीएम मोदी और उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा संचालित की जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं जैसे 'आयुष्मान कार्ड, ई श्रम कार्ड, राशन कार्ड, सुकन्या समृद्धि योजना, सुमंगला योजना , निराश्रित पेंशन, सामूहिक विवाह सहित अन्य योजनाओं का लाभ निः शुल्क रूप से उठा सकते हैं। इस मौके पर जिला प्रशासन से प्रतीत सिंह,तहसीलदार सदर, ज्योत्स्ना सिंह नायब तहसीलदार, लेखपाल प्रवेश नीरजलता डीपी ममता और स्वास्थ्य विभाग से डॉ शिवा सिंह की टीम मौजूद रही।

डाढा गांव का नीतीश भाटी बना कामर्शियल पायलट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। नोएडा के डाढा गाँव ग्रेटर नोएडा का बेटा नीतीश भाटी बना कमर्शियल पायलट 200 घंटे फ्लाइट उड़ाने का अनुभव नीतीश भाटी के पिता किसान रामवीर भाटी का कहना है कि उन्हें अपने बेटे पर गर्व है और पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर है नीतीश भाटी का कहना है मेरे दादाजी का सपना था मेरा पोता पायलट बने मैंने अपने दादाजी का सपना पूरा किया आज मेरे दादाजी होते तो कितना खुश होते। इस मौके पर नोएडा मीडिया क्लब के अध्यक्ष आलोक द्विवेदी ने नीतीश भाटी को शुभकामनाएं दी।

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर डॉ. ईशान्या राज ने जीवन रक्षण के टिप्स साझा किए

(एक मानवीय पहल - खुद बनें 'मोमेंटो' जीवन की रक्षा का)

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नई दिल्ली। विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक डॉ. ईशान्या राज ने एक अनोखी पहल करते हुए स्वयं को 'मोमेंटो' बनाकर जीवन रक्षा के कुछ महत्वपूर्ण सुझाव साझा किए। उनके शब्दों में - 'हर व्यक्ति, जो किसी और की जिंदगी में उम्मीद की किरण बन सकता है, वही असली मोमेंटो है।' आत्महत्या एक वैश्विक संकट बन चुका है, और मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा इसके मूल कारणों में से एक है। इस गंभीर विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए डॉ. राज ने मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए जो हर व्यक्ति के लिए उपयोगी हो सकते हैंः डॉ. ईशान्या राज के जीवन रक्षण सुझाव (जीवन रक्षा मंत्र):खुलकर बात करें - अगर आप किसी को उदास, चुप या परेशान महसूस करें, तो उनसे खुलकर बात करें। एक छोटी सी बातचीत किसी की जान बचा सकती है। सुनना सबसे बड़ा सहारा है - कई बार कोई इंसान सिर्फ सुना जाना चाहता है। बिना जजमेंट के, पूरी सहानुभूति के साथ सुनें। मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें - जैसे हम बुखार या चोट के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं, वैसे ही मन की तकलीफ के लिए मनोवैज्ञानिक की मदद लें। स्वस्थ दिनचर्या अपनाएं - पर्याप्त नींद, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और डिजिटल डिटॉक्स बहुत जरूरी हैं। सहारा लेने में संकोच न करें - मदद मांगना कमजोरी नहीं, बल्कि साहस है। अगर आप अकेलापन, उदासी या निराशा महसूस करें, तो अपने परिवार, दोस्तों या प्रोफेशनल से बात करें। खुद को दोषी न मानें - जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। कोई भी स्थायी समस्या नहीं होती, लेकिन जीवन अनमोल है।सकारात्मक वातावरण बनाएं - अपने आसपास ऐसे माहौल का निर्माण करें, जहाँ खुलकर बात की जा सके और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर शर्म महसूस न हो। इस अवसर पर डॉ. ईशान्या राज ने यह भी कहा, 'हम सबको एक-दूसरे के लिए मोमेंटो बनना है - एक ऐसा प्रतीक, जो यह याद दिलाए कि जीवन में हमेशा उम्मीद है।' उनकी यह पहल न केवल प्रेरणादायक रही, बल्कि समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर एक सकारात्मक संदेश भी लेकर आई।लेखकः संवाददाता, विशेष रिपोर्ट (स्रोतः विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस कार्यक्रम 2025)

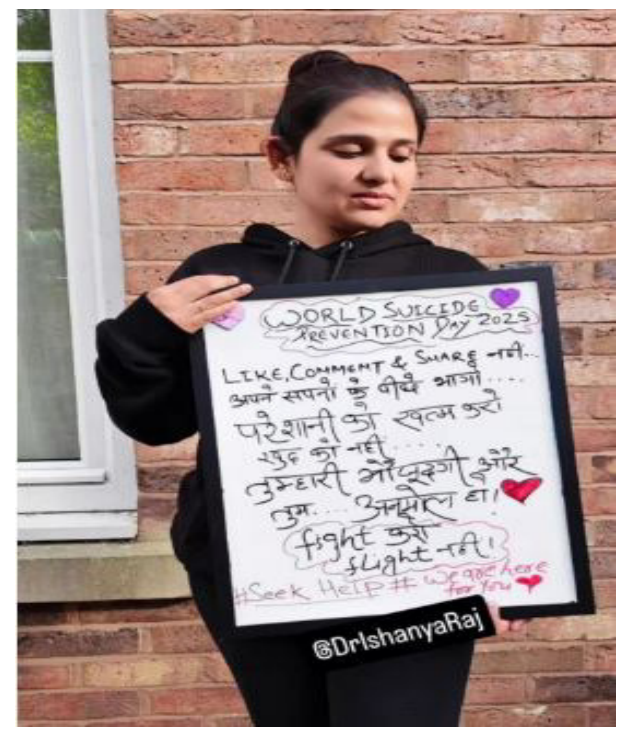

नोएडा के फिजियोथेरेपिस्ट का हुआ कानपुर में सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। वर्ल्ड फिजियोथेरेपी डे 2025 के अवसर पर कानपुर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान नोएडा के फर्स्ट वन रिहैब फाउंडेशन की टीम को राष्ट्रीय स्तर के कई सम्मान प्राप्त हुए कानपुर में आयोजित विशेष समारोह , नेशनल कानपुर फिज़ियोकॉन्, में फर्स्ट वन रिहैब फाउंडेशन के निदेशक डॉ. महिपाल सिंह को 'फिज़ियो दिग्गज सम्मान', प्रबंध निदेशक डॉ. दीक्षा श्रीवास्तव को फिज़ियोथेरेपी के क्षेत्र में सामाजिक उत्कृष्टता सम्मान', डॉ. सुष्मिता भाटी को फिज़ियो थेरेपी के क्षेत्र में सामाजिक उत्कृष्टता सम्मान तथा टीम फर्स्ट वन रिहैब फाउंडेशन को दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य हेतु राष्ट्र के प्रति योगदान सम्मान' से नवाज़ा गया। इसके साथ जौनपुर में सक्रिय वृद्धावस्था थीम पर विशेष कार्यशाला का किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था लोगों को सक्रिय एवं स्वस्थ वृद्धावस्था के महत्व से अवगत कराना, साथ ही आधुनिक जीवन शैली में बढ़ते लाइफ स्टाइल असंतुलन पर प्रकाश डालना, जो आज स्वास्थ्य और जीवन दोनों में असंतुलन का कारण बन रहा है।इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रॉबिन सिंह (एमएस ऑर्थो, कृष्णा ट्रॉमा एंड जॉइंट रिप्लेसमेंट सेंटर) और डॉ. त्रिभुवन सिंह (निदेशक एवं संस्थापक, गायत्री रिहैबिलिटेशन सेंटर) उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में फिजियोथेरेपी की बढ़ती प्रासंगिकता और 'हेल्दी एजिंग' की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यशाला का सफल आयोजन डॉ. प्रदीप मौर्य, डॉ. प्रदीप गुप्ता और डॉ. प्रीति यादव द्वारा किया गया, जबकि समन्वयन डॉ. दीपक सिंह ने किया। विशेष वक्ताओं के रूप में डॉ. दीक्षा श्रीवास्तव ने डायग्नोस्टिक रीजनिंग एवं मस्कुलो स्केलेटल पेन की पहचान की प्रक्रिया, डॉ. महिपाल सिंह ने फिजियोथेरेपी ट्रीटमेंट एवं मायोथेरेपी और डॉ. सुष्मिता भाटी ने पेल्विक स्वास्थ्य के महत्व पर अपने विचार रखे। प्रतापगढ़ से शामिल हुए वरिष्ठ फिज़ियो थेरेपिस्ट डॉ. विश्वदीप सिंह को 'डायनेमिक फिज़ियो सम्मान' से सम्मानित किया गया.कार्यशाला में नए और युवा फिजियो थेरेपिस्ट्स को प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित मरीजों को निःशुल्क परामर्श और उपचार उपलब्ध कराया गया तथा बच्चों और प्रति भागियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

नोएडा और ग्रेटर नोएडा में आवारा कुत्तों का आतंक,आवारा कुत्तों पर यूपी सरकार का सर्कुलर सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उल्लंघनःविजय गोयल

फोनरवा शहरवासियों के लिए मजबूती से लड़ेगी आवारा हिंसक कुत्तों के मामले की लड़ाई-योगेंद्र शर्मा,गोयल घूम-घूम कर RWAS के साथ बैठक करेंगे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। फोनरवा के आव्हान पर आवारा कुत्तों के काटने की समस्या को लेकर देश भर में तीन साल से आंदोलन चला रहे लोक अभियान के अध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल ने आज नोएडा मीडिया क्लब में संवाददाता सम्मेलन में बताया कि आवारा कुत्तों को लेकर कुछ डॉग फीडर्स ने हाय-तौबा मचा पूरे देश को बंधक बना लिया है। फोनरवा अध्यक्ष योगेन्द्र गर्ग ने बताया कि नोएडा में बढ़ते कुत्तों के मामलेबीके मामले में पूर्व मंत्री विजय गोयल जी जो इस लड़ाई को काफी पहले से लड़ रहे है उनके साथ फोनरवा प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और नोएडा और ग्रेटर नोएडा की लड़ाई लड़े। पूर्व मंत्री विजय गोयल ने पूरे एनसीआर क्षेत्र, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुडगांव, दिल्ली सब जगह आवारा कुत्तों के कारण बहुत समस्याएं हैं। हजारों कुत्ते रोज काट रहे हैं, लोग चुपचाप इंजेक्शन लगवा के चले आते हैं। राज्य सरकारें प्रशासन इस समस्या की अनदेखी कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट कन्फ्यूज़ है। दो जज की बेंच कहती है सब कुतों को पकड़ लो। शेल्टर होम में डाल दो।

उन्हीं की 3 जज की बेंच कहती है कुत्तों को छोड़ दो। गोयल ने कहा देश भर में 12 करोड़ से अधिक कुते हैं। हमारा देश कुत्तों की संख्या में सबसे आगे है। हमारा देश में कुते काटने की संख्या सबसे ज्यादा है हमारे देश में रेबीज के शिकार सबसे ज्यादा है। हमारे देश में सबसे ज्यादा वैक्सीन बिक रही है। बच्चे बुजुर्ग और महिला इनकी सबसे ज्यादा शिकार हैं। गोयल ने कहा अमेरिका, सिंगापुर, चाइना, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, ब्रिटेन, थाईलैंड आप कहीं पर भी चले जाइये, आपको एक सिलसिलेवार बताया 1. स्टरलाइजेशन और वैक्सीनेशन का काम ईमानदारी से नहीं हो रहा। है। कुतों से संबंधित संस्थाएं ही स्टरलाइजेशन का काम कर रही है और इसमें भारी भ्रष्टाचार है। 2. इसी लिए कुत्तों की संख्या लगातार बढ़ रही है. 3. स्टरलाइजेशन और वैक्सीनेशन बनाने वाली जो कंपनियां हैं उनका बहुत बड़ा स्वार्थ है। गोयल ने कहा अभी सुप्रीम कोर्ट ने दो महत्त्वपूर्ण आदेश दिए हैं। उनका पालन नहीं हो रहा है। गोयल ने कहा उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी जी को पत्र लिखा है कि उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव श्री अमृत अभिजात ने जो सर्कुलर निकाला है वो सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उल्लंघन है। इसके कारण न तो आवारा कुतों की समस्या हल होगी और सभी क्षेत्रों के अंदर झगड़े और बढ़ जाएंगे।

कुत्ता सड़क पर नहीं दिखाई देगा वहाँ सड़कों पर खाना खिलाना अवैध है। पेटा जैसी संस्था जो अमेरिका से चलती है वो भारत में कुत्तों को सड़कों पर रहने की वकालत करती है किंतु अमेरिका में नहीं। गोयल ने कहा सुप्रीम कोर्ट ने दो आदेश दिए हैं। 1. पहला, आवारा कुत्तों को अब सार्वजनिक स्थानों पर खाना नहीं डाला जा सकेगा। जिन भी स्थानों पर लोग निवास कर रहे हैं या जहाँ आवाजाही है उन सोसाइटी, अपार्टमेंट्स व सड़कों पर डॉग फीडर्स डॉग फीडिंग नहीं करा सकते, इसके लिए जो स्थानीय निकाय व प्रशासन है वो आबादी से दूर एक निश्चित स्थान बनाएगा। केवल वहीं पर डॉग फीडिंग की जा सकेगी। और यह स्थान केवल स्थानीय प्रशासन तय करेगा, इसमें किसी और की भूमिका नहीं होगी। 2. दूसरा, आदेश सुप्रीम कोर्ट का है कि जो भी काटने वाले कुते हैं आतंकित हैं एग्रेसिव है उन कुत्तों को छोड़ा नहीं जाएगा और उनको हमेशा के लिए बाड़े में बंद किया जाएगा। गोयल ने कहा उत्तर प्रदेश शासन का जो सर्कुलर है वो इन दोनों सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उल्लंघन करता है और इसमें भारी कन्फ्यूजन है और इसके कारण आरडब्ल्यूएस को व नागरिकों को किसी प्रकार की कोई राहत नहीं मिलेगी।

गोयल ने कहा उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को यह निवेदन किया है कि इस सर्कुलर को तुरंत ठीक किया जाए। गोयल ने कहा वो सुप्रीम कोर्ट में भी इसके बारे में अपना पक्ष रखेंगे। गोयल ने कहा कि उनको लगातार धमकियां मिल रही हैं उनके साथ अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर रहा है जबकि उनके पशु प्रेम में कोई कमी नहीं है और मैंने न कभी कुतों के बारे में और ना कभी कुता खिलाने वालों के बारे में कभी भी एक अपशब्द भी नहीं कहा है।

हम सब पशु प्रेमी हैं किंतु मानव जीवन बहुत महत्वपूर्ण है कुछ लोग मानव जीवन से ज्यादा। इन आवारा कुतों के काटने को प्राथमिकता दे रहे हैं, यह गलत है।आज के संवादाता सम्मेलन में फोनरवा संरक्षक त्रिलोक शर्मा, पवन यादव, विजय भाटी, सुशील यादव, अशोक मिश्रा, देवेंद्र चौहान, लाट साहब लोहिया, संजय चौहान, अशोक शर्मा, उमाशंकर शर्मा, विनोद शर्मा, राजेश सिंह,कोशिंदर यादव, भूषण शर्मा व आरडब्ल्यूए से एन पी सिंह, राघवेंद्र दुबे, अनिल खन्ना, संजीव कुमार आदि अध्यक्ष महासचिव उपस्थित रहे।

सोनभद्र की कवयित्री डॉ. रचना तिवारी हुईं गीत शिरोमणि सम्मान से सम्मानित

सर्वभाषा ट्रस्ट ने स्थापना दिवस पर किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पिछले दिनों हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ प्रकाशक 'सर्व भाषा ट्रस्ट' ने हिंदी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति एवं गीत काव्य के प्रचार-प्रसार, उन्नयन एवं संवर्धन के लिए हिंदी की जानी मानी कवयित्री एवं गीतकार डॉ. रचना तिवारी को गीत शिरोमणि सम्मान से अलंकृत किया गया। डॉ. रचना तिवारी को यह सम्मान ट्रस्ट के स्थापना दिवस पर आयोजित एक विशिष्ट समारोह में प्रदान किया गया। यह सम्मान हिंदी के प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डॉ. ओम निश्चल, डॉ. राहुल एवं डॉ. वेदमित्र शुक्ल के सान्निध्य में सर्वभाषा ट्रस्ट के सचिव केशव मोहन पाण्डेय ने भेंट किया। शाल से स्वागत के साथ उन्हें सम्मान प्रशस्तिफलक भेंट किया गया। इस अवसर पर उपस्थित कवियों निशा भास्कर, सरिता शौकील, ओम निश्चल, डॉ. वेदमित्र शुक्ल व केशव पाण्डेय ने अपनी रचनाओं का पाठ भी किया । डॉ. रचना तिवारी के गीतों की भावमयी प्रस्तुति को विशेष सराहना मिली। ज्ञातव्य है कि डॉ. रचना तिवारी पिछले तीन दशकों से हिंदी कविता, गीत, ग़ज़ल एवं अन्य छंदोबद्ध विधाओं के लिए समर्पित हैं, तथा पिछले कई सालों से सोनभद्र में गीत लेखनी संस्था का संचालन कर रही हैं। विभिन्न काव्य विधाओं में डॉ. रचना तिवारी के कई संग्रह : 'चली हूँ गीतों को गुनगुनाने, सपना खरीदो बाबूजी, निवाला क्यों नहीं मिलता, प्यास पानी से बड़ी है, ज़िंदा खत, झील में उतरी नाव, मेरे गीत तुम्हीं से जनमे व कुछ प्रेम मिलने के लिए नहीं होते' प्रकाशित हो चुके हैं। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष कथाकार अशोक लव ने एक संदेश के जरिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं जिसमें उन्हें हिंदी के परंपरागत काव्यसौष्ठव का सक्षम रचनाकार बताया। सम्मान समारोह के अध्यक्ष डॉ. ओम निश्चल ने डॉ. रचना तिवारी के काव्य संसार में गीत के अप्रतिम अवदान की सराहना की तथा बताया कि वे गीत को अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंचों तक ले गई हैं तथा इसे काव्य-प्रेमियों के मध्य लोकप्रिय बनाने में उनकी महती भूमिका है तथा अब तक वे अनेक सम्मानों- साहित्य गौरव सम्मान- 2010, काका हाथरसी सम्मान-2010, रूपनारायण त्रिपाठी सम्मान-2009, प्रखर सम्मान, झाँसी रानी सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान-2009, मुंशी प्रेमचंद सम्मान एवं हाल ही में आदित्य संस्कृति विशिष्ट सम्मान-2025 से विभूषित हो चुकी हैं। आलोचक डॉ. राहुल ने रचना तिवारी की कविताओं में बिम्बों की अप्रतिम उपस्थिति को उनकी रचनाशीलता की ताकत बताया। हिंदी के लेखक सानेटकार डॉ. वेद मित्र शुक्ल ने डॉ. रचना तिवारी के काव्य-संसार में मौजूद तरलता सहजता और अचूक संप्रेषणीयता की सराहना की। अपने लेखकीय वक्तव्य में डॉ. रचना तिवारी ने सम्मान स्वीकार करते हुए ट्रस्ट की दीर्घजीविता की कामना की तथा कहा कि वे सोनभद्र में रह कर माँ भारती की इसी तरह सेवा करती रहेंगी। ट्रस्ट के सचिव केशव मोहन पाण्डेय ने ट्रस्ट के बहुभाषी प्रकाशनों एवं कार्यकलापों की चर्चा की तथा यह सम्मान ग्रहण करने के लिए डॉ. रचना तिवारी के प्रति आभार व्यक्त किया।

12 व 13 सितम्बर को वृहद स्तर पर कार्यशाला का आयोजन हर नागरिक का विचार तय करेगा प्रदेश का भविष्यःडीएम

समर्थ उत्तर प्रदेश पोर्टल पर सुझाव भेज सकेंगे नागरिक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने अवगत कराया है कि समर्थ उत्तर प्रदेश-विकसित उत्तर प्रदेश /2047 अभियान के अंतर्गत तीन महत्त्वपूर्ण संवाद कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें, इस कार्यक्रम में छात्र शिक्षक व्यवसायिक, श्रमिक संगठन, कृषक आम जनमानस के साथ विगत आठ वर्षो में प्रदेश की विकास यात्रा के सम्बन्ध में अवगत कराते हुए राज्य के विकास हेतु रोड मैप पर चर्चा की जायेगी और उनसे फीड बैक लिया जायेगा, उक्त कार्यक्रम दो दिवसीय आयोजित किया जायेगा जनपद में उक्त कार्यक्रम को मूर्त रूप देने हेतु प्रपत्र प्रबुद्ध जन नामित किये गये है अजय कुमार उपाध्याय सेवानिवृत आईएस, रामकृष्ण चतुर्वेद्वी सेवानिवृत आईपीएस, डॉ रजनिश सिंह प्रोफेसर टी0डी0 कालेज जौनपुर, डा0 राकेश बाबू गौतम प्राध्यापक आचार्य नरेन्द्र देव कृषि प्रौद्योगिक विश्विद्यालय कुमारगंज अयोध्या प्रतिभाग करेगें, उक्त प्रबुद्धजन दिनांक 12 सितम्बर को पूर्वान्ह 11:00 बजे से मध्यान्ह 12:00 बजे तक कलेक्ट्रेट सभागार सोनभद्र में सभी 12 सेक्टर के अधिकारी एवं व्यसायि तथा उद्यमियों से संवाद करेगें उद्यमियों राष्ट्रीय एवं राज्य पुरूस्कार प्राप्त महानुभावों एवं ख्यात प्राप्त बुद्धजीवों के साथ संवाद करेगें मध्यान्ह 12:00 बजे से 1:30 बजे तक कृषकों एफपीओं के सदस्यों व कृषि विज्ञानिकों के साथ संवाद करेगें, अपरान्ह 03:00 बजे से 05:00 बजे तक राजकीय इंजिनियरिंग कालेज चुर्क सोनभद्र में उपस्थित छात्रों प्राध्यापको व शिक्षाविदों के साथ संवाद करेगें इसके पश्चात दिनांक 13 सितम्बर को विकास खण्ड चोपन में समूह की महिलाओं के साथ पूर्वान्ह 11:00 बजे से मध्यान्ह 12:00 बजे से संवाद करेंगे, इसके पश्चात अपरान्ह 12:30 बजे से 01:30 बजे तक राजकीय डिग्री कालेज ओबरा में उपस्थित छात्रों प्राध्यापकों व शिक्षाविदों के साथ संवाद करेगें, अपरान्ह 03:00 बजे से 05:00 बजे तक ओबरा तापीय परियोजना ओबरा के वीआईपी गेस्ट हाउस में श्रमिक संगठानों के साथ संवाद करेगें।

अधिवक्ताओं को भी मिले कैशलेश इलाज की व्यवस्था-राकेश शरण मिश्र,अधिवक्ताओं के हितों को अनदेखा कर रही है यूपी सरकार

संयुक्त अधिवक्ता महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखा पत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रदेश के अधिवक्ताओं के लिए सदैव आवाज बुलंद करने वाले संयुक्त अधिवक्ता महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष राकेश शरण मिश्र ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को पत्र लिखकर प्रदेश के अधिवक्ताओं के लिए कैशलेश इलाज की मांग की है।

श्री मिश्र ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखे पत्र में मांग की है कि जब वेतन भोगी कर्मचारियों को आप कैशलेश इलाज की सुविधा देने की घोषणा कर सकते है तो अधिवक्ताओं के लिए क्यों नहीं। उन्होंने सवाल खड़ा करते हुए कहा है कि अधिवक्ता गैर वेतन भोगी होता है और उसकी दिन की या महीने की कोई निश्चित आमदनी नहीं होती जिससे वो भविष्य की परेशानियों के बारे में कुछ धन बचा कर रख सके। आज शिक्षा और मेडिकल में सबसे अधिक पैसा लग रहा है। ऐसे में कोई अधिवक्ता या उसके घर वाले किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित होते है तो उसका सब कुछ दांव पर लग जाता है। इलाज के अभाव में प्रतिवर्ष हजारों अधिवक्ता दम तोड़ रहे है। अभी हाल ही में जनपद सोनभद्र के वरिष्ठ अधिवक्ता हरिओम सेठ जो ओबरा तहसील में वकालत करते थे महीनों इलाज के अभाव में तड़पते रहे और अंततः पैसे के अभाव में उनकी इलाज ठीक से ना हो पाने के कारण उनका दुखद निधन हो गया और ना तो सरकार से उन्हें कोई मदद मिली और ना ही बार कौंसिल से। इसलिए संयुक्त अधिवक्ता महासंघ आपसे मांग करता है कि आप जल्द से जल्द प्रदेश के अधिवक्ताओं को पच्चीस लाख की कैशलेश इलाज की व्यवस्था करने और उत्तरप्रदेश में अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू करने की घोषणा करें अन्यथा प्रदेश के अधिवक्ताओं को अपनी इन दोनों मांगों के लिए प्रदेश व्यापी आंदोलन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा जिसकी समस्त जिम्मेवारी उत्तर प्रदेश सरकार की होगी।

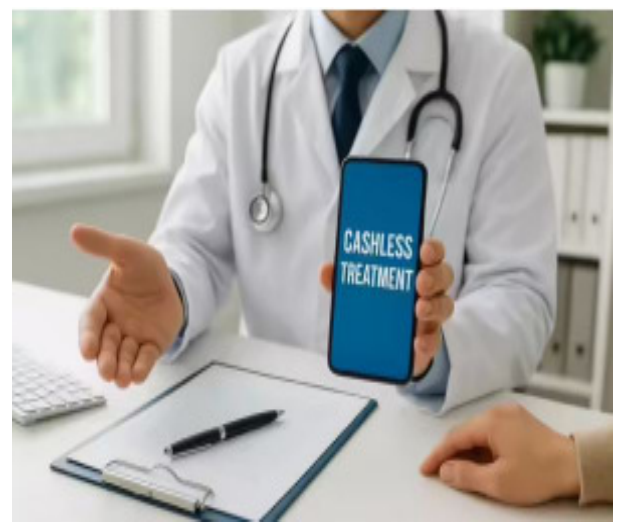

प्राथमिक शिक्षक संघ ने कि आप विरोध प्रदर्शन सौंपा ज्ञापन,पीएम एवं सीएम नामित ज्ञापन डीएम प्रतिनिधि को देखकर बुलंद की आवाज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ के आहवान पर एवं उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के बैनर तले जनपद शाखा सोनभद्र के जिलाध्यक्ष योगेश पाण्डेय के नेतृत्व में हजारों की संख्या में जिला कलेक्ट्रेट पर शिक्षक/शिक्षिकाएं उपस्थित होकर शिक्षा का अधिकार अधिनियम में संशोधन कर अधिनियम लागू होने से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को टीईटी उत्तीर्ण होने की अनिवार्यता से मुक्त करने के संबंध में प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। जिला अध्यक्ष योगेश पाण्डेय ने कहा कि 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम में शिक्षक नियुक्त होने अथवा पदोन्नति और हेतु टेट टीईटी उत्तीर्णिता को अनिवार्य किया गया था। जिसमें अधिनियम लागू होने से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को भी टेट (टीईटी) उत्तीर्ण होना अनिवार्य होने से संबंधित कोई आदेश दिशा निर्देश नहीं था, नहीं भारत सरकार अथवा किसी राज्य सरकार द्वारा इस दिशा में कोई कार्यवाही की गई थी परंतु हाल में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गलत तथ्यों के आधार पर यह आदेश जारी किया गया है कि देश में शिक्षक बने रहने के लिए टेट (टीईटी) उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा। जिसमें मात्र 5 साल की सेवा बचे लोगों को छूट दी गई है परंतु पदोन्नति में उन्हें भी छूट नहीं दी गई है। जिससे प्रदेश के लगभग 8 लाख शिक्षक/शिक्षिकाओं की नौकरी, प्रोन्नत पर खतरा उत्पन्न हो गया है वहीं टेट (टीईटी) उत्तीर्ण करने हेतु माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2 वर्षों का समय दिया गया है। ऐसे में प्रदेश के वरिष्ठ शिक्षक/ शिक्षिकाओं को टेट (टीईटी) उत्तीर्ण होना संभव प्रतीत नहीं होता है एवं तथ्य विहीन है, न्याय संगत नहीं है, ऐसी स्थिति में आपसे हम सभी शिक्षक/शिक्षिकाएं संगठन के माध्यम से प्रेषित अनुरोध पत्र द्वारा आपसे विनम्रता पूर्वक निवेदन करते हैं कि उक्त मामले में हस्तक्षेप कर अधिनियम में आवश्यक संशोधन कर शिक्षक/शिक्षिकाओं को टेट (टीईटी) उत्तीर्ण की अनिवार्यता से मुक्त किया जाए तो महती कृपा होगी। अगर ऐसा नहीं हुआ तो राष्ट्र एवं प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर आगे एक बड़ा आंदोलन एवं शिक्षक समाज रोड पर उतरने को बाध्य होगा।' ज्ञापन के समय जिला संरक्षक जय प्रकाश राय, जिला महामंत्री हुकूम चन्द्र, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सर्वेश गुप्ता, सयुक्तमंत्री राजेश कुमार जायसवाल, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, जिला प्रवक्ता अभिषेक मिश्रा, अमित कुमार चौबे,चन्द्रजीत सिंह ,उपाध्यक्ष नवीन गुप्ता, अभिषेक कुमार,राघवेंद्र कुमार त्रिपाठी, भोलानाथ अग्रहरि , अरविंद कुमार चौहान ,अध्यक्ष रविभूषण,अध्यक्ष शिवम् अग्रवाल , वरिष्ठ शिक्षक विनोद चौबे,संतोष सिंह,मायकांत शर्मा,गिरीश चंद द्विवेदी, मीना भारती,संगीत सिंह, किरण बाला,मनोरमा सिंह, मृत्युंजय, शशांक चतुर्वेदी, पंकज पांडेय,बिहारी लाल गुप्ता,संजयसिंहा,सुनीता , अन्य समस्त संगठनों के पदाधिकारी , एवं सम्मानित शिक्षक /शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

ओरिएंटेशन वर्कशॉप में पारदर्शिता, गुणवत्ता और जवाबदेही सुनिश्चित करने पर जोर,दिव्यांगजनों और महिलाओं की सहभागिता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा

प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पूरी निष्ठा से संचालित करने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र/लखनऊ। मिशन मुख्यालय में आयोजित ओरिएंटेशन वर्कशॉप के सातवें दिन मिशन निदेशक पुलकित खरे ने प्रशिक्षण प्रदाताओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार की मंशा अनुरूप 'सबको हुनर, सबको काम' के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन पूरी निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। यह वर्कशॉप प्रशिक्षण प्रदाताओं से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से पहली बार आयोजित की गई है, ताकि प्रशिक्षण संचालन में आ रही चुनौतियों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जा सके। मिशन निदेशक ने जानकारी दी कि मंत्री कपिल देव अग्रवाल के मार्गदर्शन में सभी जिलों में प्रशिक्षण केंद्रों का उद्घाटन स्थानीय विधायकगणों द्वारा कराया जाएगा। साथ ही सभी प्रशिक्षण बैचों का लाइव टेलीकास्ट सुनिश्चित किया जाएगा, जिससे पारदर्शिता, गुणवत्ता और जवाबदेही को मजबूती मिलेगी। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार सामाजिक समावेशन को प्राथमिकता दे रही है। इसके अंतर्गत सभी प्रशिक्षण बैचों में दिव्यांगजन हेतु 5 प्रतिशत आरक्षण तथा महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सहभागिता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्कशॉप में प्रशिक्षण प्रदाताओं के पूर्व प्रदर्शन की समीक्षा की गई तथा युवाओं को स्थानीय उद्योगों में रोजगार से जोड़ने हेतु रणनीति पर भी चर्चा हुई। यह भी अवगत कराया गया कि आगामी समय में हर 2 से 3 महीनों के अंतराल पर इस प्रकार की ओरिएंटेशन वर्कशॉप आयोजित की जाएंगी, ताकि प्रशिक्षण प्रदाताओं से प्रत्यक्ष संवाद और समस्याओं के त्वरित समाधान सुनिश्चित हो सकें। इस अवसर पर अपर मिशन निदेशक प्रिया सिंह ने प्रशिक्षण प्रदाताओं को निर्देशित किया कि वे पूर्ण पारदर्शिता, निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करें। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कोई समझौता न हो तथा मिशन से प्रशिक्षित युवाओं को स्थानीय उद्योगों में ही रोजगार दिलाया जाए, जिससे उन्हें अपने ही क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के अवसर प्राप्त हों। कार्यशाला के तकनीकी सत्र में सहायक प्रबंधक विजय नामदेव ने मिशन पोर्टल की कार्यप्रणाली, डिजिटल पारदर्शिता, लाइव मॉनिटरिंग, डेटा प्रबंधन और प्लेसमेंट ट्रैकिंग जैसे विषयों पर विस्तृत प्रस्तुति दी।

अगर किसी से दगा करोगे, तुझे मोहब्बत नहीं मिलेगीः कौशल्या कुमारी चौहान

पुण्यतिथि पर याद किए गए राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक राममूर्ति यादव,हिनौता, मधुपुर में स्मृति व्याख्यान माला व काव्य गोष्ठी का हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक राममूर्ति यादव की पुण्यतिथि पर बुधवार को स्मृति व्याख्यान माला व कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने राममूर्ति जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को याद किया।यह आयोजन हिनौता, मधुपुर स्थित उनके आवास पर सुपुत्र शिक्षक बलराम कृष्ण यादव के संयोजन में किया गया। वाणी वंदना करते हुए कवयित्री कौशल्या कुमारी चौहान ने राह दिखा दे माँ, ज्योति जला दे माँ तथा श्रृंगार की पंक्ति अगर किसी से दगा करोगे, तुझे मोहब्बत नहीं मिलेगी सुनाकर वातावरण सृजित किया। ओज के सशक्त हस्ताक्षर प्रभात सिंह चंदेल ने देश को नमन करते हुए,मजहब एक हिंदुस्तान होना चाहिए सुनाकर हुंकार भरी। प्रदुम्न त्रिपाठी एडवोकेट शहीद स्मारक करारी ने, पड़े जरूरत जब भी वतन को कफन बांध हम आयेंगे, काश लहू का इक इक कतरा भारत माँ के काम आये सुनाकर देश को नमन किया। दिवाकर दिवेदी मेघ ने, आदमी आज कितना रह गया है आदमी, आदमी के पास से अब जा रहा है आदमी सुनाकर गतिज उर्जा दिये। अशोक तिवारी ने तुमसे हमने प्यार किया और क्या किया, यूँ जिंदगी गुजार दिया और क्या किया सुनाकर वाहवाही लूटी। गोपाल कुशवाहा ने बुढ़िया माई रचना सुनाकर बुजुर्गों का दर्द उकेरा और विसंगति को मुखर स्वर दिया सराहे गये। राधेश्याम पाल ने बेहतरीन गजल हूँ मुसाफिर चार दिन का गाँव छोड़े जा रहा हूँ सुनाकर लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कौशल्या कुमारी चौहान व संचालन गोपाल कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर कमल देव यादव इंजीनियर, कामता प्रसाद एडवोकेट, रामकिशन यादव, विनोद कुमार सिंह, रवि भूषण सिंह, बलराम यादव प्रधान, अनिल सिंह, नंदकिशोर, कमलेश कुमार सिंह, रामनरेश आदि रहे।

शिक्षा बच्चों को ज्ञान कौशल और मूल्यों से भर देती हैःवंदना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)सोनभद्र। सामाजिक संस्था इनर व्हील क्लब आर्या रॉबर्ट्सगंज की तरफ से जय ज्योति विद्यालय चुर्क की 8 वीं कक्षा की छात्रा दीक्षा चौबे को इनर व्हील क्लब आर्या उसकी शिक्षा के लिए 1 वर्ष तक अयोजित कर रहा है.सपने वह नहीं है जो हम सोते समय देखते हैं सपने वह है जो हमें सोने नहीं देते शिक्षा वह रक्षक है जो सपनों को साकार में बदल सकती है। शिक्षा बच्चों को ज्ञान कौशल और मूल्यों से भर देती है जैसे उनका समग्र विकास होता है आत्मविश्वास बढ़ता है और वह समाज में साकारात्मक योगदान दे पाते हैं जिसे वहां एक जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं. इसमें आर्या क्लब की अध्यक्ष वंदना वर्मा सचिव पूजा अग्रहरि हैं उपाध्याय रितु अग्रवाल कोषाध्यक्ष सीमा अग्रवाल सहित निधि गुप्ता प्रकाश कौर स्तुति अग्रहरि आदि सम्मिलित हुए।

स्मृति में पेड़ लगाकर श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक संवेदना की व्यक्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रॉबर्ट्सगंज सदर विधानसभा में मंगलवार को अस्सी दिनों से चल रहा पेड़ हैं तो प्राण हैं अभियान चरका महादेव मंदिर नेवारी डुमरिया में किया गया पौध रोपण वही मौजूद ग्रामीणों में सैकड़ों पौधों का वितरण किया गया । वहीं श्री मिश्रा ने बताया कि रॉबर्ट्सगंज में 'पेड़ हैं तो प्राण हैं' अभियान के तहत पर्यावरण संरक्षण का कार्य तेजी से चल रहा है।मंगलवार को रॉबर्ट्सगंज विधानसभा क्षेत्र 401 के खुइझा में परिवारिक सदस्य स्वर्गीय शौरभ शुक्ल के स्मृति में पेड़ लगाया गया साथ ही भरसही में गिरजा शुक्ला के पिता के स्मृति में पेड़ लगाकर श्रद्धांजलि अर्पित किया व शोक संवेदना व्यक्त किया व बेलगाई गांव में पौध रोपण किया गया। इस दौरान ग्रामीणों को सैकड़ों पौधे भी बांटे गए। अभियान के संयोजक युवा समाजसेवी संदीप मिश्रा जनपदवासियों के साथ मिलकर इस मुहिम को आगे बढ़ा रहे हैं। उनका कहना है कि पौधे हमारे जीवन के लिए प्राणवायु देते हैं। आज का पौध रोपण आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ पेड़ लगाना ही काफी नहीं है। पेड़ों की सुरक्षा और देखभाल करना भी हमारी जिम्मेदारी है। रॉबर्ट्सगंज विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों में पहले भी पौधारोपण किया जा चुका है। लोगों को पेड़ों की रक्षा का संकल्प भी दिलाया जा रहा है। स्थानीय निवासी भी उत्साह के साथ इस अभियान से जुड़ रहे हैं कार्यक्रम में प्रदुम्न बिन्द मोनू शर्मा राज कनौजिया विजय कुमार बिन्द शिव कुमार बिन्द सल्मान अली सोनू जाटव प्रदुमन शर्मा अरविन्द विश्वकर्मा सहित सैकड़ों लोगों ने भाग लिया।

एशिया कप में भारत ने पाकिस्तान को 56फीसदी मैच हराए,पिछले 10 साल में पाक महज 1 मैच जीता; दोनों कभी फाइनल में नहीं भिड़े

नयी दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच एशिया कप में ग्रुप स्टेज का महामुकाबला 14 सितंबर को खेला जाएगा। टीम इंडिया ने यूएई के खिलाफ 9 विकेट की जीत से अपने अभियान की शुरुआत की। वहीं पाकिस्तान आज ओमान के खिलाफ टूर्नामेंट में अपना पहला मैच खेलेगी।टूर्नामेंट इतिहास में दोनों ने आपस में 18 मैच खेले। 10 में भारत और 6 में पाकिस्तान को जीत मिली। हालांकि, पिछले 10 साल में राइवलरी एकतरफा सी हो गई, जहां पाकिस्तान को 7 मुकाबलों में महज 1 बार जीत नसीब हो सकी। एशिया कप 1984 से खेला जा रहा है। भारत ने 8 और पाकिस्तान ने 2 खिताब जीते हैं, लेकिन दोनों टीमें कभी फाइनल में आमने-सामने नहीं हो सकीं। स्टोरी में जानते हैं दोनों प्रतिद्वंद्वी टीमों का एशिया कप में एक-दूसरे के खिलाफ कैसा रिकॉर्ड है।1984 में पहली बार एशिया कप खेला गया, तब भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका ने ही हिस्सा लिया। भारत ने शारजाह में पाकिस्तान को 54 रन से हराया और फिर राउंड रॉबिन फॉर्मेट जीतकर खिताब भी उठा लिया। तब श्रीलंका रनर-अप और पाकिस्तान तीसरे नंबर पर रही थी। 1984 से दोनों टीमों के बीच वनडे और टी-20 एशिया कप में 18 मैच खेले गए। 56फीसदी यानी 10 में भारत को जीत मिली, वहीं 6 मुकाबले पाकिस्तान के नाम रहे। 1997 और 2023 में दोनों टीमों के बीच 1-1 मुकाबला बेनतीजा भी रहा था।एशिया कप 14 बार वनडे और 2 बार टी-20 फॉर्मेट में खेला गया। इस दौरान वनडे फॉर्मेट में दोनों के बीच 15 मैच हुए। 8 में भारत और 5 में पाकिस्तान को जीत मिली।

इस दौरान 2 मुकाबले बेनतीजा भी रहे। यानी भारत ने पाकिस्तान को 53फीसदी वनडे मुकाबले हराए।टी-20 एशिया कप में दोनों टीमें 2016 में मीरपुर के मैदान पर पहली बार भिड़ी थीं। तब भारत ने 5 विकेट से मुकाबला जीता था। 2022 में दोनों के बीच दुबई में 2 टी-20 खेले गए। पहला मैच भारत ने और दूसरा मैच पाकिस्तान ने 5 विकेट से जीता। पिछले 10 साल

में यह पाकिस्तान की भारत पर इकलौती जीत भी थी। इस दौरान भारत ने 5 मैच जीत लिए।भारत से विराट कोहली एशिया कप में पाकिस्तान के खिलाफ टॉप रन स्कोरर हैं। उनके नाम महज 8 मुकाबलों में 68 की औसत से 476 रन हैं। इनमें 2 सेंचुरी और 1 फिफ्टी शामिल हैं। विराट ने 2023 एशिया कप में पाकिस्तान के खिलाफ पिछले मुकाबले में भी शतक लगाया था। वे 2012 में 183 रन की पारी से भारत को जीत भी दिला चुके हैं। ओवरऑल टॉप स्कोरर में विराट के बाद रोहित शर्मा ने 474 रन बनाए हैं। हालांकि, दोनों ही प्लेयर्स टी-20 रिटायरमेंट के कारण एशिया कप टीम का हिस्सा नहीं हैं। मौजूदा स्क्वॉड में पाकिस्तान के खिलाफ टी-20 एशिया कप में हार्दिक पंड्या ने 33 और सूर्यकुमार यादव ने 31 रन बनाए हैं।

ऐसे में भारत की युवा बैटिंग लाइन-अप के सामने मुश्किल चैलेंज मिल सकता है। पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप में भारत के टॉप विकेट टेकर भुवनेश्वर कुमार हैं। उनके नाम 5 मैचों में 10 विकेट हैं। हालांकि, वे स्क्वॉड का हिस्सा नहीं हैं। उनके बाद स्पिनर कुलदीप यादव और हार्दिक पंड्या ने 8-8 विकेट हैं। दोनों ही पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप खेलते नजर आएंगे। टी-20 एशिया कप में पाकिस्तान के खिलाफ हार्दिक ने 7 और अर्शदीप सिंह ने 3 विकेट लिए हैं।एशिया कप में भारत के खिलाफ पाकिस्तान के एक ही बल्लेबाज ने 400 प्लस रन बनाए हैं। शोएब मलिक के नाम 6 मुकाबलों में 432 रन हैं। युनूस खान 238 रन के साथ दूसरे टॉप स्कोरर हैं। मौजूदा स्क्वॉड में शामिल फखर जमान ने 6 मैचों में 83 रन बनाए हैं। टी-20 एशिया कप में मोहम्मद रिजवान 114 रन बनाकर टॉप पर हैं, लेकिन वे भी टीम में नहीं हैं। उनके बाद मोहम्मद नवाज ने 2 मुकाबलों में 43 रन बनाए हैं। 2022 के एशिया कप में उन्होंने ही 42 रन की पारी खेलकर पाकिस्तान को भारत के खिलाफ जीत दिलाई थी।एशिया कप में भारत के खिलाफ पाकिस्तान के टॉप गेंदबाज स्पिनर सईद अजमल हैं, उन्होंने 4 मुकाबलों में 8 विकेट लिए हैं। उनके बाद नसीम शाह ने 6 और शाहीन शाह अफरीदी ने 5 विकेट लिए हैं। नसीम को स्क्वॉड में जगह नहीं मिली, लेकिन शाहीन और हारिस रऊफ 14 सितंबर को मैच खेलते नजर आ सकते हैं। टी-20 में मोहम्मद नवाज 4 विकेट लेकर टॉप पर हैं।एशिया कप का 17वां एडिशन यूएई में खेला जा रहा है। अब तक 16 बार हुए टूर्नामेंट को भारत और पाकिस्तान दोनों ने 1-1 बार बॉयकॉट किया। 15 में से 8 बार भारत ने टूर्नामेंट जीता और 3 बार टीम रनर-अप भी रही। यानी भारत महज 4 बार ही फाइनल में जगह नहीं बना सका। इन सभी में पाकिस्तान ने खिताबी मुकाबला खेला। पाकिस्तान ने 15 एडिशन में 2 ही बार टाइटल जीता था। टीम ने 2000 में श्रीलंका और 2012 में बांग्लादेश को फाइनल हराकर खिताब जीता। टीम 2022, 2014 और 1986 में रनर-अप भी रही, लेकिन कभी भारत से खिताबी भिड़ंत नहीं कर पाई। 48 साल पुराने टूर्नामेंट में इस बार 8 टीमें हिस्सा ले रही हैं, लेकिन क्या इस बार दोनों चीर-प्रतिद्वंद्वी टीमें एक साथ फाइनल तक का सफर तय कर पाएंगी?

ट्रिपल एच करने जा रहे बड़ा ऐलान, बदल जाएगा डब्लूडब्लूई का इतिहास, फैंस को मिलेगा तगड़ा झटका

नयी दिल्ली। डब्लूडब्लूई से जुड़ी एक बड़ी खबर आ रही है। डब्लूडब्लूई के चीफ कंटेंट ऑफिसर ट्रिपल एच ने सोशल मीडिया पर एक बड़े ऐलान का संकेत दिया है, जिसे आज यानी 12 सितंबर को डब्लूडब्लूई के यूट्यूब चैनल पर दोपहर 3:00 बजे / 12:00 बजे पर लाइव किया जाएगा। इस खबर ने रेसलिंग फैंस के बीच अटकलों का बाजार गर्म कर दिया है। यह भारतीय समयानुसार देर रात 12:30 बजे

स्ट्रीम होगा। रेसलमेनिया के लिए हो सकता है ऐलान- अटकलें लगाई जा रही हैं कि डब्लूडब्लूई अपनी सबसे बड़े सालाना इवेंट रेसलमेनिया को पहली बार उत्तरी अमेरिका से बाहर आयोजित करने की घोषणा कर सकता है। खबर है कि 2027 में रेसलमेनिया 43 सऊदी अरब में हो सकता है, जिसे सऊदीमेनिया नाम दिए जाने की चर्चा भी चल रही है। अगर यह सच होता है तो यह डब्लूडब्लूई के इतिहास में एक बड़ा बदलाव होगा। हालांकि कुछ फैंस को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रहा है क्योंकि सालों से यह इवेंट अमेरिका में ही होता रहा है।

इस घोषणा में कई बड़े सितारे शामिल होंगे, जिनमें ट्रिपल एच, द अंडरटेकर, शॉन माइकल्स, सैथ रॉलिन्स, लोगान पॉल, बियांका बेलेयर, लिव मॉर्गन, स्टेफनी वेकर और शार्लेट फ्लेयर जैसे बड़े नाम शामिल हैं। इतने बड़े नामों की मौजूदगी से यह साफ है कि यह घोषणा वाकई में बहुत खास होने वाली है। किसी छोटे ऐलान के लिए डब्लूडब्लूई इतने बड़े नामों को परेशान नहीं करता। ट्रिपल एच ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, 'मैंने तुमसे कहा था कि हम खेल बदल देंगे और हम तो अभी शुरुआत कर रहे हैं।' इस बयान से लगता है कि डब्लूडब्लूई कुछ ऐसा करने जा रहा है जो भविष्य में कंपनी के लिए गेम चेंजर साबित हो सकता है।

हालांकि, रेसलमेनिया के सऊदी अरब जाने की खबर के अलावा एक और चर्चा भी चल रही है। कुछ फैंस का मानना है कि यह घोषणा द रॉक और जॉन सीना के बीच एक बड़े मुकाबले के बारे में हो सकती है, जो इस साल के अंत में हो सकता है।

भारत-पाकिस्तान मैच पर देश में अलग-अलग राय,आईपीएल चेयरमैन ने कहा हमें खेलना ही होगा, पंजाब किंग्स ने पोस्ट से पाकिस्तानी झंडा हटाया

नयी दिल्ली। एशिया कप में 14 सितंबर को भारत और पाकिस्तान के बीच मैच होने वाला है। दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में होने वाले इस मुकाबले को लेकर भारत में अलग-अलग राय सामने आ रही है। पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान की क्रिकेट टीमों के बीच यह पहला मुकाबला है। कई पूर्व क्रिकेटर, राजनैतिक दल और फैंस इसका विरोध कर रहे हैं। वहीं,बीसीसीआई के कुछ अधिकारी और फैंस का एक वर्ग इस मैच के पक्ष में है। मुकाबले से 2 दिन पहले शुक्रवार को आईपीएल चेयरमैन अरुण धूमल ने कहा है- 'सरकार ने पाकिस्तान के साथ खेल संबंधों को लेकर स्थिति स्पष्ट कर दी है। एसीसी और आईसीसी टूर्नामेंटों में हमें पाकिस्तान से खेलना ही होगा। इधर, शिवसेना विधायक आदित्य ठाकरे ने कहा- 'जिस पाकिस्तान ने हम पर मसाइलें दागी। हमारे देश में आतंक फैला रहा है। पहलगाम पर निर्दोष लोगों को मारा। बीसीसीआई उस पाकिस्तान के खिलाफ खेलने को लेकर उत्साहित क्यो है?' एक दिन पहले पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने कहा था- 'भारत और पाकिस्तान के आपसी संबंध बेहतर होने तक

आपस में क्रिकेट या व्यापार नहीं होना चाहिए।' इससे पहले हरभजन की टीम इंडिया चैंपियंस ने जुलाई में इंग्लैंड में हुई वर्ल्ड लीजेंड्स चैंपियनशिप में पाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल नहीं खेला था।एक दिन पहले पंजाब किंग्स ने भारत-पाकिस्तान मैच को लेकर सोशल पोस्ट की थी। इस पोस्ट में मैच की डेट, वेन्यू और टाइम सब दिए गए हैं, लेकिन पाकिस्तान का झंडा गायब है। झंडे की जगह खाली छोड़ी गई है। इस पर फैंस अलग-अलग प्रतिक्रिया दे रहे हैं।एक दिन पहले सुप्रीम कोर्ट में भारत-पाकिस्तान मैच पर रोक लगाने की मांग की गई थी, हालांकि न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी और न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई की पीठ ने इस मामले की सुनवाई करने से इनकार कर दिया और कहा कि यह सिर्फ एक मैच है।पहलगाम में आतंकी हमले के बाद क्रिकेट एशिया कप में भारत के पाकिस्तान से खेलने का विरोध हो रहा है। यहां तक कि पाकिस्तान बिहार के राजगीर में भारत की मेजबानी में हो रहे हॉकी एशिया कप से हट गया है। इस संबंध में मानसून सत्र में लोकसभा में भी सवाल उठा था। पूर्व क्रिकेटर्स की भारतीय टीम ने वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में पाकिस्तान से खेलने से इनकार कर दिया था। भारत-पाकिस्तान में 3 मैच संभव- एशिया कप में भारत-पाकिस्तान के बीच 3 मुकाबले हो सकते है। पहला मैच 14 सितंबर को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खेला जाएगा। आगे जानिए 2 मैच और कैसे संभव। दूसरा मैचः एशिया कप में लीग स्टेज के बाद सुपर-4 राउंड होगा। भारत-पाकिस्तान के सुपर-4 राउंड में पहुंचने पर 21 सितंबर को भारत-पाकिस्तान की दूसरी भिड़ंत हो सकती है। तीसरा मैच : अगर दोनों टीमें फाइनल में पहुंचती हैं, तो 28 सितंबर को भारत-पाकिस्तान के बीच एशिया कप में तीसरा मुकाबला खेला जाएगा।

बाहर के कपड़े पहनकर सीधा बेड पर? न करें ये गलती, घर आते ही पहले बदलें कपड़े, डर्मेटोलॉजिस्ट से जानें ये क्यों जरूरी

नयी दिल्ली। दिनभर की थकान के बाद घर लौटते ही

पहला ख्याल यह आता है कि बिस्तर मिले और लेट जाएं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जिन कपड़ों को पहनकर आप ऑफिस, बाजार या मेट्रो से गुजरते हैं, वही कपड़े सीधे आपके बिस्तर पर पहुंच जाएं तो क्या होगा? कई लोग इसे बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करते और मानते हैं कि बाहर के कपड़े

गंदगी और कीटाणु लेकर आते हैं, जो नींद और स्वास्थ्य दोनों को प्रभावित कर सकते हैं। वहीं कुछ लोग कहते हैं कि यह बिल्कुल सामान्य बात है। इससे कोई खतरा नहीं है। समझते हैं सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- क्या सच में बाहर के कपड़े इतने गंदे होते हैं? जवाब- हां, बाहर पहने गए कपड़े घर के मुकाबले ज्यादा गंदे हो सकते हैं। जब आप सड़कों, ऑफिस, बाजार या पब्लिक प्लेस से होकर गुजरते हैं तो आपके कपड़े धूल, मिट्टी और बैक्टीरिया के संपर्क में आते हैं जो हमें नंगी आंखों से नहीं दिखते हैं। इंटरनेशनल लेवल पर हाइजीन से जुड़े काम देखने वाली संस्था ने घर्ईं छोटे से प्रयोग में पाया गया कि साफ पायजामे की तुलना में बाहर पहने गए जिम कपड़ों या ऑफिस के कपड़ों पर ज्यादा बैक्टीरिया पनपते हैं। यानी, साफ दिखने के बावजूद कपड़ों पर गंदगी मौजूद रहती है। सवाल- बाहर के कपड़ों में कौन-कौन से कीटाणु या गंदगी बिस्तर तक पहुंच सकती है? जवाब- बाहर बहुत सारी गंदगी हवा में उड़ती रहती है, जो हमारे कपड़ों में चिक जाती है। साथ ही पब्लिक प्लेस पर बहुत सारे लोग आते जाते रहते हैं। उनके संपर्क में आने से उनके बैक्टीरिया भी हमारे संपर्क में आ सकते हैं। जैसे मेट्रो स्टेशन के लिफ्ट की स्विच, नल का टैप, ऑफिस के दरवाजे का हैंडल आदि।

बाहर के कपड़े मुख्य रूप से तीन तरह के संक्रमण या गंदगी ला सकते हैं। सवाल- क्या इससे एलर्जी या स्किन प्रॉब्लम हो सकती है?जवाब- हां, बाहर के कपड़े पहनकर बिस्तर पर जाने से एलर्जी या त्वचा संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। जिन

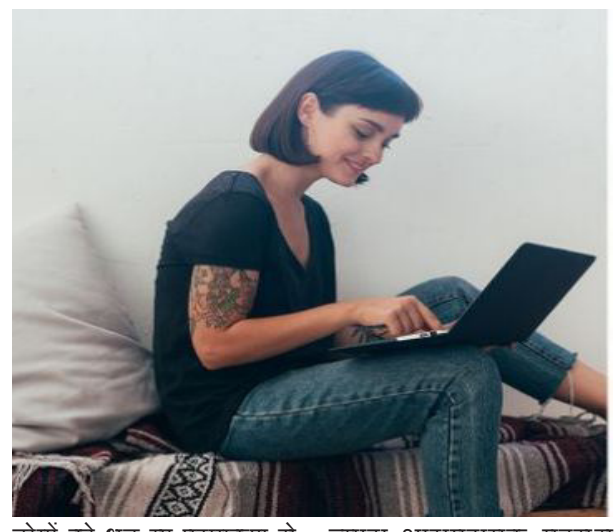

लोगों को धूल या परागकण से एलर्जी है, उनके लिए यह समस्या और बढ़ सकती है। बैक्टीरिया और पसीने के कारण कपड़े स्किन पर रैशेज, खुजली या फंगल इंफेक्शन तक पैदा कर सकते हैं। संवेदनशील त्वचा वाले लोगों के लिए यह और ज्यादा परेशान करने वाला होता है। हालांकि, सामान्य रूप से स्वस्थ लोगों के लिए यह खतरा बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन समय के साथ यह असहजता और स्किन प्रॉब्लम्स बढ़ा सकता है। सवाल- किन लोगों को सबसे ज्यादा सावधानी बरतनी चाहिए? जवाब- हर किसी को सफाई का ध्यान रखना चाहिए, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह और भी जरूरी है। आइए इसे ग्राफिक के जरिए समझते हैं। सवाल- बाहर से लौटकर तुरंत कपड़े बदलना क्यों जरूरी है? जवाब- बाहर के कपड़े बदलने से आप धूल, बैक्टीरिया और एलर्जन को अपने बिस्तर और सोफे तक पहुंचने से रोकते हैं। इससे बिस्तर ज्यादा समय तक साफ और ताजा बना रहता है।मानसिक सुकून भी मिलता है क्योंकि आपको लगता है कि आप एक साफ माहौल में आराम कर रहे हैं। कई एक्सपर्ट मानते हैं कि साफ कपड़ों में सोने से नींद की गुणवत्ता बेहतर हो जाती है। सवाल- क्या कभी-कभी झपकी लेने के लिए बाहर के कपड़ों में बिस्तर पर जाना गलत है?जवाब- नहीं इससे बिस्तर जल्दी गंदा होगा और एलर्जी का खतरा बढ़ सकता है। मानसिक रूप से भी साफ कपड़ों में लेटना ज्यादा आरामदायक महसूस होता है। सवाल- घर और बिस्तर को साफ-सुथरा रखने के लिए कौन-सी बेसिक हाइजीन अपनानी चाहिए? जवाब- घर और बिस्तर को साफ-सुथरा रखने के लिए कुछ बेसिक हाइजीन का ख्याल रखना जरूरी है। सवाल- रोजमर्रा के कपड़े जैसे चादर-ब्लैंकेट कितनी बार धोना चाहिए ताकि संक्रमण से बचा जा सके? जवाब- रोजमर्रा के कपड़े 2-3 बार पहनने के बाद धोने चाहिए। जिम या पसीने वाले कपड़े हर बार धोना जरूरी है। चादर और तकिये का कवर हफ्ते में कम से कम एक बार धोना चाहिए। अगर घर में एलर्जी वाले लोग हैं तो हफ्ते में दो बार भी धो सकते हैं। कंबल और रजाई जैसे कपड़ों की क्लीनिंग सीजन में कम से कम दो से तीन बार होनी चाहिए।

क्या आपको बहुत ज्यादा जम्हाई आती है:हो सकता है इन 7 हेल्थ प्रॉब्लम्स का संकेत

नयी दिल्ली। जम्हाई लेना हमारे शरीर की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह अक्सर थकान, नींद या बोरियत की वजह से होती है। लेकिन अगर लगातार और बिना

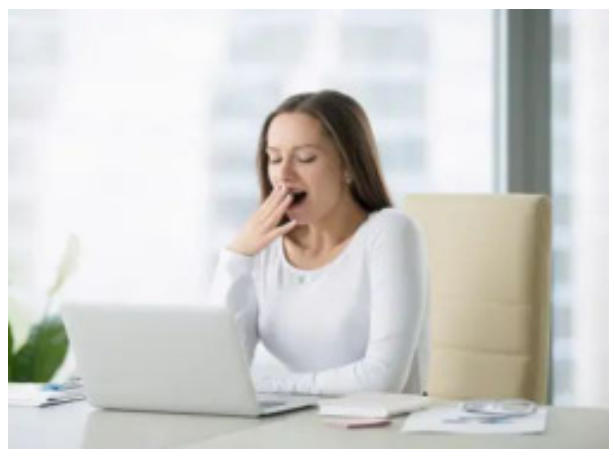

किसी वजह के बहुत ज्यादा जम्हाई आती है तो यह हार्ट डिजीज से लेकर न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर तक किसी अंदरूनी स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकती है। कभी-कभार ऐसा होना तो सामान्य है। लेकिन अगर नियमित रूप से बहुत ज्यादा जम्हाई आती है तो इसे नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। हालांकि कुछ आसान उपायों से इससे राहत मिल सकती है। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, जम्हाई आराम की भावना से जुड़ी होती है। इसे लंबे समय से बोरियत का संकेत माना जाता रहा है। यह संक्रामक भी है क्योंकि जम्हाई के बारे में देखने, सुनने, पढ़ने या यहां तक कि सोचने से भी जम्हाई आ सकती है। मामले को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. संचयन रॉय, सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, दिल्ली जी से। सवाल जवाब के माध्यम से- सवालः जम्हाई क्या है? जवाब- जम्हाई वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपना मुंह चौड़ा खोलकर गहरी सांस अंदर लेता हैं और फिर छोड़ता है। यह ज्यादातर अनजाने में होती है यानी इसे रोकना मुश्किल होता है। अंग्रेजी में इसे ऑसीटेशन कहा जाता है। एक जम्हाई लगभग 4-7 सेकेंड तक चलती है और इसमें गले, मुंह और चेहरे की मांसपेशियां खिंचती हैं। यह अक्सर थकान, नींद या ऊब के कारण होती है। सवाल- उबासी या जम्हाई आने के क्या कारण हैं? जवाब- इसके कई कारण हो सकते हैं, जो अक्सर शरीर और ब्रेन की जरूरतों से जुड़े होते हैं। नींद की कमी- जब पर्याप्त नींद नहीं मिलती तो शरीर थकान महसूस करता है। इस थकान को दूर करने और शरीर को जगाए रखने के लिए उबासी आती है। मानसिक थकान या बोरियत- जब आप किसी नीरस काम में लगे होते हैं या दिमाग थक जाता है तो उबासी आ सकती है। यह दिमाग को फिर से एक्टिव करने का एक तरीका हो सकता है।ऑक्सीजन की कमी- शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने पर भी उबासी आती है ताकि फेफड़ों में ज्यादा हवा भरी जा सके और ब्रेन तक ज्यादा ऑक्सीजन पहुंच सके। संक्रामक उबासी- किसी दूसरे व्यक्ति को उबासी लेते हुए देखने या सुनने पर हमें भी उबासी आ सकती है। यह सामाजिक व्यवहार का एक हिस्सा माना जाता है। कुछ दवाओं के कारण- कुछ खास दवाएं जैसे कि डिप्रेशन या दर्द की दवाएं भी उबासी का कारण बन सकती हैं।

सवाल- बहुत ज्यादा जम्हाई किन स्वास्थ्य समस्याओं का संकेत हो सकती है? जवाब- भले ही जम्हाई आने के सबसे आम कारण थकान, सुस्ती या बोरियत हों। लेकिन यह कुछ अंदरूनी समस्याओं से भी जुड़ी हो सकती है। ऑक्सीजन की कमी- फेफड़ों से जुड़ी बीमारी या स्लीप एप्निया जैसी स्थितियां शरीर में ऑक्सीजन के लेवल को कम कर सकती हैं, जिससे ज्यादा ऑक्सीजन लेने के लिए बार-बार जम्हाई आती है। आयरन की कमी- शरीर में आयरन की कमी होने पर खून में ऑक्सीजन का संचार ठीक से नहीं हो पाता है। इस कमी को पूरा करने के लिए शरीर ज्यादा जम्हाई लेता है। मेटाबॉलिक या लिवर प्रॉब्लम्स- लिवर फेलियर या मेटाबॉलिज्म में गड़बड़ी भी ज्यादा थकान और जम्हाई का कारण बन सकती है। हार्ट संबंधी समस्याएं- कुछ मामलों में बहुत ज्यादा जम्हाई का संबंध हार्ट डिजीज से हो सकता है। यह वेगस नर्व के उत्तेजित होने के कारण हो सकता है। न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर- मिर्गी, मल्टीपल स्क्लेरोसिस या ब्रेन ट्यूमर जैसे न्यूरोलॉजिकल

डिसऑर्डर भी ब्रेन के संकेतों को प्रभावित कर सकती हैं। इससे जम्हाई की प्रक्रिया असामान्य हो जाती है। स्लीप डिसऑर्डर-स्लीप एप्निया के कारण भी बार-बार जम्हाई आ सकती है क्योंकि शरीर को अनिद्रा या दिन के दौरान अचानक आने वाली नींद से जूझना पड़ता है। मेंटल हेल्थ इश्यू- एंग्जाइटी या स्ट्रेस भी बार-बार जम्हाई का कारण बन सकते हैं क्योंकि शरीर भावनात्मक तनाव पर प्रतिक्रिया करता है। सवाल- किस स्थिति में डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है? जवाब- अगर जम्हाई के साथ कुछ अन्य लक्षण भी हों तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। जैसेकि- सीने में दर्द, चक्कर आना या सांस लेने में दिक्कत होना। कमजोरी, सुन्नता या अचानक संतुलन खोना। धुंधला दिखना, कन्फ्यूजन या बोलने में लड़खड़ाहट होना। गंभीर सिरदर्द या बेहोश होना। सवाल- कौन सी चीजें जम्हाई को ट्रिगर कर सकती हैं? जवाब- थकान, भूख, तनाव और किसी को जम्हाई लेते देखना, ये सभी जम्हाई को ट्रिगर करते हैं। सवाल- जम्हाई लेते वक्त कभी-कभी आंखों से पानी क्यों निकलता है? जवाब- जम्हाई के दौरान चेहरे की मांसपेशियां जोर से खिंचती हैं। जब ये मांसपेशियां खिंचती हैं तो आंखों के पास मौजूद आंसू की ग्रंथियों पर दबाव पड़ता है। इस दबाव के कारण ग्रंथियों से आंसू निकलने लगते हैं। सवाल- अगर जम्हाई ज्यादा आती है तो इससे राहत पाने के लिए क्या करना चाहिए? जवाब- अगर बिना किसी खास कारण के बहुत ज्यादा जम्हाई आती है तो कुछ आसान उपायों से इसे कम कर सकते हैं।सवाल- एक दिन में कितनी बार जम्हाई लेना सामान्य है? जवाब- आमतौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति दिन में 5 से 10 बार जम्हाई लेता है, जिसे सामान्य माना जाता है। हालांकि यह संख्या हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकती है। यह समय, थकान, नींद की पर निर्भर है। अगर दिन में 15 मिनट के अंदर 3 से ज्यादा बार जम्हाई आती है या यह इतनी ज्यादा है कि रोजमर्रा के काम में रुकावट आने लगे तो इसे असामान्य माना जा सकता है।

समझना होगा कि हम मशीनों पर गुस्सा नहीं कर सकते

'डिंग डॉन्ग'.. दरवाजे बाईं ओर खुलेंगे' क्या ये आवाज और इस घोषणा से आप परिचित हैं? जी हां, ये आम तौर पर मेट्रो ट्रेन में सुनाई देती है। इस शनिवार को जब बेंगलुरु में 'ग्रीन लाइन' मेट्रो सर्विस के बाजारहल्ली स्टेशन पर मेट्रो रुकी तो बिल्कुल ऐसी ही घोषणा हुई। यात्रियों ने धैर्य से दरवाजे खुलने का इंतजार किया, क्योंकि ट्रेन के पूरी तरह से रुकने के कुछ सेकंड बाद सिस्टम दरवाजे खोलता है। लेकिन किसी अज्ञात तकनीकी खराबी के कारण मेट्रो के कुछ दरवाजे नहीं खुले। ट्रेन चल पड़ी, जैसे हर स्टॉप के बाद चलती है, बिना यह जाने कि पीछे के डिब्बों में कोई तकनीकी खराबी आ गई है। उतरने को बेताब यात्री स्तब्ध रह गए, उन्होंने वहीं किया, जिसमें वो अच्छे हैं- घबरा गए! इसके बाद कुछ यात्रियों ने दिमाग में खुराफाती विचारों के साथ चीखना शुरू कर दिया और भीड़ भी उनके पीछे हो चली। किसी ने नहीं सोचा कि ये तर्कसंगत है भी या नहीं। और बेंगलुरु भी कोई अलग नहीं था। घबराए यात्री तेजी से भाग कर मेट्रो पायलट (मेट्रो ट्रेन के चालक को पायलट कहा जाता है) के केबिन के पीछे वाले लेडीज कोच में पहुंचे और पायलट केबिन का दरवाजा पीटना शुरू किया, जैसे वो किसी ऐसे 'घोड़े बेचके सोने वाले' रूममेट को जगाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे यह पता नहीं कि घर में आग लगी है। धक्कामुक्की और हंगामे से डरे पायलट ने सोचा कि कुछ भयंकर हुआ है और उसने ब्रेक लगा दिए, जिससे ट्रेन एक निर्जन से स्थान पर जाकर रुक गई। जैसे ही उसने सावधानी से अपने केबिन का गेट खोला, उसके सामने गुस्साए यात्री खड़े थे, जो इस बात का जवाब

मांग रहे थे कि क्यों उन्हें पिछले स्टेशन पर नहीं उतरने दिया गया। इसके बाद कुछ मिनटों तक तीखी नोकझोंक हुई। और आप जानते हैं कि जब भीड़ एकत्रित होती है तो कोई एक व्यक्ति तर्कसंगत तरीके से बात नहीं कर सकता। पायलट ने यह समझाने की विफल कोशिश की कि उसे पीछे हुई समस्या के बारे में पता नहीं था और जब यात्री उसके केबिन के दरवाजे को पीटने लगे तो उसने ब्रेक लगाए। चूंकि वह ट्रेन को वापस पीछे नहीं ले जा सकता था, इसलिए पायलट ने सभी यात्रियों से अपने-अपने डिब्बों में लौटने के लिए कहा। पायलट ने यात्रा फिर शुरू की और अगले स्टेशन पर ट्रेन रोक दी। वही आंदोलनरत यात्री तत्काल इकट्ठा हो गए, पायलट के केबिन की ओर भागे और प्लेटफॉर्म पर खड़े होकर उससे गलती के लिए स्पष्टीकरण मांगने लगे।उनमें से कुछ पिछले स्टेशन पर वापसी के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करने के लिए भी कह रहे थे। लोको पायलट ने पूरा मामला स्टेशन कंट्रोलर को रिपोर्ट किया, जिसने आकर स्थिति संभाली और वापसी की यात्रा में यात्रियों को ट्रेन में चढ़ने में यथासंभव सहायता की।

भारत में अभी 17 शहरों में 17 मेट्रो रेल सिस्टम संचालित हो रहे हैं, जिनकी कुल परिचालन दूरी 939.18 किमी की है। 2025 के अंत तक 18वीं ऐसी सेवा की शुरुआत के साथ ही कुल परिचालन दूरी 1000 किलोमीटर से अधिक हो जाएगी, जिससे हमारा मेट्रो सिस्टम दुनिया का तीसरा सबसे लंबा सिस्टम बन जाएगा। भारत में अर्बन रेल ट्रांजिट सिस्टम का पहला प्रकार उपनगरीय रेल थी, जो 16 अप्रैल 1853 को तत्कालीन बॉम्बे (आज के मुम्बई) में बनी था।कोई यह भी नहीं भूल सकता कि हमारे पास 1873 में कलकत्ता (आज के कोलकाता) में घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली ट्राम सेवा भी थी। आवागमन के मामले में तब से अब तक भारत मशीन और तकनीकी की सहायता से बहुत आगे बढ़ चुका है। विदेशों में ऐसी तकनीकी गड़बड़ियां सामान्य हैं। हाल ही मैंने ऐसी ही एक खराबी न्यूयॉर्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर स्टेशन पर देखी। वहां यात्रियों को जब ये बताया गया कि तकनीकी कारणों से एक सेवा कुछ घंटों के लिए अस्थायी रूप से बाधित रहेगी तो सभी यात्री शांति से स्टेशन के बाहर आ गए। फंडा यह है कि आप मशीनों पर नाराज नहीं हो सकते। तकनीकी और ऊर्जा पर चलने वाली मशीनों की दुनिया में गड़बड़ी तो होगी ही, भले ही बार-बार ना हो। हमें धैर्य विकसित करना होगा और सीखना होगा कि ऐसी स्थितियों पर कैसे प्रतिक्रिया दें। अन्यथा ये दुनिया हम पर हंसेगी।

अब गाजा में युद्ध का अंत चाहते हैं इजराइल के लोग

मैं इजराइल में एक सप्ताह बिताकर लौटा हूं और मैंने वहां 7 अक्टूबर 2023 के बाद पहली बार कुछ नया महसूस किया। इसे एक व्यापक युद्ध-विरोधी आंदोलन कहना तो जल्दबाजी होगी, क्योंकि वह तभी हो सकता है जब सभी इजराइली बंधकों को रिहा कर दिया जाए। लेकिन मैंने इस बात के स्पष्ट संकेत देखे कि बहुतेरे इजराइली लोग- फिर चाहे वे किसी भी विचारधारा के क्यों न हों- इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि यह युद्ध जारी रखना इजराइल के लिए एक आपदा है : नैतिक के साथ ही कूटनीतिक या रणनीतिक रूप से भी।पूर्व प्रधानमंत्री एहुद ओलमर्ट ने समाचार पत्र हारेत्ज में एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और उनके गठबंधन की आलोचना करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ओलमर्ट ने कहा कि इजराइल की सरकार बिना किसी उद्देश्य, लक्ष्य या स्पष्ट योजना के और किसी सफलता की संभावना के बिना ही युद्ध लड़ रही है। उन्होंने कहा, हम गाजा में जो कर रहे हैं, वह विनाशलीला है : नागरिकों की अंधाधुंध, असीमित, क्रूर और आपराधिक हत्या। उनका निष्कर्ष था कि हां, इजराइल युद्ध-अपराध कर रहा है।नेतन्याहू की अपनी दक्षिणपंथी पार्टी के सदस्य एमिट हलेवी जैसे लोग- जो कि युद्ध के कट्टर समर्थक रहे हैं- को लगता है कि क्रियान्वयन में गड़बड़ी हो रही है। हलेवी की विदेश मामलों और रक्षा समिति की सदस्यता नेतन्याहू के गठबंधन द्वारा निलंबित कर दी गई थी, क्योंकि उन्होंने इजराइली रिजर्विस्टों के लिए आपातकालीन कॉल-अप आदेश जारी करने की सरकार की क्षमता का विस्तार करने के प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया था।अपनी बर्खास्तगी के बाद एक अखबार को दिए साक्षात्कार में हलेवी ने कहा : यह युद्ध एक धोखा है। उन्होंने अपनी उपलब्धियों के बारे में हमसे झूठ बोला है। इजराइल 20 महीनों से लड़ रहा है और वह हमास को नष्ट करने में सफल नहीं हो रहा है।वहीं इजराइल के उदारवादी गठबंधन के नेता यायर गोलान ने इजराइल रेडियो पर दिए एक इंटरव्यू में कहा कि अगर हम एक समझदार देश की तरह व्यवहार करना नहीं सीखते हैं, तो इजराइल दक्षिण अफ्रीका की तरह एक बहिष्कृत राष्ट्र बनने की डगर पर है।एक समझदार देश नागरिकों के खिलाफ नहीं लड़ता है, बच्चों को नहीं मारता है और आबा?दियों को अपनी रहने की जगहों से बाहर निकालने का लक्ष्य नहीं रखता है। गोलान- जो खुद गाजा-युद्ध के नायक रह चुके हैं- ने स्पष्ट किया कि वे इजराइली सेना नहीं, उन राजनेताओं को दोष दे रहे हैं, जो युद्ध को ऐसे कारणों से बढ़ा रहे हैं, जिनका राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई लेना-देना नहीं। आज किसी भी स्वतंत्र विदेशी पत्रकार को गाजा से सीधे रिपोर्ट करने की अनुमति नहीं दी जा रही है- इजराइली सेना के बिना। जब युद्ध खत्म होगा और गाजा अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों और फोटोग्राफरों से भर जाएगा, तब जाकर वहां से मृत्यु और विनाश की पूरी रिपोर्ट सामने आएंगी। वह इजराइल और यहूदी-समुदाय के लिए बहुत बुरा समय होगा। यही कारण है कि गोलान ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि अब रुक जाएं, युद्ध-विराम करें, बंधकों को वापस लाएं, गाजा में एक अंतरराष्ट्रीय और अरब सेना भेजें और बाद में हमास के अवशेषों से निपटें। उन्होंने कहा, जब आप पहले ही गड्ढे में हों तो और खुदाई करना बंद कर दें। लेकिन नेतन्याहू खुदाई जारी रखने पर अड़े हुए हैं। उनका दावा है कि वे हमास पर दबाव बनाकर इजराइली बंधकों को लौटा ला सकते हैं। वहीं उनके गठबंधन के धुर-राष्ट्रवादी सदस्यों ने भी उनसे कहा है कि अगर वे युद्ध बंद कर देते हैं, तो उनका तख्तापलट कर दिया जाएगा। इसलिए इजराइली सेना अधिक से अधिक सेकंडरी-टारगेट्स पर हमला कर रही है, और नतीजा यह है कि हर दिन नागरिक मारे जा रहे हैं। हारेत्ज के सैन्य विश्लेषक अमोस हारेल ने बताया कि हमास नेताओं के खिलाफ चलाए जा रहे कई बमबारी अभियान वास्तव में सामूहिक हत्या के प्रयास हैं, अकसर तब, जब वे अपने परिवार के साथ होते हैं। ये अधिकारी अब निजी घरों या अपार्टमेंट इमारतों में नहीं रहते। वे अमूमन हजारों नागरिकों के साथ भीड़ भरे कैंपों में रहते हैं।

सेना चाहे जितनी सावधानी बरते, इन हमलों के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर आम नागरिकों की हत्याएं होती हैं। लेकिन इजराइल के लोग गाजा में हताहतों की बढ़ती संख्या के चलते ही युद्ध के खिलाफ नहीं हो रहे हैं। हकीकत यह है कि युद्ध ने पूरे समाज को थका दिया है। इसके संकेत आज आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या से लेकर टूटते परिवारों और ढहते व्यवसायों तक सब तरफ नजर आ रहे हैं।गाजा में भी युद्ध-विरोधी आंदोलन जोर पकड़ता दिख रहा है। फिलिस्तीनी सेंटर फॉर पॉलिसी एंड सर्वे रिसर्च के सर्वे में पाया गया कि गाजा पट्टी के 48फीसदी लोगों ने हाल में कई जगहों पर हुए हमास-विरोधी प्रदर्शनों का समर्थन किया हैं।

परमात्मा पर जितना भरोसा, संसार से उतने ही कम धोखे

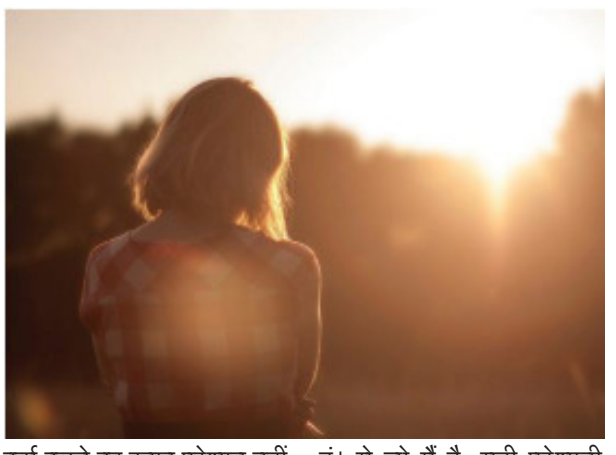

मनुष्य को कर्म नहीं भटकाते, कर्म करने का दबाव परेशान नहीं करता, उसे कर्त्ताभाव परेशान करता है। कर्म करने और कर्त्ताभाव में अंतर है। कर्त्ताभाव का अर्थ है मैं यह काम कर रहा हूं। ये जो मैं है, यही परेशानी का कारण है। ये सही है कि हम ही कर रहे हैं, पर कर्त्ताभाव के अभाव का अर्थ है कोई एक परम शक्ति है, जो हम से करा रही है, तो हम कर रहे हैं। आजकल हमारे जीवन में सहज ही डिजिटल मीडिया के कारण कई वैद्य-डॉक्टरों की भरमार हो गई है। स्वास्थ्य को लेकर जानकारियों की झड़ी लगी हुई है और हम सब भी कुछ न कुछ करने के लिए इस सबमें उतर जाते हैं। झूठे आश्वासन, अतार्किक ?चिकित्सा, अंधविश्वास से भरी धार्मिक कथाओं, ?फिजूल के किस्सों आदि के लपेटे में न आएं। ये अप्रत्याशित समाधान जो सोशल मीडिया से पेश किए जा रहे हैं, इनके प्रति अतिरिक्त सावधान रहें। परमात्मा पर जितना भरोसा होगा, उतनी सावधानी जीवन में आ जाएगी और संसार से उतने ही धोखे कम मिलेंगे।

बच्चों के लिए ऐसे खिलौने चुनें, जो तुरंत फेंक न दिए जाएं

मुझे पता है, आप क्या सोच रहे हैं? दरअसल, ये कहना आसान है और करना मुश्किल। खासकर तब जब कोई व्यक्ति ट्रेन की बोगी में कई सारी गेंदें और गुब्बारा लटकाए घूम रहा है और बार-बार आकर कह रहा है कि कौन मुन्ना रो रहा है? मैं उसे दो सेकंड में खुश कर दूंगा और वह एक रबर की पारदर्शी गेंद रेलवे बर्थ के बीच फेंकता है और गेंद अचानक कई रंगों में चमकने लगती है। और बच्चा कहता है कि 'मुझे वो बॉल चाहिए।' बच्चे को समझाने की कोशिश करें कि यह 48 घंटे से ज्यादा काम नहीं करेगी तो सेल्समैन आप पर टूट पड़ता है कि सर, मैं गारंटी देता हूं कि मुन्ना आपकी वापसी की यात्रा में भी इसी से खेलेगा।मैं हमेशा इसी ट्रेन में रहता हूं। अगली गर्मियों में भी यदि ये गेंद काम नहीं करे आप आकर इसे वापस कर सकते हो। मैं बिना कोई सवाल पूछे इसे बदल दूंगा।' इस बीच आप देखेंगे कि बच्चा पहले ही बॉल से खेलने लग गया है और उसे दूसरी बर्थों पर लुढ़काने लगा है।आपके पास इसे खरीदने के अलावा कोई चारा नहीं रहता। और ऐसी खरीदारी कर चुके आपमें से अधिकांश लोग मुझसे सहमत होंगे कि ऐसी गेंदें एक यात्रा में भी नहीं चल पाती। या तो बच्चा इसे खो देता है या फिर गेंद की वो चमकीली लाइटें बंद हो जाती है, जो फर्श पर मारने के बाद बच्चे को आकर्षित करती थीं।ज्यादातर दूसरा वाला कारण अधिक सामान्य है। अब यह बॉल आपके बैग में रखी हुई

एसी कार से घर वापसी की यात्रा कर रही है। और घर पर ये बॉल या तो भुला दी गई है या किसी कोने में अव्यवस्थित सी पड़ी है और कुछ समय बाद कूड़ेदान में चली जाती है!अगर आपके घर में बच्चे हैं तो मुझसे यह मत कहिएगा कि आपके घर में ऐसा कुछ नहीं हुआ। यही कारण है कि मैंने इस हैडलाइन के साथ शुरूआत की थी कि बच्चों के लिए ऐसे खिलौने चुनें, जो तुरंत फेंक न दिए जाएं। उपहार विशेषज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे उपयोगिता, बच्चे के विकास और खुशी को प्राथमिकता दी जाए। वे ऐसे गिफ्ट की सलाह देते हैं, जो खेल और रचनात्मकता को बढ़ावा दे और प्लास्टिक से बचने की राय देते हैं। यहां उम्र के अनुसार कुछ सुझाव पेश हैं।4 वर्ष उम्र वालों के लिएः हिसार में एक स्कूल चलाने वाले मेरे दोस्त हरिपाल पिलानिया ने मुझे लकड़ी के क्यूब्स दिए, जिनसे बच्चे रूबिक क्यूब बना सकते हैं। यकीन मानें, यह गेम आज भी मेरे घर पर 10 साल से है और जो बच्चे मेरे घर आते हैं, बिना थके इससे खेले हैं, चाहे फिर वह 10 साल के हों।6 वर्ष उम्र वालों के लिएः कैट एंड रैट थीम वाले कार्ड गेम। मैंने इसे अमेरिका से खरीदा था। बच्चे ताश खेलने वाले बड़ों की नकल पसंद करते हैं। अकेली बिल्ली किसी चूहे पर भारी पड़ जाए या चूहों का एक समूह बिल्ली को घेर ले, यह वाकई मजेदार खेल है। यहां तक कि हमारी उम्र के लोग भी इसे खेल सकते हैं। मुझे बताओ कि ' रैट-ए-टैट कैट' जैसे गेम खेलने का किसका मन नहीं करेगा?8 वर्ष उम्र वालों के लिएः कई सारे ऐसे कलरफुल जर्नल्स हैं, जो प्रश्नों से भरे होते हैं, उनमें इलस्ट्रेशन और ड्रॉइंग के लिए संकेत होते हैं- उदाहरण के लिए 'यदि मेरे पास एक रोबोट होता तो मैं इसे प्रोग्राम करने के लिए कहता.(ऐसी चीजें मेरे दिमाग में है)10 वर्ष उम्र वालों के लिएः नए बेकर्स और उत्सुक कुक्स के लिए शेफ इन ट्रेनिंग एक गेम है। इसमें मिनी व्हिस्क, स्पेचुला, नापने वाला कप और कई सारी चीजें होती हैं। यह उन्हें अंडे फेंटने और सलाद सजाने जैसे कुछ काम सीखने में मदद करता है। फंडा यह है कि अलग-अलग उम्र के लिए ऐसा सही उपहार चुनना, जिसे वे संभाल कर रखें और ये आसान काम नहीं है। सबसे पहले हमें खुद को रचनात्मक होना पड़ेगा और उससे अधिक उपयोगिता के बारे में सोचना होगा कि वह गिफ्ट उसे बोर ना करे। यदि आपके पास कुछ सुझाव हैं, तो शेयर करें, ताकि मैं सभी पाठकों को इस बारे में बता सकूं।

अर्थव्यवस्था में सोने का और बेहतर उपयोग कैसे करें?

आज भारतीय परिवारों के पास दुनिया के दस सबसे बड़े केंद्रीय बैंकों- अमेरिका, जर्मनी, रूस, फ्रांस, चीन, इटली, स्विट्जरलैंड, जापान, तुर्किये और खुद भारत के स्वर्ण भंडारों से भी अधिक सोना है! भारतीय घरों में लगभग 25,000 टन सोना रखा हुआ है। यह अमेरिकी सरकार के स्वर्ण भंडार (8,133 टन) का तीन गुना और भारतीय रिजर्व बैंक (879 टन) के स्वर्ण भंडार का लगभग 30 गुना है।आज की कीमतों के हिसाब से भारत के घरेलू सोने की कीमत कितनी होगी? सोने के मूल्य लंबे समय से बढ़ रहे हैं, लेकिन हाल के वर्षों में भू-राजनीतिक उथल-पुथल के कारण इनमें उछाल आया है। लगभग एक लाख रुपए (1,200 डॉलर) प्रति तोला (10 ग्राम) की वर्तमान कीमत के हिसाब से भारतीय घरों में रखे 25,000 टन सोने का मूल्य लगभग 3 ट्रिलियन डॉलर ठहरता है। यह भारत की 2025 की जीडीपी 4.19 ट्रिलियन डॉलर का लगभग 75 प्रतिशत है।अनुमान है कि इनमें भी भारतीय महिलाओं के पास ही 24,000 टन से ज्यादा सोना है। यह अमेरिका सहित जर्मनी (3,300 टन), इटली (2,450 टन), फ्रांस (2,400 टन) और रूस (1,900 टन) के केंद्रीय बैंकों के सोने के भंडार से ज्यादा है। ऑक्सफोर्ड गोल्ड ग्रुप की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय महिलाओं के पास दुनिया के कुल सोने का 11 प्रतिशत हिस्सा है।सोने से भारतीयों के इस असीम लगाव की वजह क्या है? इसे एक सुरक्षित और स्थिर निवेश माना जाता है। पिछले 25 वर्षों में ही सोने की कीमत 4,000 रुपए प्रति 10 ग्राम से बढ़कर लगभग 1,00,000 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गई है- यानी 25 वर्षों में 25 गुना वृद्धि।

चक्रवृद्धि आधार पर तो सोने का मूल्य प्रति वर्ष लगभग 14 प्रतिशत बढ़ा है और यह लगभग हर पांच साल में दोगुना हो रहा है।इसकी तुलना में बीएसई सेंसेक्स 2000 से 2025 के बीच 6,000 से बढ़कर 80,000 से अधिक अंकों तक पहुंचा है- यानी 25 वर्षों में लगभग 14 गुना वृद्धि। यह 12 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) बताता है।लंबी अवधि में सोना इक्विटी से भी बेहतर प्रदर्शन करता है। स्टॉक के विपरीत, सोने की कीमतें कम अस्थिर होती हैं। दुनिया की सबसे रूढ़िवादी निवेशकों में से एक भारतीय महिलाओं को यह बात अच्छी तरह से पता है।सोने ने भारतीय परिवारों को शादियों के लिए पैसे जुटाने और दिवालिया होने से बचाने में मदद की है। लेकिन वित्तीय सुरक्षा के लिए रखे गए एक डेड-एसेट के बजाय भारत की अर्थव्यवस्था में सोने का अधिक प्रोडक्टिव उपयोग कैसे किया जा सकता है?आरबीआई की स्वर्ण निवेश योजना को सीमित सफलता मिली है। सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड का उद्देश्य सोना रखने का विकल्प प्रदान करना है। जैसा कि आरबीआई कहता है, सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड एक बेहतर विकल्प प्रदान करता है। इसमें स्टोरेज का जोखिम और लागत समाप्त हो जाती है।निवेशकों को मैच्योरिटी के समय सोने के बाजार मूल्य और आवधिक ब्याज का आश्वासन दिया जाता है। आभूषण के रूप में सोने के उपयोग के मामले में भी सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड समस्याओं से मुक्त है। लेकिन भारतीयों में भौतिक सोने का आकर्षण इतना प्रबल है कि सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड पूरी तरह से लोकप्रिय नहीं हो पाया है।भारत ने 2024-25 में 58.01 अरब डॉलर मूल्य के सोने का आयात किया। तस्करी को कम करने के उद्देश्य से आयात शुल्क में 15 से 6 प्रतिशत की कटौती ने 2023-24 में सोने के आयात को 27 प्रतिशत बढ़ाने में मदद की।2024-25 में भारत का व्यापारिक और सेवा व्यापार में कुल घाटा 94.26 अरब डॉलर था। इसलिए 2024-25 में भारत के आयात में 58.01 अरब डॉलर का सोना भारत के व्यापार घाटे का एक प्रमुख घटक है। वैसे भारत के आयात बिल में सबसे बड़ा घटक कच्चा तेल है, जिसका 2024-25 में 133 अरब डॉलर का योगदान था। सोने का आयात कच्चे तेल के आयात का लगभग आधा है और इसे नियंत्रित करना आसान होना चाहिए। लेकिन भारतीय परिवारों की हर साल अधिक से अधिक सोना खरीदने की अतृप्त भूख ने भारत के व्यापार घाटे को बढ़ा दिया है। सोने के प्रति आकर्षण आर्थिक के साथ ही सांस्कृतिक और भावनात्मक भी है। चूंकि भारतीय महिलाओं के पास 3 ट्रिलियन डॉलर मूल्य का 24,000 टन से अधिक सोना है और पिछले वित्तीय वर्ष में भी उन्होंने 58 अरब डॉलर मूल्य का अनुमानित 600 टन सोना खरीदा है, इसलिए सोने की कीमतों में उछाल बने रहने की संभावना है।सोने का आयात कच्चे तेल के आयात का लगभग आधा है और इसे नियंत्रित करना आसान होना चाहिए। लेकिन भारतीय परिवारों की हर साल अधिक से अधिक सोना खरीदने की अतृप्त भूख ने भारत के व्यापार घाटे को बढ़ा दिया है। (ये लेखक के अपने विचार हैं।)

'चुपचाप भुगतने दो' की कला में आलोचना झेलने का तरीका छिपा है!

सैकड़ों सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भरी दुनिया में किसी को भी अपनी राय व्यक्त करने के लिए दरवाजे हमेशा खुले हुए हैं, लेकिन हर विषय पर अपनी विशेष टिप्पणी देना तो जैसे कई लोगों का शगल बनता जा रहा है। चाहे उन्हें उस क्षेत्र का ज्ञान हो या न हो। वे हर चीज पर टीका-टिप्पणी करते हैं और किसी भी बात को तिल का ताड़ बना सकते हैं। अगर आप भी उन लोगों में से हैं जो अपने अच्छे काम के बावजूद भी लोगों की शिकायतों की बौछार से परेशान हो जाते हैं, तो यह कहानी आपके लिए है।जयपुर में एक महिला हैं, जो एक पेइंग गेस्ट हाउस चलाती हैं। उनका एक पुश्तैनी घर है, जिसमें 10-12 बड़े कमरे हैं। उन्होंने हर कमरे में 3 बिस्तर लगा रखे हैं। उनके पेइंग गेस्ट हाउस में भोजन भी मिलता है। उन्हें खाना खिलाने का बहुत शौक है। वे बड़े मन से खाना बनाती और खिलाती हैं। उनके यहां इतना शानदार भोजन मिलता है कि कोई बढ़िया से बढ़िया शेफ भी वैसा नहीं बना सकता। उनके पेइंग गेस्ट हाउस में ज़्यादातर नौकरी करने वाले लोग और छात्र रहते हैं। सुबह का नाश्ता और रात का भोजन तो सभी लोग करते ही हैं। और जिसे ज़रूरत होती है, वे दोपहर का भोजन पैक करके भी देती हैं। लेकिन उनके यहां एक बड़ा अजीब नियम है। हर महीने में सिर्फ 28 दिन ही भोजन बनता है। बाकी 2 या 3 दिन सबको होटल में खाना पड़ता है। ऐसा नहीं है कि आप पेइंग गेस्ट हाउस की रसोई में खुद कुछ बना लें। रसोई उन 2-3 दिनों के लिए पूरी

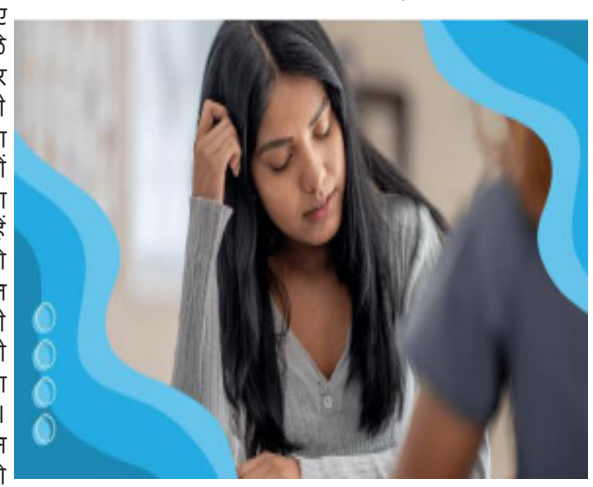

तरह से बंद रहती है। हर महीने के आखिरी तीन दिन मेस बंद रहता है। सभी को होटल में खाना पड़ता है, और चाय भी बाहर जाकर पीनी होती है।जब किसी ने पूछा कि यह क्या अजीब नियम है? आपकी रसोई केवल 28 दिन ही क्यों चलती है? वे बोलीं, 'शुरू में यह नियम नहीं था। मैं इसी तरह, इतने ही प्यार से खाना बनाती और खिलाती थी। पर उनकी शिकायतें कभी खत्म ही नहीं होती थीं। कभी यह कमी है, कभी वह कमी है- हमेशा असंतुष्ट और आलोचना करते रहते थे। इसलिए तंग आकर मैंने यह 28 दिन वाला नियम बना दिया। 28 दिन प्यार से खिलाओ और बाकी 2-3 दिन बोल दो कि जाओ, बाहर खाओ। उन 3 दिनों में, उन्हें नानी याद आ जाती है। उन्हें आटे-दाल का भाव पता चल जाता है। उन्हें पता चल जाता है कि बाहर कितना महंगा और कितना घटिया खाना मिलता है। दो घूंट चाय भी 15-20 रुपये की मिलती है। उन्हें मेरी कीमत ही इन 3 दिनों में पता चलती है। इसलिए बाकी 28 दिन वे बहुत कायदे में रहते हैं।'यह वाकिया मुझे तब आया, जब मुझे शनिवार की सुबह दैनिक भास्कर के पाठक 70 वर्षीय शारदा और उनके 75 वर्षीय पति सीताराम अग्रवाल का ईमेल मिला। वे रायपुर के तेलीबांधा से हैं। उन्होंने लिखा कि कैसे को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी के समिति सदस्यों की, वहां के रहवासी बिना वजह आलोचना करते हैं। और रहवासी, समिति सदस्यों से ऐसे पेश आते हैं, मानो वे सैलरी पर रखे हुए कोई कर्मचारी हों, जबकि वे लोग तो स्वेच्छा से अपनी सेवाएं दे रहे हैं।उन्होंने दुखी होकर बताया कि अमूमन सभी हाउसिंग सोसायटी के यही हाल हैं, जहां अगर कॉलेनी में किसी भी सुविधा में कमी या उसका अभाव दिखता है, तो रहवासी आपे से बाहर हो जाते हैं। सीताराम जी ने मेरे साथ फोन पर बातचीत में बताया कि इससे असंतोष बढ़ता है और अच्छे दिल से काम करने वाले वॉलेंटियर भी सामाजिक कामों से खुद को दूर कर लेते हैं।फंडा यह है कि अगर आप चाहते हैं कि ग्राहक आपकी निष्ठा, प्रतिबद्धता और गुणवत्ता का मूल्य समझें, तो उनकी बात पर कोई प्रतिक्रिया न दें, बस अपनी अनुपस्थिति से उन्हें आपकी प्रतिबद्धता का एहसास कराएं। जब वे चुपचाप भुगतेंगे और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की कमी का अनुभव करेंगे, तभी वे आपका सम्मान करेंगे।

अरबपतियों की संख्या बढ़ना खतरे की घंटी भी हो सकती है

हर साल मैं यह देखने के लिए फोर्ब्स की फेहरिस्त का विश्लेषण करता हूं कि किन देशों में अरबपतियों की सम्पत्ति उनके देश की जीडीपी के ?हिस्से के रूप में बढ़ रही है। या किन देशों में सम्पत्ति अरबपतियों के पारिवारिक साम्राज्य में केंद्रित होकर रह जा रही है या उन बुरे उद्योगों में तब्दील हो रही है, जो उत्पादकता से अधिक भ्रष्टाचार के लिए जाने जाते हैं। जिन देशों में इस तरह के मामले सबसे ज्यादा मिलते हैं, वहां पूंजीवाद-विरोधी विद्रोहों का खतरा भी सबसे अधिक रहता है। इस साल चेतावनियों के संकेत स्वीडन की ओर इशारा कर रहे हैं। भले ही कई प्रगतिशील लोग स्वीडन को एक समाजवादी-स्वर्ग के तौर पर देखते हों, लेकिन वहां अरबपतियों की संपत्ति जीडीपी के 31प्रतिशत तक हो गई है। यह 20 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सर्वाधिक है। आज स्वीडन में 45 अरबपति हैं, जो अमेरिका से प्रति व्यक्ति पैमाने पर डेढ़ गुना अधिक हैं। अब तक के सबसे धनी अमेरिकी जॉन डी. रॉकफेलर हैं, जिनकी सम्पत्ति 1910 के आसपास जीडीपी की 1.5इ से अधिक थी। आज किसी अमेरिकी के पास इतनी दौलत नहीं। आज के रॉकफेलर स्वीडन में हैं, जिनमें से सात की सम्पत्ति जीडीपी के हिस्से में रॉकफेलर से अधिक है। एक कार्यशील अर्थव्यवस्था से अरबपतियों की संतुलित श्रेणी निर्मित होती है, जिसमें रियल एस्टेट और कमोडिटी जैसे सेक्टरों की 'बैड वेल्थ' की तुलना में टेक और मैन्युफैक्चरिंग जैसे उद्योगों की 'गुड वेल्थ' अधिक होती है। ऐसा नहीं है कि रियल एस्टेट और कमोडिटी सेक्टर खराब हैं। लेकिन कार या सॉफ्टवेयर जैसे सेक्टरों की तुलना में उत्पादकता में उनका कम योगदान होता है। लेकिन स्वीडन में आज 'गुड बिलियनेअर्स' की संख्या 'बैड बिलियनेअर्स' की तुलना में आधी रह गई है। स्वीडन भले ही टेक-उद्यमियों के लिए बेहतर स्थान के तौर पर प्रसिद्ध हो, लेकिन इनमें से तीन ही फोर्ब्स की सूची में जगह पा सके हैं। अरबपतियों की सम्पत्ति में 'गुड वेल्थ' का हिस्सा महज 12प्रतिशत है, जो शीर्ष 10 विकसित देशों की सूची में तीसरा सबसे निम्नतम है। स्वीडन ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अनियंत्रित वेलफेयर-स्टेटिज्म के अपने प्रयोग की विफलता के बाद वेल्थ-क्रिएशन को प्रोत्साहित करना शुरू किया। भारी करों के चलते वहां की मशहूर हस्तियां और उद्योगपति पलायन करने लगे। 1990 के दशक की शुरुआत में आए वित्तीय संकटों ने स्वीडन को समाजवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। उसने उच्च आय करों से भुगतान की जाने वाली मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा को समाप्त नहीं किया। लेकिन धन, विरासत, निगमों और अचल संपत्ति पर करों को समाप्त या कम करते हुए कल्याणकारी राज्य का आकार छोटा कर दिया।2000 के दशक का मध्य आते-आते वहां के सुपर-रिच पलायन नहीं कर रहे थे। उलटे वे हावी हो गए थे। स्वीडन के अरबपतियों की लगभग 70प्रतिशत संपत्ति विरासत (इनहेरिटेंस) से आती है, जो फ्रांस और जर्मनी के बाद तीसरी सबसे अधिक है। स्वीडन हाल के वर्षों में अरबपतियों की संख्या में उछाल देखने वाला एकमात्र बड़ा कल्याणकारी राज्य नहीं है। फ्रांस में भी ऐसा हुआ है। लेकिन दोनों में विशेष असंतुलन है। स्वीडन में विकृत कर और ईजी-मनी (आसानी से मिलने वाला कर्ज) है। वह वेतन की तुलना में पूंजी पर बहुत कम कर लगाता है, और कभी-कभी पूंजी पर प्रतिगामी कर लगाता है। स्वीडन ने ब्याज दरों को यूरोपीय औसत से भी नीचे रखा है। कम दरों से संपत्ति की कीमतें बढ़ती हैं, जबकि अमीरों के लिए अधिक लाभ कमाने के लिए पैसे उधार लेना आसान हो जाता है।

टेक्सास में भारतीय मूल के व्यक्ति का सिर काटा,पत्नी और बेटे के सामने हत्या की,टूटी हुई वॉशिंग मशीन को लेकर विवाद हुआ था

टेक्सास। टेक्सास के डलास में बुधवार को 50 वर्षीय भारतीय

मूल के चंद्रमौली नागमल्लैया की उसकी पत्नी और बेटे के सामने बेरहमी से हत्या कर दी गई। पुलिस के अनुसार, टूटी हुई वॉशिंग मशीन को लेकर हुए विवाद के बाद चंद्रमौली का सिर काट कर धड़ से अलग कर दिया गया।झगड़ा तब शुरू हुआ जब चंद्रमौली ने अपने सहकर्मी, 37 वर्षीय योर्डानिस कोबोस-मार्टिनेज को टूटी हुई वॉशिंग मशीन इस्तेमाल नहीं करने के लिए कहा। बहस जल्द ही बढ़ गई, और मार्टिनेज ने चंद्रमौली पर कई बार चाकू से हमला किया। चंद्रमौली मोटल के पार्किंग लॉट में मदद के लिए चिल्लाते हुए भागे, लेकिन योर्डानिस ने उनका पीछा किया और माचेटे (चौड़ा और भारी ब्लेड वाला चाकू) से हमला किया। चंद्रमौली की पत्नी और बेटे, जो मोटल के फ्रंट ऑफिस में थे, बाहर आए और रोकने की कोशिश की, लेकिन योर्डानिस ने उन्हें धक्का दे दिया। इसके बाद उसने चंद्रमौली का सिर काट दिया। इसका सीसीटीवी फुटेज वायरल हो रहा है। वीडियो में दिखा कि हमलावर ने कटे हुए सिर को दो बार लात मारी और फिर उसे कूड़ेदान में फेंक दिया। पुलिस ने बताया कि पास में मौजूद डलास फायर-रेस्क्यू कर्मियों ने खून से सने योर्डानिस का पीछा किया, जिसके बाद पुलिस ने उसे हिरासत में लिया। पुलिस ने कोबोस-मार्टिनेज के पास से खून से सनी एक टी-शर्ट, एक चाकू, नागमल्लैया का फोन और एक की-कार्ड बरामद हुआ। बाद में पूछताछ में उसने हत्या की बात कबूल कर ली। पुलिस ने बताया कि कोबोस-मार्टिनेज का हिंसक आपराधिक इतिहास मिला है। रिकॉर्ड के मुताबिक उसे कैलिफोर्निया में दोषी ठहराया गया था और इससे पहले फ्लोरिडा और ह्यूस्टन में भी गिरफ्तार किया जा चुका था। ह्यूस्टन स्थित भारतीय उच्चायोग ने नागमल्लैया की मौत पर शोक व्यक्त किया है। दूतावास ने एक्स पर एक बयान में कहा, 'हम परिवार के संपर्क में हैं और हर संभव सहायता प्रदान कर रहे हैं। आरोपी डलास पुलिस की हिरासत में है। हम मामले पर बारीकी से नजर रख रहे हैं।'

न कोई शर्त और न ही कोई खेला, भारत के पहले जेट इंजन के लिए 100फीसदी तकनीक देगा फ्रांस, एएमसीए बनेगा सुपर शक्ति

नयी दिल्ली। भारत जल्द ही फ्रांसीसी कंपनी सैफ्रॉन और भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के तहत एक प्रयोगशाला गैस टर्बाइन रिसर्च एस्टेब्लिशमेंट (जीटीआरई) की संयुक्त परियोजना को मंजूरी दे सकता है। इसके तहत 120 किलो न्यूटन इंजन का विकास और प्रोडॅक्शन किया जाएगा। यह भारत के दोहरे इंजन वाले उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए) लड़ाकू विमान को ताकत देगा। बताया जा रहा है कि यह कदम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से स्वतंत्रता दिवस के भाषण के दौरान लाल किले की प्राचीर से जेट इंजन के स्वदेशी विकास का आह्वान करने के तुरंत बाद उठाया गया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी संकेत दिया है कि भारत जल्द ही लड़ाकू विमानों के लिए इंजन विकसित करने के महत्वपूर्ण काम में जुट जाएगा। हिंदुस्तान टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, सैफ्रॉन-जीटीआरई 12 साल की समयसीमा में लड़ाकू इंजनों के नौ प्रोटोटाइप विकसित करेंगे। शुरुआत में इन इंजनों को 120 किलो न्यूटन की शक्ति के साथ विकसित किया जाएगा। मगर, 12 साल की अवधि के अंत तक इनकी क्षमता 140 किलो न्यूटन तक बढ़ जाएगी। इसके लिए फ्रांस की सैफ्रॉन कंपनी डीआरडीओ का साथ देगी। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, जेट इंजन भारत में भारतीय बौद्धिक संपदा अधिकार के तहत विकसित किए जाएंगे, जिसमें सफ्रान इंजन की 100 फीसदी पूरी तकनीक डीआरडीओ को ट्रांसफर करेगा। डीआरडीओ के पास खुद की क्रिस्टल ब्लेड तकनीक भी है। भारत स्वदेशी जेट इंजन के सह-विकास के लिए अपने विश्वसनीय साझेदार फ्रांस की ओर देख रहा है, क्योंकि अमेरिकी प्रस्ताव अक्सर शर्तों के साथ होता है। साथ ही यह अतीत की तरह रणनीतिक व्यवधानों से जूझ रहा होता है। फ्रांस ने 1998 में पोखरण शक्ति परीक्षणों की सीरीज के लिए भारत को मंजूरी नहीं दी थी और भारतीय मिसाइलों के लिए अत्याधुनिक आईएनजीपीएस प्रणालियाँ और मिराज 2000 लड़ाकू विमानों के लिए स्पेयर पार्ट्स प्रदान करना जारी रखा। इंजन में ये ब्लेड आमतौर पर सुपर-मिश्र धातुओं का इस्तेमाल करके एक ही क्रिस्टल से बनाए जाते हैं। ये बेहद कुशल और लंबे समय तक चलने वाले होते हैं। साथ ही ये हाई टेंपरेचर और प्रेशर को भी बेहतर तरीके से झेल जाते हैं। हालांकि, क्रिस्टल ब्लेड तकनीक को हाई पॉवर जेट फाइटर्स के इंजनों के लिए तैयार करना एक अलग स्तर की चुनौती है।

दरअसल, क्रिस्टल ब्लेड तकनीक एक एकल क्रिस्टल (सिंगल क्रिस्टल) ब्लेड बनाने की तकनीक है, जो विमान के टरबाइन इंजन में इस्तेमाल की जाती है। यूरेशियन टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, फ्रांसीसी इंजन बनाने वाली कंपनी ऐंहि और डीआरडीओ दोनों के मिलकर जेट इंजन विकसित करने का विचार पिछले दो सालों से अटका हुआ था। हालांकि, अब नरेंद्र मोदी सरकार ने डीआरडीओ को एक प्रस्ताव लाने के लिए प्रेरित किया है, जिसे जल्द ही शीर्ष स्तर पर हरी झंडी मिल जाएगी। स्वदेशी 120-140 किलोवॉट का जेट इंजन पांचवीं पीढ़ी के दोहरे इंजन वाले एडवांस मीडियम कॉम्बैट एयरक्रॉफ्ट को शक्ति

प्रदान करेगा, जिसका विकास और उत्पादन भारतीय निजी क्षेत्र द्वारा किया जाएगा। इसमें टाटा समूह, एलएंडटी और अडानी डिफेंस सभी राष्ट्रीय प्रयास में योगदान देने के लिए तैयार हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वदेशी विमान इंजन पर ज़ोर दिया क्योंकि यह एक शीर्ष रक्षा तकनीक है जिसके महत्वपूर्ण नागरिक लाभ हैं। यूरेशियन टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के पास अपने विमान इंजन डिजाइन करने और उसे बनाने की क्षमता है। चीन के पास भी अभी तक अपने विमान इंजन नहीं हैं और वह अपने अग्रिम पंक्ति के लड़ाकू विमानों को शक्ति प्रदान करने के लिए रूसी या रिवर्स इंजीनियर्ड इंजनों का उपयोग करता है। भारत का जीटीआरई स्वदेशी इंजन कावेरी के विकास में अभी शुरुआती चरण में ही है।अमेरिकी रक्षा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक भारत को 212 एफ-404 इंजन (113 इंजनों की दूसरी खेप के लिए इसी महीने समझौते पर हस्ताक्षर होने हैं) की आपूर्ति कर रही है। साथ ही वह भारी जीई -414 इंजन की तकनीक भी ट्रांसफर कर रही है, लेकिन तकनीकी ट्रांसफर अभी करीब 70 फीसदी ही है।

गलत रिपोर्टिंग का आरोप लगाकर नेपाल में भारतीय पत्रकारों के साथ मारपीट

नयी दिल्ली। नेपाल में रिपोर्टिंग कर रहे भारतीय पत्रकारों के साथ मारपीट की घटनाएं सामने आई हैं। दो भारतीय पत्रकारों के साथ शुक्रवार को बदसलूकी की गई। एक प्रदर्शनकारी ने रिपब्लिक न्यूज चैनल के पत्रकार राघवेंद्र पांडेय को रिपोर्टिंग करते वक्त थप्पड़ मारा। वहीं न्यूज एजेंसी आईएएनएस के कैमरा पर्सन मान पंकज के साथ भी बदसलूकी की गई। इससे पहले भी इस आंदोलन के दौरान भारतीय पत्रकारों के साथ बदतमीजी की घटनाएं सामने आई हैं। गुरुवार को एक महिला पत्रकार के साथ भी सरेआम बदतमीजी की गई थी। उन्हें रिपोर्टिंग करने से रोक दिया गया था। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि भारतीय मीडिया उनके आंदोलन को गलत तरीके से पेश कर रहा है। वहीं, नेपाल के राष्ट्रपति भवन के बाहर अंतरिम प्रधानमंत्री पद को लेकर कुलमन घीसिंग और हरका सम्पांग के समर्थक आपस में भिड़ गए। इस हिंसा में अब तक मरने वालों का आंकड़ा 51 पहुंच गया है, जबकि 1500 से ज्यादा लोग घायल हैं। नेपाल से जुड़े शुक्रवार के 10 बड़े अपडेट्स- सुशीला कार्की को अंतरिम

पीएम बनाने पर बातचीत अंतिम चरण में है; उन्हें मेयर बालेन शाह का समर्थन भी मिला है। गुरुवार की बैठक में सहमति नहीं बन पाई, क्योंकि एक गुट ने कुलमन घीसिंग का नाम प्रस्तावित किया। आज सेना और जेन ज़ी के बीच बैठक का दूसरा दौर जारी, जिसमें अंतरिम सरकार और संसद भंग करने पर चर्चा होगी। काठमांडू में हालात सामान्य होने लगे हैं। सेना गश्त कर रही है, दुकानें खुलीं और मलबा साफ किया जा रहा है। भारत ने विशेष उड़ानों से नागरिकों को निकालना शुरू किया; आंध्र प्रदेश के 140 लोग सुरक्षित लौटे। कई भारतीय सोनौली और पानीटंकी जैसे बॉर्डर से भी वापस आ रहे हैं। दिल्ली-काठमांडू बस नेपाल में फंसी है, वहीं अयोध्या के 8 यात्री हिलसा में अटके हैं।भारतीय वॉलीबॉल टीम को भारतीय दूतावास ने बचाया; मेंबर उपासना गिल की वीडियो अपील वायरल हुई थी।एसएसबी ने नेपाल की जेल से भागे 67 कैदियों को भारत में घुसने से पकड़ा। गाजियाबाद की राजेश गोला की होटल आगजनी में मौत, होटल कारोबार 50फीसदी गिरा, जरूरी सामान महंगे हुए। केपी शर्मा ओली के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफे को 48 घंटे हो गए हैं, लेकिन अभी तक अंतरिम प्रधानमंत्री तय नहीं हो सका है।

अतीत का झरोखा

भरी संसद में रामविलास ने रखी 11 लाशों की हड्डियां,कुर्मी जमींदारों ने दलितों को गोली मारकर जलाया,हाथी पर बैठकर पहुंचीं इंदिरा रोने लगीं

पटना। देश से आपातकाल हटे ठीक 64 दिन हुए थे। साल था 1977 और तारीख 24 मई। केंद्र में जनता पार्टी की सरकार थी और मोरारजी देसाई पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री।

बिहार में राष्ट्रपति शासन था, लेकिन चुनाव की तारीखें तय हो चुकी थीं। पटना से 90 किलोमीटर दूर एक गांव है बेलछी। 6 बजे थे सुबह के। गांव का दबंग महावीर महतो सिर पर गमछा बांधते हुए बोला- 'मंगरू सुन रहे होष्ठ जा सिंघवा को बुला लाओ।' मंगरू- 'हां काका, अभी जाते हैं।' महावीर ने 30-35 साथियों को बुला लिया। बोला- 'देखो आज सिंघवा बचना नहीं चाहिए। मंगरू गया है उसे बुलाने। लाठी-डंडे लेकर सब गली में खड़े जाओ। मैंने बंदूक-गोली मंगा ली है। आते ही उस पर टूट पड़ना है।' कुछ ही देर में मंगरू, सिंघवा के घर पहुंच गया। खटिया पर बैठा सिंघवा दातुन कर रहा था। मंगरू बोला- 'महावीर काका बुलाए हैं। अभी के अभी घर चलिए।' सिंघवा की पत्नी बोल पड़ी- 'उसके घर से तो दुश्मनी है। कल तो उसके लोग मारने आए थे। उसके घर जाना ठीक नहीं है।' 'अरे चुप रहो, कुछ नहीं होगा'ष्ठ कहते हुए सिंघवा, मंगरू के साथ चल पड़ा। पीछे-पीछे उसके ससुर जानकी पासवान भी साथ हो लिए। सिंघवा जैसे ही महावीर के घर में घुसा, पीछे से एक आदमी ने उसके सिर पर लाठी मार दी। वह पलटकर भागना चाहा, लेकिन 4-5 लोगों ने दबोच लिया। लाठी-डंडे से पीटने लगे।यह देखकर जानकी पासवान भागते-भागते दलित बस्ती पहुंचे। कहने लगे- 'सब चलो, जल्दी चलोष्ठ महावीर ईङ्क्ष सिंघवा को मार रहा है।' 10-15 लड़के लाठी-डंडे लेकर चल पड़े। इधर, महावीर के आदमी घात लगाए थे। उन लोगों ने इन्हें देखते ही फायरिंग शुरू कर दी। ज्यादातर लड़के गोली लगते ही गिर पड़े। इसी बीच दोनाली बंदूक ताने खुद महावीर महतो आ गया। बोला- 'हाथ-पैर बांधकर सबको मेरे सामने ले आओ।' सिंघवा सहित कुल 11 लोगों के हाथ-पैर बांधकर महावीर के सामने खड़ा कर दिया। अब महावीर बोला- 'का रे सिंघवाष्ठ तू बड़का नेता बन रहा है न। खेत जोतेगा हमारा। चलो आज खेत जोतवाते हैं।' तभी बंदूक लिए परशुराम धानुक नाम का एक आदमी हांफते हुए आया। बोला- 'भैया सबको खेत ले चलो। वहां इनके स्वर्ग का इंतजाम कर दिए हैं।' गांव के बाहर एक खेत में मक्के की फसल लगी थी। उसके बीचों-बीच चिता सजाकर रखी थी। परशुराम ने केरोसिन डालकर आग लगा दिया। कुछ ही मिनटों में ऊंची-ऊंची लपटें उठने लगीं। महावीर बोला- 'सब ईङ्क्ष को लाइन में खड़ा करो।' महावीर के आदमियों ने सिंघवा और उसके साथियों को घसीटते हुए ले जाकर लाइन में खड़ा कर दिया। अब महावीर और परशुराम ने बंदूक उठाई...धांय धांय की गूंज से गांव दहल गया। किसी के सिर में गोली लगी, तो किसी का सीना पार कर गई। सब जमीन पर गिर पड़े। महावीर बोला- 'अब इन हरॉक्ष्ङ्क्ष को उठाकर आग में झोंक दो।' महावीर के आदमियों ने सबको आग में डाल दिया। 12 साल का एक लड़का गोली लगने के बाद भी बच गया था। वह बार-बार चिता से उठ जा रहा था। महावीर के आदमी बार-बार पकड़कर उसे आग में फेंक दे रहे थे। गुस्से में महावीर ने गड़ासा उठाया और उसकी गर्दन पर दे मारा। उसकी गर्दन कटकर लटक गई। फिर दो लड़कों ने उठाकर उसे आग में झोंक दिया। कुछ देर बाद परशुराम बोला- 'आग कम पड़ रही है, कंडे-लकड़ी लाओ।' चार-पांच औरतें दौड़-दौड़कर कंडे और लकड़ियां लाने लगीं। दो घंटे बाद महावीर के आदमियों ने लाठी-डंडे से उलट-पलटकर देखा सब जल गए थे। ये बिहार का पहला जातीय नरसंहार था- 'बेलछी नरसंहार'। 11 लोगों को मारकर जला दिया। इनमें 8 दलित और 3 सुनार थे... दोपहर 2.30 बजे गणेश पासवान नाम का चौकीदार भागते-भागते 17 किलोमीटर दूर बाढ़ पुलिस स्टेशन पहुंचा। थाना प्रभारी से बोला- 'साहबष्ठ बेलछी में 11 लोगों को मारकर जला दिया है।' थाना प्रभारी अवधेश मिश्रा ने आवाज लगाई- 'अरे जीप निकालो।' 10-12 पुलिस वालों को लेकर थाना प्रभारी बेलछी के लिए निकल पड़े, लेकिन रास्ते में उनकी गाड़ी का ब्रेक फेल हो गया। कुछ ही दूर पर एक दूसरा थाना था सकसोहरा। थाना प्रभारी ने मदद मांगी, तो सकसोहरा थाना के इंचार्ज बोले- 'बेलछी हमारे इलाके में नहीं आता। हम मदद नहीं कर सकते।' किसी तरह देर शाम बाढ़ पुलिस बेलछी पहुंची। मक्के के खेत में अभी भी आग जल रही थी। भीड़ जुटी थी। मृतकों के घर वाले बदहवास बिलख रहे थे। थाना प्रभारी ने गांव वालों से पूछा- 'ये कत्ल किसने किया, किसी ने देखा क्या?' गमछा बनियान पहने 40 साल के जानकी पासवान बोले- 'साहब...गांव के ही महावीर महतो, परशुराम महतो और उसके 30-35 लोग थे। मैंने अपनी आंखों से देखा है सबको मारते हुए। मेरे दामाद सिंघवा को भी उन लोगों ने मार दिया।'कैसे मारा, पूरी बात बताओ? 'साहबष्ठ सुबह ही मारा। पहले महावीर समझौते के लिए सिंघवा और उसके साथियों को बुलाया। फिर घेरकर फायरिंग करने लगा। मैं भागकर गांव वालों को बुलाने चला गया। फिर देखा कि वो लोग सबको बांधकर खेत ले जा रहे हैं। मैं एक छत पर छिपकर दीवार के पीछे से देख रहा था। महावीर और परशुराम ने सबको गोली मारी, फिर आग में झोंक दिया। जब वे चले गए तो मैंने जाकर चौकीदार गणेश पासवान को ये बात बताई।' क्यों मारा? जानकी पासवान- 'साहबष्ठ गांव के कुर्मी बहुत दबंग हैं। सब जमीन पर उन्हीं लोगों का कब्जा है। हम लोग मजदूरी करते हैं। वो लोग काम करवा के भी मजदूरी नहीं देता है। सिंघवा ने लड़कर कई मजदूरों को पैसा दिलवाया था। इसलिए वे लोग इसके पीछे पड़े थे।' पुलिस ने इसे गैंगवार बताया, लेकिन वामपंथी दल और दलित नेता इसे जातीय नरसंहार बता रहे थे। एक हफ्ते के भीतर पुलिस ने महावीर सहित 20-22 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पटना पुलिस के डिप्टी कमिश्नर के.एन अर्धनारीश्वर ने जांच संभाली। उन्होंने महावीर महतो की कॉलर पकड़ते हुए पूछा- 'बता, क्यों मारा सबको?' ठसक भरी आवाज में महावीर बोला- 'मैंने कुछ नहीं किया। वो उनकी आपसी लड़ाई थी।' डिप्टी कमिश्नर- 'ये ऐसे मानेगा नहीं। हाथ-पैर बांधकर इसे उल्टा लटका दो।' तीन-चार सिपाहियों ने महावीर के हाथ-पैर बांध दिए। डिप्टी कमिश्नर ने जैसे ही हंटर उठाया, महावीर कांपने लगा। बोल पड़ा- 'साहब मारो मत, सब बताता हूं।''साहब... 2-3 दिन पहले हमारा एक आदमी सिंघवा के खेत से 5 मन धान चुरा लिया था। सिंघवा उसे पीटते हुए थाने ले जा रहा था। मैंने 5 मन धान देकर उसे छुड़ा लिया। फिर घर पर अपने लोगों को बुलाया और कहा कि धान चुराने से कुछ नहीं होगा। हमें सिंघवा को ही खत्म करना होगा। अगले दिन हमने सिंघवा पर हमला कर दिया। उधर से उसके लोग भी गोली चलाने लगे। रातभर लड़ाई चलती रही। वो लोग एक मकान में छुप गए थे। सुबह मैंने चाल चली और सिंघवा को सुलह के लिए बुला लिया। वो जैसे ही आया हमारे आदमी उस पर टूट पड़े।' बेलछी के जानकी पासवान की गवाही पर पुलिस ने महावीर महतो, परशुराम धानुक सहित 31 लोगों पर हत्या, अपहरण, आगजनी जैसी धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। जून 1977 में बिहार विधानसभा चुनाव हुए। 5 साल पहले कुल 324 में से 167 सीटें जीतने वाली कांग्रेस 57 सीटों पर सिमट गई। वहीं, नई नवेली जनता पार्टी ने 214 सीटें जीत लीं। यानी दो तिहाई सीटें। 24 जून 1977 को जनता पार्टी के कर्पूरी ठाकुर बिहार के मुख्यमंत्री बने। उन्होंने भी बेलछी कांड को जातीय नरसंहार नहीं माना। जनता पार्टी की लहर के बावजूद एक युवा नेता हार गया। नेता थे नीतीश कुमार। दरअसल, नीतीश नालंदा जिले की हरनौत से चुनावी डेब्यू कर रहे थे। हरनौत, बेलछी से 10-12 किलोमीटर ही दूर है। नीतीश उसी कुर्मी समुदाय से हैं, जिस पर नरसंहार का आरोप लगा था। हरनौत में कुर्मियों का दबदबा भी था। भोला सिंह, जो कभी नीतीश के साथी रहे, चुनाव में उनके खिलाफ उतर गए। भोला अपनी रैलियों में आरोपियों को बेगुनाह बताने लगे। जबकि नीतीश ने पीड़ितों का साथ दिया। इससे नाराज कुर्मी समुदाय भोला के लिए लामबंद हो गया। नीतीश 6 हजार वोट से हार गए। जब राम विलास पासवान ने लोकसभा में बेलछी नरसंहार की अधजली हड्डियां दिखाईं बेलछी का मुद्दा लोकसभा में भी गरमाया हुआ था। गृहमंत्री चौधरी चरण सिंह ने सदन में कहा- 'ये दो गैंग के बीच वर्चस्व का मामला है। इसमें कास्ट एंगल नहीं है।' इस पर उनकी पार्टी के दलित सांसदों ने ही हंगामा कर दिया। विवाद बढ़ा तो जनता पार्टी के दलित नेता रामधन की अगुआई में फैक्ट फाइंडिंग टीम बेलछी भेजी गई। इसमें पहली बार सांसद बने रामविलास पासवान भी थे। 13 जुलाई 1977...रामविलास लोकसभा में बोलने के लिए खड़े हुए। शुरुआती कुछ मिनट उन्होंने आपातकाल और कांग्रेस के खिलाफ बोला। फिर अचानक सदन के पटल पर एक पोटली खोल दी। उसमें इंसानी अधजली हड्डियां थीं। सब हैरान रह गए कि ये किसकी हड्डियां हैंष्ठ रामविलास बोले- 'ये अस्थियां बेलछी नरसंहार में मारे गए लोगों की हैं। हमारे गृहमंत्री चौधरी चरण सिंह बहुत सीधे-सादे व्यक्ति हैं। वे अनुभवी हैं, लेकिन उन्होंने नौकरशाहों के तैयार किए गए बयान को आंख मूंदकर पेश कर दिया। अगर ये नरसंहार आपसी रंजिश था, तो मृतकों के खिलाफ एक भी आपराधिक मामला पहले से क्यों नहीं दर्ज था? क्या सिंघवा कभी जेल गए? किसी अदालत ने उन्हें सजा सुनाई? नहीं। ये नरसंहार इसलिए हुआ क्योंकि दलित भूमिहीन थे और उन्होंने लड़ाई लड़ने का फैसला किया था। याद रखिए जब भी कोई दलित अपनी आवाज उठाने की कोशिश करेगा, तो एक नहीं बल्कि कई बेलछी होंगे।' दरअसल, 2 जुलाई 1977 को जनता दल के सांसदों के साथ रामविलास बेलछी गए थे। तब मारे गए लोगों की अस्थियां और राख बांध लाए थे। रामविलास के भाषण के बाद गृह मंत्री चौधरी चरण सिंह को बयान बदलना पड़ा। इधर,

इमरजेंसी के बाद मिली हार से कांग्रेस सदमे में थी। इंदिरा अपनी सीट भी गंवा चुकी थीं। लोकसभा में बिहार से कांग्रेस का एक भी सांसद नहीं था। चर्चा होने लगी थी कि इंदिरा के दिन लद गए। लेकिन कांग्रेस नेता सीताराम केसरी को बेलछी की आग में अब भी धुआं उठता दिख रहा था। उन्होंने इंदिरा को सलाह दी- 'मैडम आपको बेलछी जाना चाहिए।' 11 अगस्त 1977, शाम का वक्त। पटना के सदाकत आश्रम में फोन बजा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केदार पांडे ने फोन उठाया। उधर से इंदिरा की आवाज आई- 'मैं पटना आ रही हूं। बेलछी जाना है। तैयारी कर लो।' 13 अगस्त 1977 की सुबह इंदिरा पटना पहुंचीं। तेज बारिश हो रही थी। बाढ़ जैसे हालात थे। इंदिरा, पटना से बिहारशरीफ के रास्ते बेलछी के लिए निकलीं। इंदिरा को देखने के लिए लोग छतों और पेड़ों पर चढ़ गए। जयकारे लग रहे थे। दूसरी तरफ कुछ लोग इंदिरा का विरोध भी कर रहे थे। वजह थी इमरजेंसी और नसबंदी का फैसला। कार, जीप, ट्रैक्टर कीचड़ में फंस गए, तो हाथी पर बैठकर बेलछी पहुंचीं इंदिरा -रास्ते में इंदिरा की कार कीचड़ में फंस गई, तो जीप बुलाई गई, लेकिन आधे रास्ते में जीप भी कीचड़ में फंस गई। बेलछी अब भी करीब 15 किलोमीटर दूर था। कांग्रेस नेताओं ने कहा- 'मैडम हम गांव जा नहीं पाएंगे। पटना लौट चलिए।' इंदिरा बोलीं- 'कुछ तो होगा गांव जाने के लिए। व्यवस्था करिए।' पास के एक गांव से ट्रैक्टर लाया गया। इंदिरा ट्रैक्टर पर बैठकर चल पड़ीं, लेकिन कुछ देर बाद ट्रैक्टर भी दलदल में फंस गया। लेखक श्रीरूपा रॉय अपनी किताब 'द पॉलिटिकल आउटसाइडर' में लिखती हैं- 'इंदिरा को सलाह दी गई कि वो पटना लौट जाएं, पर वो अड़ गईं। बोलीं- 'हम पैदल चलकर जाएंगे। भले ही वहां पहुंचने में रात क्यों ना हो जाए।' उन्होंने साड़ी ऊपर कर लीं और पैदल चलने लगीं।' जोवियर मोरो अपनी किताब 'द रेड साड़ी' में लिखते हैं- इंदिरा ने बेलछी से लौटकर सोनिया को पूरा किस्सा सुनाया। वो कहती हैं- 'काफी देर पैदल चलने के बाद एक नदी मिली। कोई नाव भी नहीं थी। हमें देखकर कुछ लोग झोपड़ियों से बाहर आ गए। मैंने पूछा कि हम नदी कैसे पार कर सकते हैं? कोई गधा या खच्चर मिल सकता है क्या? उन लोगों ने बताया कि गांव के मंदिर में एक हाथी है, उस पर चढ़कर नदी पार कर सकते हैं। गांव वाले हाथी लेकर आए। मोती नाम था उसका। पहले मैं बैठी और फिर मेरे पीछे प्रतिभा पाटिल। हाथी झूमकर चल रहा था और उसके पेट तक पानी आ रहा था। प्रतिभा ने मेरी साड़ी ऐसे पकड़ रखी थी, जैसे कोई बच्चा डर के मारे मां की साड़ी पकड़ लेता है। लग रहा था कि वह रो ही देगी। हम बेलछी पहुंचे तो दिन ढल चुका था। गांव वालों ने मुझे घेर लिया। वे मुझे उस जगह पर ले गए, जहां नरसंहार हुआ था। लोगों ने बताया कि कैसे उनके अधमरे परिवार वालों को आग में फेंका गया। उनकी बातें सुनकर मेरा दिल दहल गया।' बेलछी के जानकी पासवान याद करते हैं- 'इंदिरा हाथी पर बैठे-बैठे ही लोगों से बात करती रहीं। उन्होंने अपनी साड़ी का आंचल फैला दिया था। लोग कागज पर अपनी-अपनी मांगें लिखकर उसमें डालते जा रहे थे।' 13 अगस्त 1977 की रात इंदिरा बेलछी से पटना के लिए निकलीं। रास्ते में लोग लालटेन लेकर इंदिरा का इंतजार कर रहे थे। हरनौत में इतनी भीड़ जमा हो गई कि इंदिरा को हाथी से उतरकर लोगों से मिलना पड़ा। उन्होंने कहा- 'मैं कोई भाषण देने नहीं आई हूं। आप लोगों का दुख बांटने आई हूं।' फिर वो पटना लौट गईं। अगले दिन अखबारों में इंदिरा गांधी की फोटो छपी। हाथी पर बैठीं इंदिरा की तस्वीर ने सियासी गलियारों में खलबली मचा दी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं में फिर से जान आ गई। अगड़ों की पार्टी माने जाने वाली कांग्रेस को दलितों और पिछड़ों का भी समर्थन मिलने लगा। बिहार में नारा गूंजने लगा- 'इंदिरा तेरे अभाव में हरिजन मारे जाते हैं।' भूखी रोटी खाएंगे, इंदिरा को लाएंगे। 14 अगस्त की सुबह इंदिरा की कार पटना के कदमकुआं के लिए निकली। कुछ देर बाद उनकी कार एक घर के सामने रुकी। इंदिरा गाड़ी से उतरीं और अंदर चली गईं। ये घर जय प्रकाश नारायण यानी जेपी का था, जिनके आंदोलन की वजह से इंदिरा ने इमरजेंसी लगाई थी। जेपी पलंग से उतरकर खड़े हो गए। उन्होंने इंदिरा के लिए कुर्सी मंगवाई। आधे घंटे तक इंदिरा वहां रुकीं। फिर हाथ जोड़कर आशीर्वाद लिया और दिल्ली के लिए निकल गईं। इंदिरा के बेलछी दौरे के बाद कर्पूरी ठाकुर ने आरक्षण लागू किया, पर सरकार गिर गई। इंदिरा के इस सियासी रुख से जनता पार्टी सरकार पर दबाव बढ़ने लगा। ऐसे में सीएम कर्पूरी ठाकुर ने एक दांव चला और अप्रैल 1978 में 26फीसदी आरक्षण लागू कर दिया। इसके तहत पिछड़ों को 8फीसदी, अति पिछड़ों को 12फीसदी, गरीब सवर्णों और महिलाओं के लिए 3-3फीसदी आरक्षण दिया। ओबीसी आरक्षण लागू करने वाला बिहार पहला राज्य था। इस फैसले से जनता पार्टी के सवर्ण नेता नाराज हो गए। आखिरकार 21 अप्रैल 1979 को कर्पूरी ठाकुर को इस्तीफा देना पड़ा। इसके बाद दलित समुदाय से आने वाले रामसुंदर दास मुख्यमंत्री बने। इधर, केंद्र में भी जनता पार्टी के भीतर वर्चस्व की लड़ाई छिड़ी थी। 15 जुलाई 1978 को चौधरी चरण सिंह ने सरकार से समर्थन वापस ले लिया। 19 जुलाई को प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने इस्तीफा दे दिया। कांग्रेस के समर्थन से चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बने, लेकिन अगले ही महीने कांग्रेस ने समर्थन वापस लेकर उनकी सरकार गिरा दी। जनवरी 1980 में लोकसभा चुनाव हुए। कांग्रेस के पक्ष में एक तरफा लहर चली। कुल 542 में से 353 सीटें कांग्रेस ने जीत लीं। बिहार में 54 में से 30 सीट कांग्रेस को मिली। जनता पार्टी 8 सीटों पर सिमट गई। इंदिरा फिर से प्रधानमंत्री बनीं। अब बिहार में जनता पार्टी के भीतर उथल-पुथल मच गई। फरवरी 1980 में रामसुंदर दास को इस्तीफा देना पड़ा। राष्ट्रपति शासन लग गया। फांसी पर एकमत नहीं थे हाईकोर्ट के जज, सजा से पहले दोषियों ने खाई दही और मिठाई - कर्पूरी ठाकुर के सीएम रहते बेलछी नरसंहार मामले में चार्जशीट दाखिल हो गई थी, लेकिन तीन साल तक सुनवाई नहीं हो सकी थी। इंदिरा के पीएम बनते ही केस की सुनवाई शुरू हो गई। 19 मई 1980 को पटना ट्रायल कोर्ट ने महावीर महतो और परशुराम धानुक को फांसी की सजा और 15 आरोपियों को उम्रकैद की सजा सुनाई। आरोपियों ने पटना हाईकोर्ट में अपील की। अदालत ने आरोपियों को दोषी तो माना, लेकिन महावीर और परशुराम के फांसी के मुद्दे पर दो जजों की राय एकमत नहीं थी। जस्टिस हरिलाल अग्रवाल फांसी के फेवर में थे और जस्टिस मनोरंजन प्रसाद विरोध में। अब इस केस को एक तीसरे जज उदय सिन्हा के पास भेजा गया। जस्टिस सिन्हा बेलछी गए। लोगों से मिले। गवाहों के बयानों को वेरिफाई किया। 11 जुलाई 1982 को जस्टिस सिन्हा ने फैसला सुनाया-'यह मामला रेयर ऑफ रेयरेस्ट है। इस क्रूरतम अपराध के लिए फांसी से कम सजा हो ही नहीं सकती।' इसके बाद महावीर और परशुराम ने देश की सबसे बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाई, पर राहत नहीं मिली। उनकी फांसी के लिए 25 मई 1983 की तारीख मुकर्रर हुई और जगह भागलपुर सेंट्रल जेल। मई 1983, सुप्रीम कोर्ट में गर्मी की छुट्टियां चल रही थीं। आरोपियों ने टेलिग्राम भेजकर फांसी पर रोक लगाने की याचिका दायर कर दी। तब वेकेशन जज थे ए. वरदराजन। उन्होंने याचिका स्वीकार कर ली और 23 मई को फांसी पर रोक लगा दी। यानी फांसी की तय तारीख से 2 दिन पहले। तमिलनाडु से ताल्लुक रखने वाले वरदराजन सुप्रीम कोर्ट के पहले हरिजन जज थे। गर्मी की छुट्टियों के बाद सुप्रीम कोर्ट के 3 जजों की बेंच ने फिर से सुनवाई की और फांसी की सजा बरकरार रखी। आखिरकार नवंबर 1983 में दोनों को फांसी दे दी गई। कहा जाता है कि फांसी से ठीक पहले दोनों ने दही और मिठाई खाने की इच्छा जाहिर की थी। बेलछी नरसंहार के चलते लगातार दूसरी बार हार गए नीतीश-जून 1980 में बिहार में विधानसभा चुनाव हुए। यहां के दलित नारा लगा रहे थे- 'आधी रोटी खाएंगे, इंदिरा को लाएंगे।' वोटों की गिनती हुई तो कांग्रेस ने 324 में से 169 सीटें जीत लीं। जनता पार्टी 42 सीटें ही जीत पाई। पहली बार चुनाव लड़ रही बीजेपी ने 21 सीटें जीत लीं। पर, नीतीश के लिए बेलछी नरसंहार इस बार भी भारी पड़ा। नीतीश 5 हजार वोट से हार गए। लगातार दो हार से नीतीश को इतना धक्का लगा कि वे राजनीति छोड़ने का मन बना चुके थे। सीनियर जर्नलिस्ट संकर्षण ठाकुर अपनी किताब 'अकेला आदमी, कहानी नीतीश कुमार की' में लिखते हैं- 'लगातार दूसरी हार से नीतीश बुरी तरह टूट गए थे। उन्हें तकलीफ थी कि अपने लोगों ने ही उनका साथ नहीं दिया। उन्होंने राजनीति छोड़ने का भी ऐलान कर दिया था, लेकिन समाजवादी नेता चंद्रशेखर के कहने पर 1985 में नीतीश ने फिर जोर लगाया। इस बार नीतीश के पास चुनाव लड़ने के पैसे नहीं थे। उनकी पत्नी ने 20 हजार रुपए दिए। इस बार नीतीश 22 हजार वोट से जीत गए।' बेलछी नरसंहार के बाद कांग्रेस ने केंद्र और बिहार में जोरदार वापसी की, लेकिन वो इसे बरकरार नहीं रख पाई। सीनियर जर्नलिस्ट अमरनाथ तिवारी बताते हैं- 'बेलछी नरसंहार के बाद बिहार में लोअर कास्ट पॉलिटिक्स हावी होती गई।

लगातार जातीय नरसंहार होते रहे। राम मंदिर आंदोलन और लालू का साथ देने के चलते सवर्ण कांग्रेस से छिटककर बीजेपी की तरफ शिफ्ट हो गए और पिछड़ा तबका लालू का वोटर बन गया।' कल दूसरे एपिसोड में पढ़िए कहानी दलेलचक बघौरा नरसंहार की, जहां 54 राजपूतों की हत्या कर दी गई.. नोट : (यह सच्ची कहानी पुलिस चार्जशीट, कोर्ट जजमेंट, गांव वालों के बयान, अलग-अलग किताबें और इंटरनेशल रिपोर्ट्स पर आधारित है। क्रिएटिव लिबर्टी का इस्तेमाल करते हुए इसे कहानी के रूप में लिखा गया है।) रेफरेंस :जेवियर मोरो की किताब 'द रेड साड़ी', द पॉलिटिकल आउटसाइडर,कास्ट प्राइड बॅटल्स फॉर इक्वालिटी इन हिन्दू इंडिया,भास्कर,भारतीय राजनीति के मौसम वैज्ञानिक रामविलास पासवान।

स्ट्रगल के दिनों में भूखे पेट सोए दर्शन कुमार,सालों तक रिजेक्शन झेला, एक्टिंग छोड़ने का फैसला किया, फिर कश्मीर फाइल्स ने कमाए 341 करोड़

मुंबई। 'द कश्मीर फाइल्स' और 'द बंगाल फाइल्स' फिल्म के एक्टर दर्शन कुमार आज इंडस्ट्री का सफल नाम हैं। एक्टिंग इतनी दमदार कि

दिग्गज डायरेक्टर सतीश कौशिक दर्शन को वन टेक आर्टिस्ट बुलाते थे। परदे पर पहली ही फिल्म में सलमान खान के दोस्त के रूप में दिखे। फिल्म हिट हुई तो लगा आगे की राह आसान होगी, लेकिन उसके बाद ऐसा दौर देखा कि ऑडिशन में जूता फटा तो नंगे पैर पैदल घर आना पड़ा। ये ऐसे संघर्ष की शुरुआत जो एक दशक चला और इन्होंने एक्टिंग छोड़ने का मन बना लिया। पिता ने दाल-रोटी का खर्च देने का वादा किया तो फिर संघर्ष की दूसरी दास्तान शुरू हुई जिसके बाद इंडस्ट्री की दो टॉप एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा और अनुष्का शर्मा के साथ सफल फिल्में कीं। वो बताते हैं की मैं दिल्ली के महरौली का रहने वाला हूं। हमारे इलाके की पहचान कुतुबमीनार से है। मेरा बचपन महरौली की गलियों में बीता है। मैंने पढ़ाई भी यहीं से की है। स्कूल में मैंने पीटी में एक दिन ड्रम प्ले किया और वो पता नहीं कैसे इतना अच्छा प्ले हुआ कि टीचर ने मुझसे कहा कि अब हर दिन तुम्हीं ये काम करोगे। स्टेज पर रहने की आदत मुझे वहां से लगी। मैं शुरुआत से स्कॉलर रहा। बचपन से ही कॉम्पिटिशन में रहना मुझे पसंद था। मैं केवल क्लास में टॉप करने की कोशिश नहीं करता, बल्कि स्कूल में भी सबसे ज्यादा मार्क्स लाने की कोशिश करता था। कई बार मैंने ऐसा किया भी, जिसकी वजह से मुझे ट्रॉफी मिली। इस दौरान पढ़ाई ही नहीं, जूडो, पहलवानी, बॉक्सिंग और बाकी खेलों में भी हाथ आजमाए और सब कुछ सीखा। इसका सारा श्रेय मेरी मां को जाता है। बॉक्सिंग में अपने स्कूल और कॉलेज के लिए नेशनल लेवल तक खेला और ट्रॉफी जीती। आमतौर पर लोग कविता पढ़ते हैं। मैं स्टेज पर कविताएं परफॉर्म करता था। इस वजह से मुझे कई लोगों ने कहा था कि तुम अच्छे एक्टर हो। तुम्हें एक्टिंग के लिए ट्राई करना चाहिए। मेरे अंदर एक्टिंग का कीड़ा तो था ही, ऐसे में मैंने एक्टिंग के लिए दिल्ली के मंडी हाउस में ही एक छोटा सा ग्रुप जॉइन कर लिया। वहां पर मैं पीयूष मिश्रा जी से मिला। मैं भाग्यशाली रहा कि उनके साथ मुझे 'गैलीलियो' नाम के एक प्ले में काम करने का मौका मिला। उसके बाद एक-दो और प्ले में भी उनसे जुड़ा। ये कॉलेज से पहले की बात है। दो-तीन प्ले के बाद एक दिन पीयूष मिश्रा जी ने कहा कि वो अब मुंबई जा रहे हैं। ऐसे में मैंने उनसे कहा कि प्लीज मुझे गाइड कीजिए। मुझे एक्टिंग करनी है। इसके आगे अब क्या करूं। उन्होंने मुझसे कहा कि कुछ भी करके एनके शर्मा ग्रुप को जॉइन कर लो। मैंने वो ग्रुप जॉइन किया और एक महीने के अंदर मैं प्ले में लीड बन गया। जब मैं एनके शर्मा ग्रुप से जुड़ा तो मुझे और बोलने में दिक्कत होती थी। हरियाणवी में औ की मात्रा नहीं होती है। इस वजह से मैं औ वाले सारे शब्द को गलत बोलता था। एनके शर्मा जी मुझे कहते पेट से बोलो। मैंने धीरे-धीरे अपनी भाषा पर काम किया और एक समय ऐसा आया कि मैं लोगों के लिए डबिंग कर रहा था। मैं दिल्ली में एक्ट वन थिएटर का हिस्सा भी रहा हूं। मैंने उस थिएटर को जॉइन ही किया था, तभी मुझे पता चला कि फिल्म 'मुझे कुछ कहना है' का ऑडिशन होने वाला है। मेरे दोस्त ने कहा कि ऑडिशन पर चलना है तो मैं थोड़ा डर गया। उस वक्त भी मैं स्कूल में था। ऑडिशन क्या होता है, मुझे पता तक नहीं था। मेरा दोस्त मुझे खींचकर ले गया था। वहां पहुंचने पर हमें लाइन दी गई। जब मैं वो लाइन पढ़ रहा था, तब मेरे दिमाग में चल रहा था कि मैं इसमें इम्प्रोवाइज कर सकता हूं। ऑडिशन हुआ और मेरा कोई भी दोस्त सिलेक्ट नहीं हुआ। सिर्फ मेरा सिलेक्शन हुआ था। यहीं पर पहली बार मैं सतीश कौशिक जी से मिला था। उन्होंने मुझे पहली मीटिंग में ही कहा कि बहुत दूर तक जाओगे। मैं उन्हें लेकर बहुत इमोशनल हो जाता हूं क्योंकि उनका प्यार मेरे लिए अलग था। मुझे याद है, शूटिंग के दौरान जब मेरी परफॉर्मेंस होती थी, तब वो बहुत खुश होते थे। कहते थे कि तुम वन टेक आर्टिस्ट हो। एक टेक में सीन कर लेते हो। कितनी बार तो ऐसा हुआ कि मैं किसी इवेंट या शो में गया हूं। उन्होंने स्क्रीन पर देख मुझे फोन किया और कहा कि तू हीरो है। वो मेरी एक-एक परफॉर्मेंस देखते थे। 'मुझे कुछ कहना है' के बाद उन्होंने मुझे 'तेरे नाम' में काम करने का मौका दिया। वो मुझे लीड में लेकर दो-तीन प्रोजेक्ट करना चाहते थे, लेकिन प्रोड्यूसर के साथ बात नहीं बन पा रही थी। आखिरी समय में जब वो दिल्ली में थे, तब उनका कॉल भी आया था कि मैं तुम्हें लीड लेकर फिल्म बनाने वाला हूं। दिल्ली से वापस आकर वो कॉल करूंगा, नैरेशन सुन लेना, लेकिन चीजें हो नहीं पाईं। 'तेरे नाम' में सलमान खान का दोस्त बना- स्पोर्ट्स से जुड़ने की वजह से फिटनेस में दिलचस्पी हमेशा से रही। सलमान भाई और संजय दत्त इंडस्ट्री में बॉडी बनाने का चलन लेकर आए। सलमान भाई ने हमेशा मुझे किसी न किसी तरह से इंस्पायर किया है। जब मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला तो मैं पहले यकीन नहीं कर पा रहा था। जब मैंने उन्हें पहली बार देखा तो मुझे यकीन नहीं हुआ कि कोई इतना हैंडसम भी हो सकता है। उनका अपना एक औरा है। सेट पर कितनी बार हुआ कि जब कोई इमोशनल सीन करना पड़ा तो वो मेरी खिंचाई करते थे। कहते थे कि तुम अपनी गर्लफ्रेंड को इमोशनल करके खूब बेवकूफ बनाते होगे। मुझे सलमान भाई से बहुत प्यार मिला। कभी नहीं लगा कि मैं सलमान खान के साथ काम कर रहा हूं। कई बार तो एक ही जिम में साथ में वर्कआउट करते थे। उनसे सेट पर काफी बातें भी होती थीं। वो पर्सनैलिटी और बिहेवियर दोनों में बहुत अच्छे हैं। जब आप इतने बड़े स्टार के साथ काम करते हैं फिर उनकी अच्छाई आपके साथ जिंदगी भर रह जाती है। आप इंस्पायर होते हैं। 'तेरे नाम' में काम करना मेरे लिए फैनबॉय मोमेंट था। साल 2001 में 'मुझे कुछ कहना है' और 2003 में 'तेरे नाम' फिल्म आई थी। ये दोनों ही सुपरहिट फिल्में थीं और मैं दोनों ही फिल्मों का हिस्सा था, लेकिन मेन लीड तक पहुंचने में बहुत लंबा समय लगा। मेरा संघर्ष 11 सालों का था। उस वक्त इतने कास्टिंग डायरेक्टर नहीं होते थे। डिजिटल का दौर भी नहीं आया था। उस वक्त फोटो की फिजिकल कॉपी ऑफिस जाकर देनी होती थी। एक फोटो की कीमत 7-8 रुपए होती थी। मुझे याद है कि मैंने एक कास्टिंग डायरेक्टर को फोटो दी और कहा कि मैं थिएटर से हूं। मैंने 'तेरे नाम' और 'मुझे कुछ कहना है' फिल्में की हैं। उसने मुझे पलटकर कहा कि ऐसा काम करो कि एक फिल्म से नाम बन जाए। मैं मुंबई में किसी को जानता नहीं था। मेरी हालत हर रोज खुद कुआं खोदो और रोज पानी निकालने वाली थी। मैं पृथ्वी थिएटर जाता था ताकि लोगों के बारे में पता चल सके। वहां, मुझे एक शख्स मिले, जिन्होंने मुझसे कहा कि चाय पिलाओ और कुछ खिलाओ। मैंने उन्हें खिलाया-पिलाया। हमारे बीच फिल्म और थिएटर को लेकर बहुत बड़ी-बड़ी बातें हुईं। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या आप बता सकते हैं कि ऑडिशन कहां होते हैं? उन्होंने मुझे तल्खी के साथ कहा कि खुद से मेहनत करो। ये चाय पिलाकर तुम सोच रहे हो कि मैं सब बता दूंगा? मैं तो बस जान-पहचान और दोस्त बनाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन सामने वाले ने गलत तरीके से लिया। संघर्ष के दिनों में बिस्किट खाकर समय निकाला- जब कोई लिंक नहीं मिला, तब मैंने थिएटर जॉइन करने का सोचा। मैं अपना समय खराब नहीं करना चाहता था। मैंने कैसे भी करके नीना जी और राजेंद्र गुप्ता जी का ग्रुप जॉइन किया। फिर वहां से नसीरुद्दीन शाह के ग्रुप का हिस्सा बना। मैं बता नहीं सकता कि मेरे जीवन में उस वक्त कितनी तकलीफ थी। मैं डबिंग और छोटा-मोटा काम करके अपना गुजारा कर रहा था। मैं 6-7 लड़कों के साथ एक कमरे में रहता था। वो सारे लड़के मस्तीखोर थे। रातभर उनकी मस्ती चलती थी। कमरे में जगह नहीं होती और मुझे समय से सोना होता था। मुझे सुबह उठकर खुद पर काम करना होता था। मैं सुबह उठकर पार्क में जाकर अपनी आवाज पर काम करता था। ऐसे में मैं कान में रूई डालकर सोता था, लेकिन शेयरिंग ने मुझे बहुत कुछ सिखाया भी। जब हममें से किसी को भी छोटा सा भी काम मिलता तो सब मिलकर सेलिब्रेट करते थे। उस वक्त दूध खरीदना भी हमारे लिए रईसी थी। हमारी हालत इतनी खराब थी कि ऑटो में बैठना, दूध खरीदना, कॉफी पीने जैसी चीज रईसी थी। संघर्ष के दिनों में मैंने बिस्किट खाकर भी समय निकाला। पैसे बचाने के लिए कई-कई किलोमीटर पैदल चला - ऑटो के बारे में सोचना उस वक्त ऐसा लगता था कि मैं लैम्बोर्गिनी में बैठने की बात कर रहा हूं। ऑडिशन के लिए हर दिन बस में जाना भी मैं अफोर्ड नहीं कर सकता था। हर दिन बैग में अपनी फोटो डालकर ऑडिशन के लिए दरवाजे-दरवाजे जाता था। लोगों से पूछता था कि क्या मेरे लिए कोई रोल है और मेरे मुंह पर ना बोलकर दरवाजा बंद कर दिया जाता। पूरा दिन इस तरह काम मांगने में निकल जाता था। पैसे बहुत सीमित होते थे। ऐसे में पैसे फोटो पर खर्च कर सकते थे या हर दिन के ट्रैवल में। या फिर कुछ दिनों में टीशर्ट खरीदनी पड़ती थी क्योंकि अच्छा भी दिखना होता था। मुझे याद है कि मैं अंधेरी स्टेशन से सबसे सस्ती और अच्छी दिखने वाली टी शर्ट और जूते लेता था। ऑडिशन के लिए हर दिन जाना होता था। अब ऐसे में हर रोज बस भी अफोर्ड नहीं कर सकता था। मैं वर्सोवा गांव में रहता था। वहां से हर रोज लोखंडवाला, जुहू और बांद्रा तक मैं पैदल चलता था। लिफ्ट मांगता था तो लिफ्ट मिलती नहीं थी। चप्पल खरीदने के पैसे नहीं थे तो नंगे पैर चला- एक बार की बात है कि मैं ऑडिशन देने गया था। मैं फॉर्मल कपड़ों में था। पैदल चलकर जब मैं ऑडिशन के लिए पहुंचा, तो मेरे जूते का सोल निकल गया। जैसे-तैसे करके मैंने ऑडिशन दिया। जब ऑडिशन खत्म हुआ रात के 9 बज चुके थे। मेरे पास पैसे भी नहीं थे कि मैं जूते या चप्पल

खरीद सकूं। रात होने की वजह से कहीं मोची भी नहीं मिला। जूते को हाथ में टांगे मैं नंगे पैर रूम वापस लौटा था, लेकिन भगवान ने भी मेरी मेहनत को देखा। जिस ऑडिशन से मैं नंगे पैर लौटा था, उसी ऑडिशन से मुझे मेरा पहला टेलीविजन शो 'बाबा ऐसो वर ढूंढो' में काम मिला। इस शो में मैं और विक्रांत मैसी साथ में थे। हमारा ये शो एक छोटे से प्लेटफॉर्म पर था, लेकिन पॉपुलैरिटी के मामले में कलर्स जैसे बड़े चैनल के शो को टक्कर दे रहा था। फिर मैंने 'छोटी बहू' में काम किया और इसमें मेरा निभाया गया रोल खूब फेमस हुआ था।

एक एक्टर ने मेरे कमरे की तुलना नरक से की- मैं नाम नहीं बोलना चाहूंगा, लेकिन वो कमाल के एक्टर हैं। हमने साथ में काम किया है। वो मुझे लंबे समय से कह रहे थे कि तुम मुझे कुछ बनाकर खिलाओ या चाय पिलाओ। एक दिन मैंने उन्हें वर्सोवा गांव के अपने कमरे पर डिनर के लिए इनवाइट किया। उस एरिया में मछली बहुत सुखाई जाती है। बहुत गलियां और पतले रास्ते थे।

जब वो आए, तब मैं उन्हें लेने बाहर तक गया। मुझे देखते ही उन्होंने कहा कि तू जब मरेगा तो स्वर्ग में जाएगा। मुझे लगा कि मैं इन्हें खाना खिला रहा हूं, इस वजह से ये ऐसा बोल रहे हैं। मैंने उनसे कहा पहले मेरे हाथ का खाना खा तो लीजिए। फिर ये कहिएगा। उन्होंने मुझे पलटकर कहा- पूछ तो सही मैंने ये क्यों बोला? मैंने पूछा तो उन्होंने कहा नरक में तो तू अभी रह रहा है। मैंने उनकी बातों को दिल से नहीं लिया क्योंकि वो जगह मेरे लिए बहुत जरूरी थी। मुझे वो जगह पसंद थी। आज मैं जो भी हूं, उसी जगह की वजह से हूं। फिल्म बंद हुई तो एक्टिंग छोड़ने का सोचा- काफी मेहनत के बाद भी मुझे कोई काम नहीं मिल रहा था।

लगातार रिजेक्शन झेल रहा था। फिर मुझे एक फिल्म में काम मिला, जिसके लिए मैंने एक साल तक बहुत तैयारी की थी। उस फिल्म के लिए मैंने वजन, बाल सब बढ़ाया था। उस फिल्म में मुझे एक साथ तीन-चार रोल निभाने थे। सारी तैयारियों के बाद भी वो फिल्म नहीं बनीं। इस बात से मैं हताश हो गया था। मुझे लगा कि शायद एक्टिंग में किस्मत मेरा साथ नहीं दे रही है। मैंने अपने पापा को कॉल किया और कहा कि मैं सोच रहा हूं कि दीदी के पास ऑस्ट्रेलिया चला जाता हूं। वहीं, मेहनत करूंगा। पापा ने कहा- क्या प्रॉब्लम है? मैंने कहा कि पापा इतने सालों से मेहनत कर रहा हूं, मुझे काम नहीं मिल रहा है। पैसों की सख्त जरूरत होती है। पापा ने कहा कि तुम्हें दाल-रोटी की टेंशन है, तो वो मैं तुम्हें दूंगा। एक वो दिन था और आज का दिन है। पापा के साहस की वजह से आज मैं सफल हूं। प्रियंका चोपड़ा के अपोजिट मैरी कॉम से किस्मत बदली- 'मैरी कॉम' में मेरी कास्टिंग की स्टोरी बहुत कमाल है। मुझे याद है कि मैं दिल्ली में था और मुझे फेमस कास्टिंग डायरेक्टर श्रुति महाजन का ऑडिशन के लिए कॉल आया। मैं दिल्ली से अपनी पूरी तैयारी करके आया था। मेरा ऑडिशन फिल्म के डायरेक्टर उमंग कुमार सर को बहुत पसंद आया। उन्होंने दो मिनट के अंदर बोल दिया था कि तुम मेरे ओनलर (किरदार का नाम) हो। मैं बहुत खुश था कि चलो मेरा सिलेक्शन हो गया। अब मैं प्रियंका चोपड़ा का हीरो बनूंगा। फिर मुझे कहा गया कि तुम्हें संजय लीला भंसाली सर से मिलना है, उसके बाद तुम्हारी कास्टिंग का फाइनल होगा। मैं संजय सर से यशराज के ऑफिस में मिलने गया। उन्होंने मुझसे 10 मिनट बात की और बस ठीक है कहा। बाद में मुझे बताया गया कि मैं संजय सर को भी बहुत पसंद आया। मुझे लगा, चलो अब मेरा नाम फाइनल हो गया। मुझे फिर से कहा गया कि अभी फाइनल नहीं हुआ है। अभी प्रियंका चोपड़ा के साथ तुम्हारा फोटोशूट होगा। उसमें देखा जाएगा कि तुम दोनों पति-पत्नी लगते हो या नहीं। एक हफ्ते बाद मैं प्रियंका चोपड़ा से मिला। मैं उनसे पहली बार जिम में मिलने गया था। हमारे बीच हाय-हैलो हुई। मैं प्रियंका चोपड़ा से पहली बार मिल रहा था। वो इतनी बड़ी सुपरस्टार हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं कैसे बिहेव करूं कि उनका हसबैंड लगूं। वो जिम से बाहर आईं और कहा कि चलो फोटो क्लिक करवाते हैं। मैंने खुद को नॉर्मल करने की कोशिश की। मैं बहुत शर्मीला टाइप का इंसान हूं। लोगों से जल्दी खुलता नहीं हूं, लेकिन उस वक्त मेरी लाइफ का सवाल था। मैंने प्रियंका से झिझकते हुए पूछा कि हमें पति-पत्नी दिखना है। क्या मैं तुम्हें पकड़ सकता हूं? प्रियंका ने कहा हां बिल्कुल...और क्या। नहीं तो हम पति-पत्नी दिखेंगे कैसे। उनकी बातों से मेरे अंदर आत्मविश्वास आया। मैंने जो भी तैयारी की थी, प्रियंका को दिमाग में रखकर ही की थी। फिर मैंने उन्हें होल्ड किया, साथ में फोटो खिंचवाई और मैं फिल्म के लिए फाइनल हो गया। आज विदेशों तक लोग मेरे किरदार के नाम से बुलाते हैं- 'मैरी कॉम' के बाद मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मेरे लंबे संघर्ष का फल मुझे दिखने लगा था। वैसे तो मैंने पहली फिल्म 'एनएच 10' साइन की थी, लेकिन 'मैरी कॉम' पहले रिलीज हो गई। अनुष्का शर्मा स्टारर फिल्म 'एनएच10' में विलेन के तौर पर दिखा। इस रोल की न सिर्फ हर जगह तारीफ हुई बल्कि विलेन के रोल के लिए मुझे आईफा में बेस्ट निगेटिव रोल का अवॉर्ड भी मिला। इसके बाद मैंने करियर में सरबजीत, मिर्जा-जूलियट, ए जेंटलमैन, बागी-2, पीएम नरेंद्र मोदी, तूफान, द कश्मीर फाइल्स और द बंगाल फाइल्स जैसी फिल्में कीं। द कश्मीर फाइल्स के लिए भी मुझे फिल्मफेयर में बेस्ट सपोर्टिंग का नॉमिनेशन मिला। मैंने ओटीटी पर भी काम किया। ओटीटी की हिट सीरीज 'फैमिली मैन' और 'आश्रम' का हिस्सा भी रहा हूं। मेरे काम को लोगों ने इतना पसंद किया है, इस बात का अंदाज मुझे विदेशों में जाकर पता चला। मैं लंदन में 'फैमिली मैन' सीरीज की शूटिंग कर रहा था। ब्रेक हुआ तो मैं एक कॉफी शॉप में चला गया। मैं अपनी यूनिट के साथ गया था। बिल देने के लिए जब मैंने अपना कार्ड बढ़ाया तो मुझे कहा गया कि मेजर समीर हम उजागर सिंह से पैसे कैसे ले सकते हैं। ये दोनों ही नाम मेरे सीरीज के किरदारों के हैं। मैं हैरान रह गया। जब इस तरह का प्यार मिलता है, शब्द खत्म हो जाते हैं। ये किसी भी अवॉर्ड से बढ़कर हैं।

भोजपुरी सुपरस्टार दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' से खास बातचीत

संवाददाताः श्रीकांत शाह, ब्यूरो प्रभारी, आधुनिक समाचार

प्रश्न (श्रीकांत शाह):- नमस्कार निरहुआ जी, सबसे पहले आपका स्वागत है आधुनिक समाचार में। आपसे जानना चाहेंगे कि इन दिनों आप किन परियोजनाओं में व्यस्त हैं? उत्तर (निरहुआ):- धन्यवाद शाह जी। फिलहाल मैं दो फिल्मों की शूटिंग कर रहा हूँ - 'निरहुआ रंगीला 2' और 'जय भोजपुरिया'। इसके साथ-साथ कुछ वेब सीरीज के भी ऑफर आ रहे हैं, जिन्हें लेकर मैं काफी उत्साहित हूँ। **प्रश्नः-भोजपुरी सिनेमा में लगातार बदलाव आ रहे हैं। आप इन परिवर्तनों को कैसे देखते हैं?** उत्तरः- बिलकुल सही कहा आपने। अब भोजपुरी सिनेमा सिर्फ गानों तक सीमित नहीं है। आज की पीढ़ी अच्छी कहानी और तकनीकी गुणवत्ता चाहती है। मैं समझता हूँ कि ये बदलाव बहुत सकारात्मक हैं और इससे हमारी इंडस्ट्री को राष्ट्रीय

स्तर पर पहचान मिल रही है। **प्रश्नः- आप राजनीति में भी सक्रिय हैं। सिनेमा और राजनीति - दोनों को कैसे संतुलित करते हैं?** उत्तरः-यह थोड़ा चुनौतीपूर्ण ज़रूर है लेकिन जब आप जनता की सेवा करना चाहते हैं और कला को भी ज़िंदा रखना चाहते हैं, तो समय प्रबंधन सबसे जरूरी हो जाता है। मैं कोशिश करता हूँ कि दोनों क्षेत्रों में ईमानदारी से काम करूँ। **प्रश्नः-नए कलाकारों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?** उत्तरः- मेरी बस यही सलाह है कि मेहनत और ईमानदारी से काम करें। शॉर्टकट का रास्ता जल्दी दिखता है, लेकिन लंबे समय तक टिकने के लिए धैर्य और समर्पण बहुत ज़रूरी है। **प्रश्नः-आपके फैंस के लिए कोई खास संदेश?** उत्तरः-मैं अपने सभी चाहनेवालों का दिल से शुक्रगुज़ार हूँ। आप लोगों के प्यार ने ही मुझे 'निरहुआ' बनाया है। मैं वादा करता हूँ कि आगे भी आप सबका मनोरंजन करता रहूँगा। श्रीकांत शाह का निष्कर्षः-भोजपुरी सिनेमा के 'जुबली स्टार' दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' ने यह सिद्ध कर दिया है कि मेहनत, लगन और जनता का प्यार किसी को भी बुलंदियों तक पहुंचा सकता है। आधुनिक समाचार की टीम की ओर से उन्हें भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

एमएनएस ने कपिल शर्मा को दी चेतावनी,राज ठाकरे की पार्टी के नेता बोले- शो में अगर मुंबई को 'बॉम्बे' कहा तो बड़ा आंदोलन होगा

मुंबई। राज ठाकरे की पार्टी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने कपिल शर्मा के शो में 'द ग्रेट इंडियन कपिल' में मुंबई को 'बॉम्बे' या 'बंबई' कहने पर आपत्ति जताई है। पार्टी ने साफ कहा है कि शहर के पुराने नाम का इस्तेमाल करना मुंबई और यहां के लोगों का अपमान है।एमएनएस नेता अमेय खोपकर ने सोशल मीडिया पर इस मुद्दे को उठाया। खोपकर ने कपिल शर्मा के शो की एक क्लिप भी शेयर की। यह वीडियो उस एपिसोड का है जिसमें शिल्पा शेट्टी, शमिता शेट्टी, हुमा कुरैशी और उनके भाई साकिब सलीम शामिल थे। क्लिप में हुमा कुरैशी अपने भाई के साथ रिश्ते की बात करते हुए कहती हैं कि वे बाहर से आए हैं और 'बॉम्बे' के नहीं हैं।इस वीडियो को शेयर करते हुए अमेय खोपकर ने लिखा- '1995 में महाराष्ट्र सरकार और 1996 में केंद्र सरकार ने मुंबई नाम को आधिकारिक मान्यता दी थी। चेन्नई, बेंगलुरु और कोलकाता से भी पहले मुंबई नाम अपनाया गया। ऐसे में इसका सम्मान होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह एक विनम्र अनुरोध है और साथ ही

कंगना रनोट को सुप्रीम कोर्ट का राहत देने से इनकार,महिला किसान को रु100 में धरना देने वाली बताया था

नयी दिल्ली। हिमाचल के मंडी से बीजेपी सांसद एवं बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनोट को सुप्रीम कोर्ट से झटका लगा है। कोर्ट ने किसान आंदोलन के दौरान की गई टिप्पणी

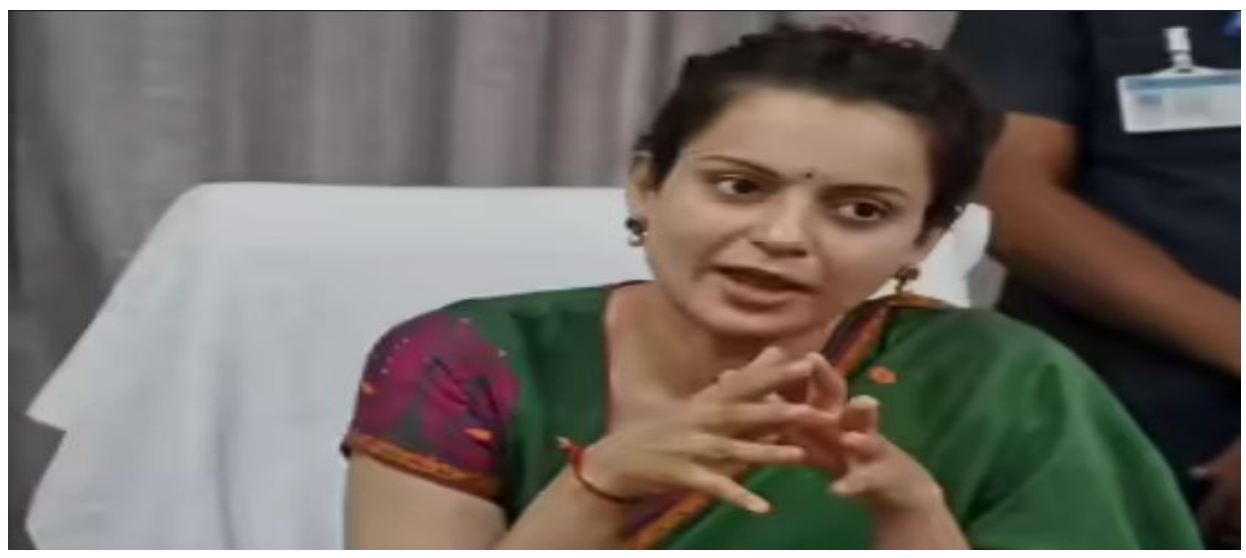

को लेकर दर्ज मानहानि केस रद्द करने की याचिका खारिज कर दी है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने कंगना की दलीलों को सुनने के बाद कहा कि आपके ट्वीट को केवल रिट्वीट नहीं कहा जा सकता। आपने उसमें मसाला जोड़ा है। इसका क्या मतलब है, इसकी एक्सप्लेनेशन ट्रायल कोर्ट ही करेगा। यह सफाई आप वहीं दीजिएगा। यह मामला 2021 का है, जब किसान आंदोलन चल रहा था। उस दौरान कंगना ने बठिंडा के गांव बहादुरगढ़ जंडिया की रहने वाली 87 वर्षीय बुजुर्ग महिला किसान महिंदर कौर को 100-100 रुपए लेकर धरने में शामिल होने वाली महिला बताते हुए ट्वीट किया था। इसके खिलाफ महिंदर कौर ने कोर्ट में केस दर्ज करवाया था। कंगना का कहना था कि उन्होंने केवल एक वकील की पोस्ट को रिपोस्ट किया था। कंगना रनोट के वकीलः मामला एक रिट्वीट से जुड़ा है। मूल ट्वीट को ही दूसरे लोगों ने कई बार रिट्वीट किया था। उन्होंने (कंगना) बिलकिस बानो या शाहीन बाग वाली दादी के बारे में बात की थी, न कि प्रतिवादी के बारे में। सुप्रीम कोर्टः अपनी (कंगना) टिप्पणियों के बारे में आप क्या कहते हैं? आपने (कंगना) इसमें मसाला डाला। यह कोई साधारण रिट्वीट नहीं था। इस ट्वीट की व्याख्या को निरस्तीकरण याचिका में नहीं माना जा सकता। आपका स्पष्टीकरण निचली अदालत के लिए है। निरस्तीकरण याचिका में नहीं। कंगना रनोट के वकीलः कोर्ट में शिकायत दर्ज करने से पहले उनका (कंगना) स्पष्टीकरण मौजूद था। उस पर विचार नहीं किया गया। सुप्रीम कोर्टः सबूतों की अस्वीकार्यता के कारण शिकायत खारिज की जा सकती है। हमें अपने (कंगना) ट्वीट पर टिप्पणी करने के लिए न कहें। इससे आपके मुकदमे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आप इसे वापस लें। आप वापस लेना चाहते हैं? कंगना रनोट के वकीलः हां। सुप्रीम कोर्टः ठीक है। याचिका वापस लिए जाने के कारण खारिज की जाती है। कंगना ने सोशल मीडिया में उड़ाया था मजाक कंगना ने किसान आंदोलन के दौरान एक ट्वीट करते हुए लिखा था कि- किसान आंदोलन में महिलाएं 100 रुपए में शामिल होती हैं। कंगना ने किसान आंदोलन को लेकर एक पोस्ट पर कमेंट भी किया था। इसमें एक बुजुर्ग महिला की फोटो थी। एक्ट्रेस ने लिखा, 'हाहाहा, ये वही दादी है, जिसे टाइम मैग्जीन में भारत की पावरफुल महिला होने पर फीचर किया गया था। वो 100 रुपए में उपलब्ध है। पाकिस्तानी पत्रकारों ने भारत के लिए शर्मनाक तरीके से इंटरनेशनल पीआर को हाईजैक कर लिया है। हमें इंटरनेशनल लेवल पर बोलने के लिए अपने ही लोगों की जरूरत है।'4 जनवरी 2021 को किया था केस दायर- बठिंडा के गांव बहादुरगढ़ में रहने वाली महिंदर कौर (81) ने कंगना के ट्वीट के बाद 4 जनवरी 2021 को मानहानि का केस दायर किया था। करीब 13 महीने सुनवाई चली, जिसके बाद बठिंडा की अदालत ने कंगना को समन जारी करते हुए पेश होने का आदेश दिया था। इसके बाद कंगना ने पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट में राहत की याचिका दायर की थी, जिसे खारिज कर दिया गया। इसके बाद वह सुप्रीम कोर्ट पहुंचीं। जहां से भी कंगना को राहत नहीं मिली है।

बुजुर्ग महिला ने भी कंगना पर किया था पलटवार- कंगना क्या जानें कि खेती क्या होती है?: कंगना के ट्वीट के बाद जब मामले ने तूल पकड़ना शुरू किया तो एक टीवी चैनल से बातचीत में मोहिंदर कौर ने कहा था कि, 'कंगना क्या जानें कि खेती क्या होती है? वह कमली (पागल) है। उसने जो कुछ भी कहा, उस पर बहुत मुश्किल है। कंगना ने मुझ पर बहुत गलत तोहमत लगाई है।' मुझे 100 रुपए से क्या करना हैः मोहिंदर कर ने इसी इंटरव्यू में कंगना के 100 रुपए वाले कमेंट पर रिएक्ट करते हुए कहा था कि उनके खेतों में काम खत्म नहीं होते, ऐसे में वे 100 रुपए के लिए प्रदर्शन में शामिल होने क्यों जाएंगी। कंगना ने जो कुछ कहा है, वह गलत बात है। कभी किसी के लिए गलत नहीं बोलना चाहिए। 2024 में महिला कॉन्स्टेबल ने मार दिया था थप्पड़ मंडी सीट से लोकसभा चुनाव जीतने के बाद कंगना को 6 जून 2024 को चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर सीआईएसएफ की महिला कॉन्स्टेबल कुलविंदर कौर ने थप्पड़ मार दिया था। महिला कर्मचारी ने थप्पड़ मारने का कारण भी बताया था। उसने बताया था कि कंगना ने महिला किसानों को 100-100 रुपए लेकर धरने पर बैठने वाली कहा था। धरने में उसकी मां भी मौजूद थी। महिला कॉन्स्टेबल पर कोई एफआईआर नहीं हुई थी। इस मामले में डीएसपी एयरपोर्ट ने बताया था कि कंगना ने इस मामले में कोई शिकायत नहीं दर्ज करवाई।

फिल्म स्टार को भी स्मार्टनेस में मात देने वाले प्रयागराज सिविल डिफेंस अधिकारी रौनक गुप्ता ने आज बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना से की खास मुलाकात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज के चर्चित और स्मार्ट सिविल डिफेंस अधिकारी रौनक गुप्ता ने आज बॉलीवुड के लोकप्रिय अभिनेता आयुष्मान खुराना से खास मुलाकात की। यह मुलाकात सौहार्द्रपूर्ण माहौल में हुई, जिसमें रौनक गुप्ता ने अभिनेता से प्रयागराज में भविष्य में होने वाली शूटिंग्स के लिए एक बार फिर आने का आमंत्रण भी दिया। रौनक गुप्ता की स्मार्टनेस और आत्मविश्वास ने आयुष्मान खुराना को भी प्रभावित किया। चर्चा के दौरान दोनों के बीच फिल्मों, शहर की खूबसूरती और संभावित शूटिंग लोकेशन्स को लेकर विचार-विमर्श हुआ। स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रयागराज जैसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शहर को बॉलीवुड से जुड़ते देखना गौरव की बात है। ऐसे में रौनक गुप्ता की यह पहल निश्चित रूप से शहर को फिल्मी नक्शे पर और मजबूती से स्थापित करने में सहायक होगी।

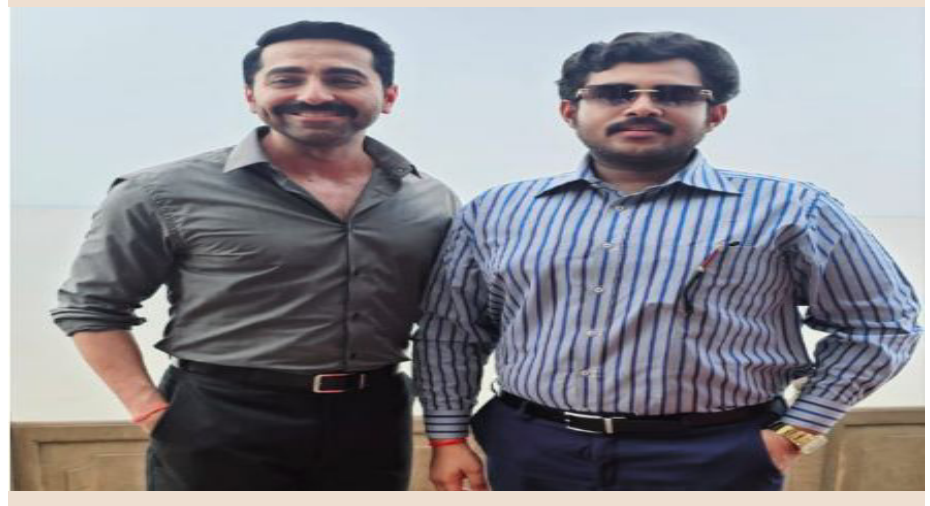

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज से प्रकाशित।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।